पूर्वाचार्यकृत

वेदि व मंदिर प्रतिष्ठा

* संग्राहक *

अष्टांग निमित्तज्ञ, मंत्रविद्या चक्रवर्ती जगद्गुरू ग. गणधराचार्य कुन्थुसागर

प.पू. ग. ग. जगद्गुरु श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव के ७६ वे अमृत महोत्सव
के उपलक्ष्य में प्रकाशित

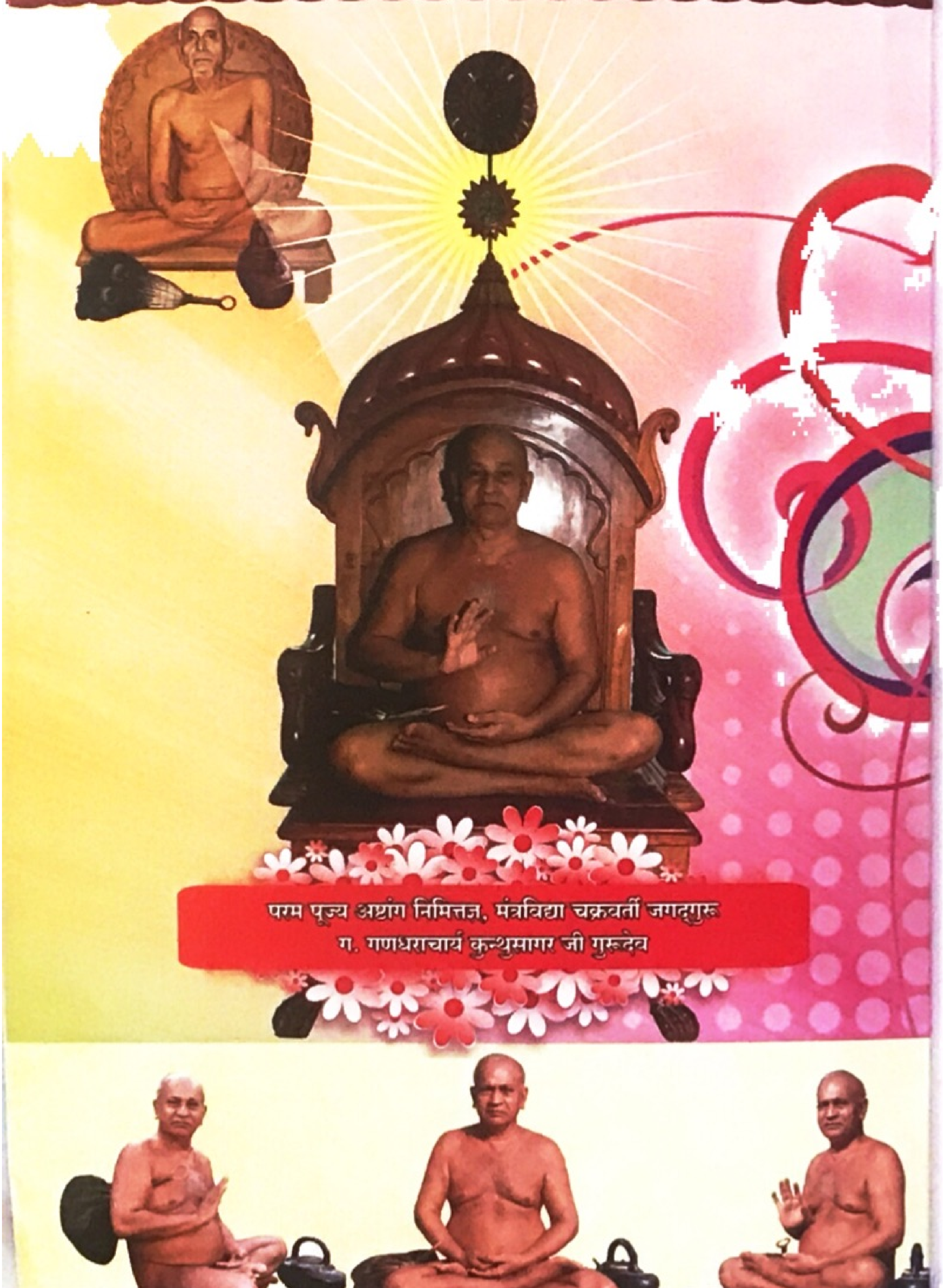

ॐ ह्री धरणेन्द्र पद्मावति सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः

पूर्वाचार्यकृत वेदि व मंदिर प्रतिष्ठा

✻ संग्रह कर्ता ✻

अष्टांग निमितज्ञ, मंत्रविद्या चक्रवर्ती

जगद्गुरू ग.गणधराचार्य कुन्थुसागर

✻ संपादक ✻

मुनिश्री सुयशगुप्त जी

मुनिश्री चंद्रगुप्त जी

✻ शुद्धि व लिपिकर्ता ✻

गणिनी आर्यिका मुक्तीमतिजी माताजी

✻ पुण्यार्जक व प्रकाशक ✻

जयुदीदी व पुनमदीदी

श्री क्षेत्र कुन्थुगिरी

आनन्दवन, जिल्हा कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

* दो शब्द *

यह पुस्तक वेदी व मन्दिर प्रतिष्ठा की है । इसका पुन: प्रकाशन हो रहा इसका संग्रह व सम्पादन मै ही कर रहा हूँ । पहले एक बार यह पुस्तक छप चुकी है। वे सभी पुस्तके समाप्त हो चुकी है इस पुस्तक मे मूल विषय मंगलाष्टक सकलीकरण यज्ञ दिक्षा, विधान, मंडप प्रतिष्ठा विधान, घट यात्रा विधी, पंचामृत अभिषेक व शांतिधारा मृतिका संग्रह विधी अंकुरारोपण विधी, झंडारोहण विधी, धाम संप्रोक्षण, मंदिर व वेदी प्रतिष्ठा, ध्वजारोहण, जिनालय पर कलशारोपण, आदि सारे विधी विधान पूर्वक विधीया दी है इन सब मे ३ दिन का उत्सव रखा जाता है । पहले दिन शांति चक्र विधान सकलीकरण आदि किया जाता है। दुसरे दिन देवागम विधी जल यात्रा मंदिर व वेदि की प्रतिष्ठा की जाती है। तीसरे दिन वेदी पर भगवान विराजमान हवन विधी रथोत्सव विधी करके उत्सव समाप्त कर दिया जाता है। इसलिए इस पुस्तक का नाम वेदि प्रतिष्ठा व मंदिर प्रतिष्ठा रखा है ।

इस प्रतिष्ठा में शांतिमंत्र का १२,५०० जाप करना पडता है। दशांग आहुति करनी पडती है एक ही पुस्तक में मंदिर प्रतिष्ठा व वेदी प्रतिष्ठा मन्दिर पर कलशा रोहण ध्वजा रोहण, शिखर प्रतिष्ठा आदि सारे विधी विधान लिख दिये है। इस एक पुस्तक से प्रतिष्ठाचार्य बहोत कुछ विधी विधान कर सकते है इन सब बातो को ध्यान में रखते हुये मैने यह संग्रह किया है। पहेले पुस्तक छपी थी उसमें अशुद्धियाँ बहुत थी, उन अशुद्धी को निकालने के लिये ग. आर्यिका मुक्ति मति माताजी का प्रयत्न सराहनीय है। उन्होंने पुस्तक का पुरा शुद्धीकरण कर दिया है। उसका जैसा का तैसा प्रकाशन कर रहे है। सब लोग शुद्धता से पढकर लाभ उठाये। माताजी को मेरा आर्शिवाद भक्तों को मेरा आर्शिवाद शुद्धता पूर्वक विधी विधान करने वालो को मेरा आर्शिवाद

इस पुस्तक का प्रकाशन क्षेत्र कुंथुगिरी से कर रहे हैं। पुस्तक की प्राप्ती क्षेत्र से होगी।

– प.पू. जगद्गुरू अष्टांग निमितज्ञ मंत्रविद्या चक्रवर्ती गणाधिपती गणधराचार्य कुन्थुसागर

अनुक्रमणिका

१)	जाप्य मंत्र	५
२)	मंगलाष्टक	६
३)	सकलीकरण	८
४)	महर्षिपर्युपासनम्	१२
५)	स्वस्त्ययन विधानम्	१४
६)	यज्ञदीक्षा	१५
७)	भूमिशोधनम्	१८
८)	पुण्याहवाचन	२०
९)	शांतिधारामंत्र	२३
१०)	दर्भस्थापनम्	२५
११)	मंडपप्रतिष्ठाविधानम्	२७
१२)	कुमुदादि द्वारपालानुकूलमन	२८
१३)	पूजामुखविधि	२९
१४)	पंचामृताभिषेक	३१
१५)	मृत्तिकासंग्रह विधि	३९
१६)	अंकुरारोपण विधि	४६
१७)	झंडारोहण	६१
१८)	धामसंप्रोक्षणम्	६९
१९)	जिनालय पूजा	७०
२०)	प्रतिष्ठा तिलक	७३
२१)	दर्भस्थापन विधि	७६
२२)	८१ घटों से वेदी शुद्धि मंत्र	७७
२३)	दिग्बन्धन	८०
२४)	विनायक यंत्र पूजा	८२

२५)	महर्षि पर्युपासनम्	८६
२६)	जिनेन्द्र प्रतिमा स्थापना मंत्र	९१
२७)	व्रत समापन विधि	९२
२८)	ध्वजा बनाने की विधि	९२
२९)	नयनोन्मीलन मंत्र	९५
३०)	कलशार्चनम	१००
३१)	मंडप वेदी भूषणम्	१०९
३२)	यंत्र, नक्शा चित्र	११०
३३)	मातृका यंत्र	११२
३४)	अंतिम प्रशस्ति	११९

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा मम सर्वोपद्रव शांतिं कुरू कुरू स्वाहा।

(सवालाख या साढे बारह हजार जाप्य करावें ।)

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः ।

(सवालाख जाप्य करें ।)

ॐ ह्रीं अर्हंतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमो नमः ।

(सवालाख या साढे बारह हजार जाप्य करें ।)

ॐ ह्रीं श्री धरणेन्द्र पद्मावतीसहित पार्श्वनाथाय नमः ।

(सवालाख या साढे बारह हजार जाप्य करें ।)

ॐ ह्रीं पद्मावती देव्यै नमः ।

(सवालाख या साढे बारह हजार जाप्य करें ।)

ॐ पंचक्षेत्रपालाय मम सर्वकार्यसिद्धिं कुरू कुरू स्वाहा ।

(सवालाख या साढे बारह हजार जाप्य करें ।)

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः ।(सवालाख जाप्य करें ।)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः (सवा लाख जाप्य)

ॐ पार्श्वनाथाय ह्रीं नमः । (सवा लाख जाप्य)

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः । (सवा लाख जाप्य)

ॐ ह्रीं श्री कलिकुंडाधिपतये नमः । (सवा लाख जाप्य)

ॐ ह्रां ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः स्वाहा ।

(सवालाख या साढे बारह हजार जाप्य)

(इति प्रतिष्ठादि विधि विधानों में करने योग्य जाप्य)

अथ मंगलाष्टकम्

– शार्दूल –

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुट–प्रद्योतरत्नप्रभा,
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु मे (ते) मङ्गलम्।।१।।

सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्रीनगराधिनाथजिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयः श्र्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु मे (ते) मङ्गलम्।।२।।

नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु–प्रतिविष्णु–लाङ्गलधराः सप्तोत्तराः विंशति–
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्ठिपुरुषाः कुर्वन्तु मे (ते) मङ्गलम्।।३।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः,
श्री तीर्थमरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत्त्रिदशाधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु मे (ते) मङ्गलम्।।४।।

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसां वृद्धिङ्गताः पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्गमहानिमित्तकुशला येऽष्टौविधाश्चारणाः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु मे (ते) मङ्गलम्।।५।।

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।

शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु मे (ते) मङ्गलम्।।६।।

ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु मे (ते) मङ्गलम्।।७।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा सम्भावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु मे (ते) मङ्गलम्।।८।।

इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं सौभाग्यसम्पत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थमराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि।।९।।
।। इति श्री मङ्गलाष्टकस्तोत्रम् ।।

– स्रग्धरा –

आकाशं मूर्त्यभावाद धकुलदहनदग्निरूर्वी क्षमाप्त्या ।
नैसंग्याद्वायुरापः प्रगुणसमतया स्वात्मनिष्ठैः सुयज्वा ।।
सोमः सौम्यत्वयोगाद्रविरिति च विदुस्तेजसःसन्निधानात् ।
विश्वात्मा विश्वचक्षुर्वितरतु भवतां मंगलं श्रीजिनेशः ।।९।।

– शार्दूल –

यः कर्त्ता जगतां यमेक पुरूषं भव्याः समाचक्षते ।
येनादेशि हिताहितं मुनिजना यस्मै नमस्कुर्वते ।।
यस्माद्वेदपरंपरा समुदिता श्रीर्यस्य नित्यास्पदा ।
यस्मिन्नैव जगत् स्थितं स जिनपो निःश्रेयसायास्तु वः ।।१०।।

इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं सौभाग्यसम्पत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थमराणामुषः।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि।।११।।

– अनुष्टुप –

मंगलं भगवानर्हन, मंगलं भगवान् जिनः ।
मंगलं प्रथमाचार्यो, मंगलं वृषभेश्वरः ।।१२।।

मंगलं प्रथमं लोके, उत्तमं शरणं जिनं ।
नत्वायमर्हतः पूजाक्रमस्याद्विधिपूर्वकं ।।१३।।

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्व साहूणं ।।
एसो पंच णमोकारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मगंलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलम् ।।

* अथ सकलीकरणम् *

– अनुष्टुप –

दृष्टे मृष्टे भुविन्यस्ते संनिविष्टः सुविष्टरे ।
समीपस्थार्चनाद्रव्यो मौनमाकर्मिकं दधे ।।

। ú d (जमीनपर जल छिडके ।)

ॐ ह्रीं क्ष्वीं आसनं निक्षिपामि स्वाहा । (आसन बिछावें)

ॐ ह्रीं ह्युं ह्युं णिसिहि आसने उपविशामि स्वाहा । (आसनपर बैठे)

ॐ ह्रीं मौनस्थिताय स्वाहा ।

(पूजा के शब्द बोलने के सिवाय अन्य वार्तालाप हेतु मौन रखें ।)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानपि वारिभिः ।

समाहितो यथाम्नायं करोमि सकलीक्रियाम् ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतरजलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा (पूजा के पात्रोंपर जल छिडके ।)

ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं वं मं हं सं तं पं झ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्त तीर्थ पवित्र जलेन शुद्ध पात्रनिक्षिप्त पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा ।

(सामग्री पूजा की शोधन करें अर्थात् जल छिडकें)

अमृतस्नान

गुरूमुद्राग्रभूः झं वं व्हः पोहोभ्योऽमृतं स्वकैः ।
स्रवद्भिः सिच्यमानं स्वं ध्याये मंत्रमिमं पठन् ।।

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय सं हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा

(अमृतप्रोक्षणम्)

(गुरूमुद्रा – पंचगुरूमुद्रा बनाकर उनके अग्रभाग में **'झं वं व्हः पः हः'** इन बीजाक्षरों को लिखकर वह मुद्रा मस्तकपर रखकर मंत्र पढते हुए चिंतन करे कि इन अक्षरों से अमृतप्रवाह निकलता हुआ मेरे सर्वांग को सिंचित कर रहा है । मस्तकपर मंत्रितजल छिडके ।)

– वसंततिलका –

शून्याक्षरादि गुरू पंचपदानकीय ।
स्याद्यंगुलीत्रितय पर्वसुचाग्रभागे ।।
अंगुष्ठ तर्जनिकया क्रमशः कराभ्याम् ।
विन्यस्त हस्तयुगलं मुकुली करोमि ।।

अंगुलियोंमे मंत्र न्यास करना – दोनों हाथोंकी कनिष्ठा आदि अंगुलियोंपर मूलभागसे लेकर अग्रभागपर्यंत तीनों रेखाओंपर क्रमसे **पोरोंपर** मंत्र लिखें ।

अंगन्यास विधि

कनिष्ठा पर	–	ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं स्वाहा ।
अनामिका पर	–	ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा ।

मध्यमा पर - ॐ हूं णमो आइरियाणं स्वाहा ।

तर्जनी पर - ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा ।

अंगूठे पर - ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं स्वाहा ।

इन मंत्रों को चंदन से लिखकर पुनःउपर्युक्त श्लोक बोलते हुए दोनों हाथ मिलावें (मंत्र लिखित दोनों हाथों को मिलाकर दोनों अंगूठे ऊपर करके उनसे आगे कथित मंत्र बोलते हुए उन-उन स्थानों का स्पर्श करें ।)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं स्वाहा । ह्रदये. (दोनों अंगुठों से ह्रदय का स्पर्श करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा । ललाटे (ललाट का)

ॐ हूं णमो आइरियाणं स्वाहा । शिरसो दक्षिणे (सिर के दाहिने)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा । शिरसो अपर भागे (सिर के पीछे)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा । शिरसो वामे (सिर के बायें)

पुनः इन्हीं मंत्रों को बोलते हुए क्रम से स्पर्श करें ।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं स्वाहा । (ललाट का)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा । (सिर के मध्य का)

ॐ हूं णमो आइरियाणं स्वाहा । (सिर के दायें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा । (सिर के पीछे)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा । (सिर के बायें)

तथा वामप्रदेशिन्यां न्यस्य पंचनमस्कृतीः ।

पूर्वादिदिक्षु रक्षार्थं दशस्वपि निवेशयेत् ।।

(बायें हाथ की तर्जनी अंगुली में ''अ सि आ उ सा'' लिखकर उसे सीधी करके नीचे लिखे मंत्रोंसे क्रमशः उन – उन दिशाओं को दिखाता जावे ।)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं । पूर्वस्यां दिशि ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं । अग्नेयां दिशि ।

ॐ हूं णमो आइरियाणं । दक्षिणस्यां ।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं । नैऋत्यां ।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं । पश्चिमायां ।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं । वायव्यां ।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं । उत्तरस्यां ।
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं । ऐशान्यां ।
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं । अधरस्यां ।
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं । ऊर्ध्वायां ।

इन दसों दिशाओं में अंगुली दिखाते हुए मंत्र बोलते हुए दश दिशाओं का बंधन करें ।

(इस तरह सकलीकरणसे अपने शरीर को कवच पहनाकर संपूर्ण इष्ट – पूजादि मंत्रादि क्रियाओं को करते हुए पूजक किसी भी विघ्न से बाधित नहीं होता है ।

। इति दिग्बंधनम् ।

परमात्म ध्यान मंत्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं अर्हद्भ्यो नमः ।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धेभ्यो नमः ।
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं आचार्येभ्यो नमः ।
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं उपाध्यायेभ्यो नमः ।
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं लोके सर्वसाधुभ्यो नमः ।

(इस मंत्र का २१ बार जाप दे)

– वंशस्थ –

जिनेन्द्र पादार्चित सिद्ध शेषया ।
सिद्धार्थ दूर्वायव चंदनाक्षतान् ।।
उपासकानामपि मुर्ध्नि निक्षिपन् ।
करोमि रक्षां मम शांतिकानाम् ।।

ओं नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ।

इस मंत्र को पढकर पीली (सफेद) सरसों, दुर्वा, अक्षत, पुष्पों को सात बार मंत्रित कर सभी पूजक आदि के मस्तक पर क्षेपण करें ।

ओं हूं फट् किरटिं घातय घातय, पर विघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्त्र खंडान् कुरू कुरू पर विद्यां छिंधि छिंधि, पर मंत्राण भिंधि भिंधि क्षः फट् स्वाहा ।

(इस मंत्र से सफेद सरसों मंत्रित कर सर्व विघ्नों को उपशमित करने के लिए सर्व दिशाओं में सर्वत्र क्षेपण करें ।)

। इति सकलीकरणविधानम् ।

– वसंत –

इत्थं सदैव सकलीकरणंयथावत् ।
संभावयत्ययमशेषमलंघ्यशक्तिः ।।
भूतोरगादि विष किल्विष दुःखमुग्रं ।
निर्जित्य निश्चयसुखान्यनुभूयतेऽसौ ।।

।। अथमहर्षिपर्युपासनम् ।।

इन्द्रवज्रा छंद

ये ये ऽ नगाराऋषयो यतींद्रा मुनीश्वरा भव्यभवद्व्यतीताः ।
तेषां समेषां पदपंकजानि, संपूजयामो गुण शील सिद्धये ।।

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र पवित्रतरगात्रचतुरशीतिलक्ष गुण गणधर चरणाः ! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।ओं ह्रीं सम्यग्.... अत्र तिष्ठत-तिष्ठत ठः ठः ओं ह्रीं सम्यग्.... ! मम रत्नत्रयशुद्धिं कुरूत कुरूत । अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

– अनुष्टप –

सुगंधशीतलैः स्वच्छैः स्वादुभिर्विमलैर्जलैः ।
सार्धद्वीपद्वयातीत भवद् भव्य यतीन् यजे ।।

ओं ह्रीं गणधरचरणेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

सारकर्पूरकाश्मीर – कलितैश्चंदनद्रवैः ।
सार्धद्वीपद्वयातीत – भवद्भव्ययतीन् यजे ।।

ओं ह्रीं गणधरचरणेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।।२।।

अक्षतैरक्षतैः सूक्ष्मैर्वलक्षैः ऋक्षसन्निभैः ।
सार्धद्वीपद्वयातीत भवद् भव्ययतीन् यजे ।।
ओं ह्रीं गणधर चरणेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।।३।।
पुष्पैप्रसर दामोदाहूत पुष्पंधयावृतैः ।
सार्ध द्वीप द्वयातीत भवदभव्य यतीन् यजे ।।
ओं ह्रीं गणधर चरणेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।
हव्यैर्नव्यघृतापूप, पायसव्यंजनान्वितैः ।
सार्ध द्वीप द्वयातीत, भवद् भव्य यतीन् यजे ।।
ओं ह्रीं गणधर चरणेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।
कर्पूरप्रभवैर्दीपैर्दीप्त्या दीपितदिङ्मुखैः ।
सार्धद्वीप द्वयातीत, भवद भव्य यतीन यजे ।।
ओं ह्रीं गणधरचरणेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।६।।
दशांग धूपसद् धूमैर्दशाशापूर्ण सौरभैः ।
सार्धद्वीपद्वयातीत भवद् भव्य यतीन् यजे ।
ओं ह्रीं गणधरचरणेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।
चोचमोचाम्रजंबीर फलपूगादिसत्फलैः ।
सार्ध द्वीप द्वयातीत भवद् भव्य यतीन् यजे ।।
ओं ह्रीं गणधरचरणेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।८।।

– मालिनी –

गुणमणिगणसिंधून – भव्यलोकैकबंधून् ।
प्रकटितजिनमार्ग ध्वस्तमिथ्यात्त्वमार्गान् ।।
परिचितनिजतत्त्वान् पालिताशेषसत्त्वान् ।
शमरसचित चंद्रानर्घ्ययामो मुनींद्रान् ।।
ओं ह्रीं गणधरचरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।९।।
शान्तये शान्तिधारा । दिव्यः पुष्पांजलिः ।।

अथ स्तुतिः

ये सर्वतीर्थप्रभवा गणेन्द्राः सप्तर्ध्दयो ज्ञानचतुष्टयाढयाः ।।
तेषां पदाब्जानि जगद्धितानां वचोमनोमूर्धसु धाययामः ।।१।।
तपोबलाक्षीणरसौषधर्ध्दीन्विज्ञानऋद्धीनपिविक्रियर्द्धीन् ।
सप्तर्द्धियुक्तानखिलानृषीन्द्रान स्मरामिवंदे प्रणमामिनित्यं ।।२।।
सर्वेषु तीर्थेषु तदंतरेषु सप्तर्षयो ये महिता बभूवुः ।
भवांबुधेः पारमिताः कृतार्था भवंतु नस्ते मुनयः प्रसन्नाः ।।३।।
ये केवलीन्द्राः श्रुतकेवलीन्द्राः ये शिक्षकास्तुर्यतृतीयबोधाः ।
सविक्रियाये वर वादिनश्च, सप्तर्षिसंज्ञानिह तान् प्रवंदे ।।४।।
प्रमत्तमुख्येषु पदेषु सार्धद्वीपद्वये ये युगपद् भवंति ।
उत्कर्षतस्तान्नवकोटीसंख्यान् वंदे त्रिसंख्यारहितान्मुनींद्रान् ।।५।।

अथ स्वस्त्ययन विधानम्

श्रीपंचकल्याणमहार्हणार्हा वागात्मभाग्यातिशयैरूपेताः ।
तीर्थंकराः केवलिनश्चशेषाः स्वस्ति क्रियासुर्जगतेहिता नः ।।१।।
ये शुद्धमूलोत्तरसद्‌गुणानामाधार भावादनगारसंज्ञाः ।
निर्ग्रन्थवर्या निरवद्यचर्याः स्वस्ति क्रियासुर्जगतेहिता नः ।।२।।
ये चाणिमाद्यष्टसुविक्रियाढयास्तथाक्षयावासमहानसाश्च ।
राजर्षयस्तेसुरराजपूज्याः स्वस्ति क्रियासुर्जगतेहिता नः ।।३।।
ये कोष्ठबुद्धयादि चतुर्विधाद्धि- रवापुरामर्षमहौषधद्धिः ।
ब्रह्मर्षयो ब्रम्हाणि तत्परास्तेः स्वस्ति क्रियासुर्जगतेहिता नः ।।४।।
जलादिनानाविधचारणा ये ये चारणाग्न्यंबरचारणाश्च ।
देवर्षयस्ते नतदेववृन्दाः स्वस्ति क्रियासुर्जगतेहिता नः ।।५।।
सालोकलोकोज्वलनैकतानं प्राप्ताः परंज्योतिरनंतबोधम् ।
सर्वषिवंद्याः परमर्षयस्ते स्वस्ति क्रियासुर्जगतेहिता नः ।।६।।
श्रेणिद्वयारोहणसावधानाः कर्मोपशांतिक्षपण प्रवीणाः ।
ये ते समस्ता मुनयो महान्तः स्वस्ति क्रियासुर्जगतेहिता नः ।।७।।

समग्रमध्यक्षमिताश्चदेश–प्रत्यक्षमत्यक्षसुखानुरक्ता: ।
मुनीश्वरास्ते जगदेकमान्या: स्वस्ति क्रियासुर्जगतेहिता न: ।।८।।
उग्रं च दीप्तं च तपोभितप्तं महच्च घोरं च तरां चरन्त: ।
तपोधना निर्वृतिसाधनोक्ता: स्वस्ति क्रियासुर्जगतेहिता न: ।।९।।
मनोवच:काय बल प्रकृष्टा: स्पष्टीकृताष्टांगमहानिमित्ता: ।
क्षीरामृता स्त्राविमुखा मुनीन्द्रा: स्वस्ति क्रियासुर्जगतेहिता न: ।।१०।।
प्रत्येक बुद्ध प्रमखा मुनीन्द्रा: शेषाश्च ये ये विविधर्द्धि युक्ता: ।
सर्वेऽपि ते सर्वजनीनवृत्ता: स्वस्ति क्रियासुर्जगतेहिता न: ।।११।।

– शार्दूल –

शापानुग्रह शक्तिताद्यतिशयैरूच्चावचैरंचिता: ।
ये सर्वे परमर्षयो भगवतां तेषां गुणस्तोत्रत: ।।
एतत्स्वस्त्ययनादपैति सकल: संक्लेशभाव: शुभ: ।
भाव: स्यात् सुकृतंच तच्छुमविधेरादाविदं श्रेयसे ।।१२।।

इति स्वस्त्ययनं मन: प्रसादनविधानम्

अथ यज्ञदीक्षाविधानम्

इन्द्र प्रतिष्ठाविधि

– अनुष्टुप –

न्यसार्हद्द्रिष्टरे धृत्वानादिमंत्राभिमंत्रितम् ।
प्रसाधनं गुरोरग्रेयज्ञदीक्षामुपादधे ।।१।।

ओं णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आइरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोण सव्व साहूणं ।

चत्तारि मंगलं – अरिहंत मंगलं । सिद्ध मंगलम् । साहू मंगलं । केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलम् ।

चत्तारि लोगुत्तमा – अरिहंत लोगुत्तमा । सिद्ध लोगुत्तमा । साहू लोगुत्तमा । केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि – अरिहंत सरणं पव्वज्जामि सिद्ध सरणं पव्वज्जामि । साहू सरण पव्वज्जामि । केवलि पण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।

ओं ह्रीं क्रों शांतिं कुरू कुरू स्वाहा । (अयमनादिसिद्ध मंत्रः)

(चंदन माला मुकुट आदि प्रसाधन वस्तुऐं एक पात्र में लेकर भगवान के सन्मुख रखना । पुनः उपरि आनादिसिद्धमंत्र बोलकर मंत्रित करके आगे के श्लोकों – मंत्रों के अनुसार उन – उन वस्तुओंको ग्रहण करना । या मंत्रित चंदन को उन २ वस्तुओं को लगाना)

– मालिनी –

जिनमतमिव सूक्ष्मं यत्सुखस्पर्शदक्षं ।
क्षपितविविधबाधं साध्वलंकारमुख्यम ।।
शुचितरमपदोषं सद्गुण तद्दधेऽहं ।
परमजिनमखेऽस्मिन सांतरीयोत्तरीयम् ।।२।।

ओं ह्रीं श्वेतवर्णे सर्वोपद्रवहारिणी सर्वजनमनोरंजिनी परिधानोत्तरीये धारणीये हं हं झं झं वं वं सं सं तं तं पं पं परिधानोत्तरीयं धारयामि स्वाहा ।

(वस्त्रोंको स्पर्श करना)

पवित्रभूमिप्रभवैः पवित्रैः पवित्रमुद्रासहितं सुदृब्धम् ।
पवित्रताकृन्मम सव्यहस्ते त्वनामिकायां निदधे पवित्रम ।।३।।

ओं ह्रीं पवित्र मुद्रिकां धारयामि स्वाहा

(दाहिने हाथ की अनामिका में पवित्र (अंगूठी) धारण करें ।)

सुशीतलेनोक्तवदर्हदीशो यशोवदुच्चैर्विशदेन तस्य
तदंगवन्मंगलगंधभाजा समालभेऽगंमम चंदनेन

श्री चंदनानुलेपनं (अपने शरीरपर गंध लगावें)

चेतश्चमत्कारकरी जनानां गंधादिना या विदुषां विशेषात् ।
स्वर्भोगमालावहदिव्यशक्त्या मालां दधे मूर्ध्नि जिनार्चितां तां ।।५।।

स्रग्धारणं (कंठ में माला धारण करें)

दृग्बोधचारित्रगुणत्रयेण धृत्वा त्रिधौपासकभावसूत्रम् ।

द्रव्यं च सूत्रं त्रिगुणं समुक्ता–फलं तदारोपण मुद्वहामि ।।६।।

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्राय स्वाहा । (यज्ञोपवीत धारण करें)

जिनेश्वराज्ञाभरवद्विशिष्टैर्धार्यं महाहार्यगुणौघरत्नं ।

मूर्ध्ना वहेयं मुकुटं महान्तं चंचत्प्रभामंडित कुंडलाभ्याम् ।।७।।

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनाय स्वाहा (कुंडल और मुकुट धारण करें)

आसन्नभव्ये जिनभक्ति मुख्या गुणा यथायोग्यमुपव्रजन्ति ।

तथैव यस्मिन् मणयोमहान्तः करे ममैतत्कटकं करोमि ।।८।।

ओं ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा । (कंकण प्रणयनं–कंकण धारण करें)

उन्मुद्रिताशेषविनेयपद्मश्रीकेवलार्कोदयपूर्वशैलम् ।

यष्टुं जिनं जीवदयासमुद्रं मुद्रांदधे चारूमनामिकायाम् ।।९।।

ओं ह्रीं सम्यक् चारित्राय स्वाहा । (मुद्रिका धारण करना)

दृग्बोधदेशव्रतरूपरत्नत्रय भवेन्मे कलितोपवासम् (कलितैक भक्तं)।

आकर्मिकाब्रह्मनिवृत्तियुक्तं स्याद् यज्ञदीक्षाविधिना विशिष्टम् ।।१०।।

(अर्हद्देवयज्ञदीक्षांगीकार :- विधानपर्यंत उपवास या एकभुक्ति आदि शक्तितः तथा ब्रह्मचर्य ग्रहण करके पूजन हेतु दीक्षा स्वीकार करें ।

– वसंत –

रत्नत्रयांगमुपवीतमुरस्यथांगं ।

देशव्रतस्य वसु कंकणमत्र हस्ते ।।

ब्रह्मव्रतांगमधुना स्वकटौच मौजीं ।

धृत्वारभे जिनमखं मखदीक्षितोऽहम् ।।११।।

दीक्षा चिह्नोद्वहनम् (कमर में कंदोरा और दाहिने हाथ में सूत अर्थात कलावे का कंकण बांधना तथा स्त्रियोंके बायें हाथ में बांधना ।)

ओं वज्राधिपतये आं हां अः ऐं ह्रौं ह्रः श्रूं ह्रूं क्षः इंद्राय संवौषट् ।

(इस मंत्र को २१ बार मनमें बोलते हुए 'मै इंद्र हूं' ऐसी भावना करना । अथवा विधानाचार्य इस मंत्र से २१ बार पूजक के मस्तकपर पुष्प क्षेपण

कर 'इंद्र' का न्यास करें ।)

(इति यज्ञदीक्षाविधानम्) ।

अथ भूमिशोधनम्

(स्रग्धरा)

घंटाटंकारवीणाक्कणितमुरजधां-धां-क्रियाकाहलाच्छें-
च्छेंकारोदारभेरीपट हथल - धलंकारसंभूतघोषे ।
आक्रम्याशेषकाष्ठातटमथ झटिति प्रोच्चटत्युद्भटेऽभ्रम ।
शिष्टाभीष्टार्हदिष्टिप्रमुख इह लतांतांजलिं प्रोत्क्षिपामः ।।१।।

ओं ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा ।

(वाद्यघोषपूर्वक पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

ओं समस्ताभ्युदयसुखसंघातलंघनजंघालसमुल्लासनानंतसुख नवासनिः श्रेयसनिवासनिसर्गमार्गप्रवचनप्रकाशस्य सहजात्मगुण समाजोपघात प्रसिद्धानादि संबंध घातिनिचयनिर्मूलक त्रिकाल गोचरानंतपर्यायांणां चराचर द्रव्य विषय केवल ज्ञानार्क किरण परिपूरितसकल लोकपरमात्मपद तिष्ठाधिष्ठित भागवदर्हद् भट्टारकस्य नागयक्षामर द्वात्रिंशन्मिथुनकरवालित चतुः षष्टिचामराद्यष्टमहाप्रातिहार्य विशिष्टस्य । विनीलकुंतल कुलिशदशन प्रवालाधरपल्लवोपमानकरचरण समुल्लसितस्य । श्रीश्रुतदेवी सर्वाह्नासनत्कुमारयक्ष प्रतिमोपलक्षित पीठोपकंठस्य। प्रत्येकाष्टशत भृंगारादिमंगल द्रव्याष्टगर्भगर्भावास मध्यममध्यासीनस्य । प्रेक्ष्यमाणवदा भाष्यमाणवदा लक्ष्य माणमणिमय प्रतिबिंबकदंबस्य निवासी भूतजतात्म भूतयसमाराधनीय भावमापनिपद्यमानस्य तमः समूल समुत्पाटन पटुतरावलेपलिप्सागत गभस्तिमालिमंडलायमान हट द्धाट कीयतटपेटकोपघटित चित्तचमत्कार स्य चकचकायमान नानविधोपकरणनिचितनीलतलनिर्जित ज्योतिर्गणांकित गगणांगणानाम् समुत्तुंग सुवर्णभित्तिभागावलंब मानमणिमाला भूषितमेरूगिरी पार्श्वशोभातिशयस्य । विचित्र निर्मापणवदनाभिषेक नर्तनसंगीतावलोकनादिमंडपाभिमंडित चैत्य महीमहितस्य । कुंजरातिकुंजरा दिदशविध ध्वजराजिताद्वितीय शालांतर ध्वज धरावराजितस्य । चतुर्दिगशोक

सप्तच्छद चंपकाम्र चतुर्वनांचिततृतीयबहि: शालांतर ध्वज धरावराजितस्य । चतुर्दिग गताशोक सप्तच्छदचंपकाम्र चतुर्वनांचिततृतीय बहि: शालांतर वनावनीविनूतस्य । चतुर्वीथीपर्यंतगतमहामानस्तंभाहित प्रतितीर्थजिनमानस्तंभस्य। साक्षादकृत्रिमचैत्यालयलक्ष्मीमात्मसात् कुर्वतश्चैत्यालयस्य विस्तार विशेष शालितयातदीयांगणोपमाने पुष्पांजलि:।

ओं ह्रीं परमब्रह्मणे नमो नम: । स्वस्ति स्वस्ति, जीव जीव, नंद नंद, वर्धस्व वर्धस्व, विजयस्व विजयस्व, अनुशाधि अनुशाधि पुनीही पुनीही पुण्याहं पुण्याहं मांगल्य मांगल्यं । पुष्पाञ्जलिं । सोदकानि पुष्पाणि क्षिपामि स्वाहा ।

क्षेत्रं मखेऽस्मिन् परिपालयंतं विघ्नानशेषानपसारयन्तम् ।
वैश्वानराशापरिकल्पितेन श्री क्षेत्रपालं वलिना धिनोमि ।।२।।

ओं ह्रीं क्षेत्रपालदेव ! अत्र आगच्छ २ संवौषट् स्वाहा इत्यादि ।

इति क्षेत्रपालार्चनं । आग्नेय दिशा में क्षेत्रपाल को अर्घ चढाना ।

सर्वेषु वास्तुषु सदा निवसन्तमेनं ।
श्री वास्तुदेव मखिलस्य कृतोपकारं ।।
प्रागेव वास्तुमिह कल्पितयज्ञभाग –
स्यैशानकोणदिशि पूजनया धिनोमि ।।३।।

ओं ह्रीं वास्तुदेवाय इदं अर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं दीपं चरू फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागंच यजामहे प्रतिगृह्यतां २ ।

(ईशान दिशा में अर्घ चढावे)

विहारकाले जगदीश्वराणामवाप्त सेवार्थकृतापदानं ।
हुत्वार्चितो वायुकुमारदेव ! त्वं वायुना शोधय याग भूमिम् ।।४।।

ओं ह्रीं वायुकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय इदं अर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरू दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागंच यजामहे प्रतिगृह्यतां –२ । महीं पूतां कुरू कुरू हुं फट् स्वाहा । षड्दर्भपूलेन भूमिं संमार्जयेत् ।

विहारकाले जगदीश्वराणामवाप्त सेवार्थकृतापदानं ।
हुत्वार्चितो मेघकुमारदेव ! त्वं वायुना शोधय याग भूमिम् ।।५।।

ओं ह्रीं मेघकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय इदं अर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागंच यजामहे प्रतिगृह्यतां २। धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं ठं यक्ष फट् स्वाहा । षड् दर्भपूलोपात्तजलेन भूमिं सिंचेत ।

गर्भान्वयादौ महितद्विजेन्द्रैर्निर्वाणपूजासु कृतापदानं ।

हुत्वार्चितो वह्निकुमारदेव ! त्वं ज्वालयाशोधय यागभूमिम् ।।६।।

ओं ह्रीं अग्निकुमाराय इदं अर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागंच यजामहे प्रतिगृह्यतां २ । भूमिं ज्वालय ज्वालय अं हं सं वं झं ठं यक्ष फट् स्वाहा । ज्वलद्दर्भपूलानलेन भूमिं ज्वालयेत् । . (दर्भपूला में कपूर रखकर जलावें)

प्राचीमैशानीं चांतरा वातकुमारादि स्थापनं ।

(पूर्व दिशा और ईशान दिशा के अंतराल में वायुकुमारादि की स्थापना करें ।)

तुष्टा अमी षष्टिसहस्त्रनागा, भवन्त्ववार्या युवि कामचाराः

यज्ञावनीशानदिशाप्रदत्त – सुधोपमानांजलिपूर्णवार्भिः ।।७।।

ओं ह्रीं क्रों षष्टिसहस्रसंखेभ्यो नागेभ्यः स्वाहा । इदं अर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूँ दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागंच यजामहे प्रतिगृह्यतां २ । नागतर्पणार्यमैशान्यां दिशि जलांजलिंक्षिपेत् ।

(नागों के संतर्पण हेतु ईशान दिशा में जलांजलि देवें ।) इति भूमिशोधनम्

अथ पुण्याहवाचना

गद्य – श्रीमदर्हत्परमेश्वरोपदिष्टशिष्टेष्टदयामूलधर्मप्रभावकयष्ट्र्याजक प्रभृति भव्य जनानां सद्धर्मश्रीबला युरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु । अथ दयार्द्रवृत्तित्वलक्षण न्यायनिष्ठ श्रुतिस्मृतिपुरावृत्तमंत्रक्रियादेवतालिंग कामान्नविषय दशशुद्धिप्रतिष्ठाधिष्ठिते, श्रीमज्जिनशासने भगवतो महति महाविर वर्धमानतीर्थकरस्य धर्मतीर्थे, तत्साक्षात्समाराधक सकलगुणगरिमगौतममहर्षि चंदनार्यिका श्रेणिकमहामंडलेश्वर चेलिनीप्रभृतिऋष्यार्यिका श्रावक श्राविका भेदचतुर्विधसंघपरंपरातिश्लाघनीय गुणसंघ श्रीमूलसंघे, भूर्भवः स्वर्भेदात् त्रैविध्यमात्मसात् कुर्वाणस्य लोकस्य

मध्यमध्यासीने मध्यमलोके, तन्मध्यवर्तिनो लक्षयोजनोदयस्य सुदर्शनमेरोर्दक्षिणभागे, षड्विंशपंचशतयोजनैकोन विंशतिषड्भागविस्तारानादि सिद्ध भरतव्यपदेश भरतक्षेत्रे विजयार्धगंगा सिन्धु प्रवृत्तिविहितषट् खंडमंडिते त्रिषष्टि शलाका पुरूषप्रभृत्यार्यजनसमुत्पत्तिपवित्रितार्यखंडे, तत्रावस्थितायोध्यां दक्षिणेन स्थिते पशु धान्यहिरण्यकुप्यादिसमृद्धिवर्णनीयवर्णाश्रमाकीर्ण कर्णाटक देशे, धार्मिक समाजसततविधीयमानविविध पुण्योत्सव निकराकरेऽस्मिन्नगरे क्षीरद्रुमादिभि: समुचितोत्सेधव्यासायामविनिर्मितविविध धालंकारमंडित यज्ञमंडपे, अनाद्यनन्त कालसंतानमध्य पतितासंख्यातोत्सर्पिण्यवसर्पिणीसमनंतरोपनतदशकोटाकोटी सागरो पमप्रमितहुंडावसर्पिणीकाले प्रवर्तमाने तत्र सविंशतिशतायु:सप्त हस्तोत्सेधरूक्ष वर्णशरीर प्रजाप्रभृतिवर्तनालक्षणैकविंशतिसहस्त्रवर्ष प्रमितिदु:षमनाम्नि पंचमे कलियुगे प्रवर्तमाने, तत्र शालिवाहनशक काले.... वर्षसंमिते सति प्रवर्तमान.... नाम संवत्सरे.....अयने ऋतौ.... मासे....पक्षे... तिथौ....वार युक्तायां तिथिवार नक्षत्र योगकरणाख्यपंचांगतिथिसंशुद्धि निर्दोषायत्तलग्नशुद्धिवि लग्नहोराद्रेषकानन वांशद्वादशांशाभिधानषड्वर्गशुद्धिविविधभेद प्रभेद गोचरशुद्धिरूदर्क फलावगमनिमित्त शुद्धिरित्येवंविधपंचशुद्धि-समन्वित-प्रशस्त मुहूर्तयुक्तायां, वीतयोषाभूषादि संगत्वाद्वीतरागत्वं,निरस्तनिस्त्रिंशत्वादपास्तद्वेषत्वं,तदुभयनिमित्तनिश्चल ध्यानैकतान त्वं, तत्कारणकर्मक्षयसर्वज्ञत्वादि गुणान् साक्षात्कथयंत्या इव भगवज्जिनार्चाया: जिनप्रतिमाया:सन्निधौ सकलसमयसमाराध्य निरवद्यविद्यारूपवाग्देवतासन्निधौ, चतुरजनचेतश्चमत्कारिचतुरनुयोगाधीतिबोधाचरण प्रचारणपरायणाचार्यवर्यस्य सन्निधौ, निरस्तविषयाभिलाषनिरारंभनि:परिग्रहनितांतज्ञान ध्याननिरतमुमुक्षुवर्गसन्निधौ, निरवद्यस्याद्वादविद्याविदग्धपदवाक्य प्रमाणज्ञ विद्वज्जनसन्निधौ, न्याय विहित प्रजापालनमतिपालनकुलपालनात्मपालननीतिर्पालनसमंजसत्व लक्षणक्षात्र धर्मराजद्राजादिसन्निधौ, आर्यषट्कर्मगर्भान्वयादि कर्मकर्मठ धर्म क्रिया कुतूहलत्रैवर्णिकसमाजसन्निधौ,न्यायार्जितरक्षितवद्धितार्थं पात्रविनियोगेन सकलं कुर्वन्त: सर्वहितदयामूलमर्हच्छासनं महामहादिभि: प्रभाव यतो धार्मिकस्य सन्निधौ, तेन विधाप्यमानजिनयज्ञमहोत्सवे, स्नानानुस्नान लेपभूषण वसनास्य शरीरोपस्कार

शुद्धिपंचकं शोषणदहन भस्मी करणामृतप्लावननिजात्मध्यानाह्वयात्मशुद्धिपंचकंच प्राप्ता एये वयं पंचोपचारादिक्रिया शुद्धिसहितं, औत्सर्गिक विशेष विषयाशेषमंत्र शुद्धिसहितं,केवलि दशपूर्व धरैकादशांगधर प्रथमांग धरसूत्रकारभाष्यकार प्रभृत्याचार्य परंपरायाताजनसंहिताशास्त्र तदुपदेश तत्कर्मप्रयोगानुक्रमायातेन विधिना विधीयमान प्रतिष्ठाकर्मणि सकलाभ्युदयनिः श्रेयससिद्धयर्थं, शुद्धयर्थं, शान्त्यर्थं, शान्ति होमविधिं विधास्यामः तत्कर्मणः पुण्याहार्थं ऋद्धयर्थंस्वस्त्यर्थं पुण्याहवाचनां कर्तुमुत्सहामहे। इति संकल्प्य तदङ्गत्वेन कर्मणः पुण्याहवाचनां कुर्यात ।।

तत्रैव प्रयोगः

एक पाटे या चौकीपर एक सेर श्वेत चावल फैलाकर स्वस्तिक बनावें । उस पर 'ह्रीं' बीजाक्षर लिखें । उसके ऊपर तीर्थ जल से भरे कलश को स्थापित करें। इसको गंध अक्षतसे चर्चित कर पत्ते लगाकर पुष्प रखें और श्वेत सूत्र से वेष्टित कर दर्पण लगावें, नवरत्न डालें । इसमें मंत्रित जल भरें । पुनः इस कलश को हाथ में लेकर आगे के पुण्याहं मंत्रों का उच्चारण करते हुए सर्वत्र जल छिडकें।

गद्य – शालीनां प्रस्थं प्रस्तीर्य तत्र ह्रींकारं वेष्टित स्वस्तिक यंत्रं समालिख्य, तदुपरि तीर्थजलपरिपूरितगंधाक्षतपुष्पाद्यर्चितपल्लव दर्पण शोभित दर्भ पल्लवांचिततंडुलपरिपूरितपात्र पिहित पंचरत्न सुवर्ण गर्भितसच्छवेतसूत्रावृत चंदनपंकमग्नशाल्यक्षतोपलक्षित – कंठ लग्न नव वस्त्र पुष्पदाम शोभित शुभ लक्षण लक्षित सनालकलशं संस्थाप्य तत्कलशजलं यष्ट्र प्रभृतिसर्वजनेषु सर्वशान्ति मंत्र मुच्चारयन् सिंचेत् ।

ओं ह्रीं स्वस्तये कलशस्थापनं करोमि स्वाहा ।

ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते समस्त गंगासिन्ध्वादितीर्थ नदीजलं भवतु स्वाहा ।

अभ्यर्च्य कलशं तोयप्रवाहै श्चंदनैरहं ।
अक्षतैः कुसुमैरन्नैर्दीप धूप फलैरपि ।।

ओं ह्रीं नेत्राय संवौष्ट् कलशार्चनं करोमि स्वाहा ।

पुण्याहवाचन

ओं पुण्याहं -पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्त: सर्वज्ञा: सर्वदर्शिन: त्रिलोकनाथा: त्रिलोकप्रद्योतनकरा: वृषभाऽजितसंभवाभिनंदन-सुमति पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-पुष्पदंत-शीतल-श्रेयो वासुपूज्य-विमल अनंत-धर्म-शांति-कुंथु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-श्रीवर्धमाना: शांता: शांतिकरा: सकलकर्मरिपुविजयकांतारदुर्गविषमेषु रक्षंतु नो जिनेन्द्रा: सर्वविदश्च । श्री न्ही धृति कीर्ति कान्ति बुद्धि लक्ष्मी मेधाविन्य: सेवा कृषि वाणिज्य वाद्यलेख्यमंत्रसाधन चूर्णि प्रयोगस्थानगमन सिद्धिसाधनाया प्रतिहत शक्तयो भवन्तु नो विद्यादेवता: ।। नित्यमर्हत्सिद्धा चार्योपाध्यायसर्वसाधवश्च भगवंतो न: प्रीयन्तां प्रीयन्तां ।। आदित्य सोमांगारबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चर राहु केतु ग्रहाश्च न: प्रीयन्तां प्रीयन्तां ।। तिथिकरण मुहूर्त लग्नदेवता: इह चान्यग्राम नगरादिषु अपि वास्तु देवता इच ता: सर्वा गुरूभक्ता अक्षीणकोष कोष्ठागारा भवेयुर्दान तपोवीर्यं नित्यमेवास्तु न: प्रीयन्तां प्रीयन्तां ।। मातृ पितृ भ्रातृसुतसुह्रतस्वजनसंबंधिबंधु वर्गसहितानां धनधान्यैश्वर्यद्युति बल यशोवृद्धिरस्तु । प्रमोदोऽस्तु । शांतिर्भवतु । पुष्टिर्भवतु । सिद्धि र्भवतु । काममांगल्योत्सवा:सन्तु । शाम्यन्तु घोराणि । शाम्यन्तु पापानि । पुण्यं वर्धताम्। धर्मो वर्धताम् श्यायुषी वर्धेताम् । कुलं गोत्रं चाभिवर्द्धताम् । स्वस्ति भद्रं चास्तु न:। हतास्ते परिपंथिन: । शत्रव: शमं यान्तु । निष्प्रतिघमस्तु । शिवमतुलमस्तु । सिद्धा: सिद्धिं प्रयच्छन्तु न: स्वाहा ।

ओं कर्मण: पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु इति प्रार्थयेत् (ऐसा विद्वान बोले) प्रार्थितविप्रा: पुण्याहं कर्मणोऽस्तु इति ब्रूयु: ।। अनेन प्रकारेण । ॐ कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु स्वस्ति कर्मणेऽस्तु च । कर्मऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु कर्मऋद्धिरस्तु। (एतद् वाक्य त्रयोच्चारणान्ते त्रिवार पात्रांतर पातित पूर्णकलश जलेन सभां शान्तिमन्त्रेण सिंचेत् ।।)

अथ शांतिमंत्र:

(पुन: इस शांतिमंत्र को बोलते हुए सभी पर जल सिंचन करें ।)

अथ निरतिशयनिजमहिमभरसमसमानात्मीयचरण परिचरणचतुर चतुर्णि

कायामरनिकुरूंबशुंभत्कोटीरकोटीतटघटित स्फुटतरप्रभाभासुरानेकनूत्न - रत्ननिकराकर दिवाकर शताधिकातिगंभीरविपुलप्रभामंडल क्षीरोददिंडीरपिंडाय मानचतु:षष्टि चामरप्रभृतिपरिलक्ष्यमाणाप्रतिपक्ष बहिरंगमहालक्ष्मीवान् । अशेषदोषावरणविगमसम नंतरसमुद्भूतसकल लोकालोक-निरंतर परिपूर्णसर्वद्रव्यपर्यायविषयक्रमकरण व्यवधाना तिवर्तिकेवलाख्यपरंज्योति: स्वरूपांतरंगिकाक्षयमहालक्ष्मीवान् । अभ्यर्हिताखिलाभ्युदयानि: श्रेयससंपादक: स्याद्वादन्यायनायक: परमाप्तो भगवानर्हद्भट्टारक: । मातृपितृभ्रातृसुहृत स्वजनसंबंधिबंधुवर्गसहितयजमानस्य सकल कल्याणं करोतु। शांतिं कान्तिमाविष्करोतु प्रादुष्करोतु।। सौभाग्यमारोग्यमात -नोतु संतनोतु ।। संपदमापदं संपादयतु संविदारयतु ।। अयशोयशो निष्कासयतु विकाशयतु ।। एनो मतिमवसादयतु प्रसादयतु ।। सुखमसुखं तनोतु धुनोतु ।। अनभिमत मभिमतं वारयतु पूरयतु ।। श्रियमायु: श्लाघयतु द्राघयतु ।। पुण्यं पापं व्याजृंभयतु स्तंभयतु ।। कुपथं सुपथं व्यावर्तयतु प्रवर्तयतु ।। सत्कर्मासत्कर्म बोधयतु रोधयतु ।। अनेकान्तमेकान्तं निध्यापयतु विद्यापयतु ।। विद्यामविद्यामुन्मीलयतु समुन्मूलयतु ।। सच्छास्त्र मसच्छास्त्रं पोषयतु शोषयतु।। श्रेय: प्रत्यवायं पुष्णातु मुष्णातु ।। क्षामं क्षेमं क्रशयतु भृशयतु ।। शौचमाचारं प्रथयतु द्रढयतु ।। कुमतिं सुमतिं अनिशं मर्दयतु वर्ध्दयतु ।। सकलाभ्युदयनि:श्रेयससिद्धिं करोतु वृद्धिं करोतु ।। झ्वीं क्ष्वीं हं स: स्वाहा ।।

('शांति होम' यह प्रतिष्ठा में कार्यसिद्धि के लिए, सर्व अभ्युदय और नि:श्रेयस की सिद्धि के लिए, शुद्धि के लिए, शांति के लिये आदि हेतु से किया जाता है । उसमें पहले संकल्प किया जाता है । अनंतर पुण्याहवाचन विधि की जाती है ।)

आशीर्वाद

कल्याणमस्तु कमलाभिमुखी सदाऽस्तु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधनं सदाऽस्तु आरोग्यमस्त्वभिमतार्थफलाप्तिरस्तु । भद्रं सदास्तु जिनपुंगवभक्तिरस्तु ।

(यजमान के मस्तक पर पुष्प क्षेपण करें ।)

अथ दर्भस्थापणं

ब्रह्मप्रदेशे निदधामि पूर्वं, पूर्वादिकाष्ठासु पुनः क्रमेण ।
दर्भं जगद्गर्भजिनेन्द्र यज्ञे, विघ्नौघविध्वंसकृते समंत्रम् ।।१।।

प्रकृतक्रमविध्यवधानाय पुष्पांजलिः ।।

ओं परमब्रह्मभूयाप्त परमाप्तजिनक्रतौ ।
ब्रह्मस्थाने स्थितं कुर्वे, दर्भं विघ्नोपशांतये ।।२।।

ओं दर्पमथनाय नमः स्वाहा । ब्रह्मदर्भः ।। (पांच दर्भ के तिनके रखें)

ओं सर्वज्ञस्य यज्ञेशो, यज्ञेऽस्मिन् निदधे कुशम् ।
शतयज्ञहरिद्भागे, यज्ञविघ्नविदारणम् ।।३।।

ओं ह्रीं अनंतज्ञानाय अनंतदर्शनाय अनंतसुखाय अनंतवीर्याय पूर्वदिग्मुखे दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । इंद्रदर्भः (१२ दर्भ के तिनके रखें)

ओं विश्वदोषसंप्लुष्टा–द्यागे वैश्वानरात्मनः ।
वैश्वानरहरिद्भागे, कुशखंड निवेशयेत् ।।४।।

ओं ह्रीं ब्रह्मणे स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । जिनाय स्वाहा । जिनोत्तमाय स्वाहा । धवाय स्वाहा । धवोत्तमाय स्वाहा । शुचिष्ठाशुचिष्ठेषु कोणाकोणेषु आग्नेयां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । अग्निदर्भः (अग्नि को ३/३ का दर्भ)

ओं वैवस्वतमहामूर्ते – र्विवस्वत् कोटिदीधितेः ।
यागे वैचस्वताशायां दर्भखंडं निदध्महे ।।५।।

ओं ह्रीं अनन्त वीर्याय जितेन्द्रियाय दक्षिणस्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । यमदर्भः (चार दर्भ के तिनके रखें ।)

ओं क्षमामय क्षमामूर्ते ! पुण्यराशेर्महामहे ।
पुण्ये पुण्यजनाशायां दर्भन्यासं वितन्महे ।।६।।

ओं ह्रीं परमब्रह्मणे नैऋत्यादिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । (६ दर्भ के तिनके)

ओं विघ्नशान्तये शान्तेरपांमूर्तिमतः क्रमौ ।
अपां पत्युस्तनोम्याशां पवित्रेण पवित्रिताम् ।।७।।

ओं परममङ्गलाय परमपवित्रिताय परमनिर्वाणकारणाय अपरस्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । वरूणदर्भः । (७ दर्भ के तिनके रखें ।)

ओं निःसंगस्वरूपस्य, यागेऽस्मिन्मारूमात्मनः ।
मारूतस्य ककुब्भागे कुशमास्थापयामहे ।।८।।

ओं ह्रीं पंचमहाकल्याण संपूर्णाय वायव्यांदशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । वायुदर्भः । (३ दर्भ के तिनके रखें ।)

ओं सर्वसौम्यरूपस्य सोममूर्तेर्महामखे ।
सौममौलिसुहृत्काष्ठां कुशोऽयमधितिष्ठतु ।।९।।

ओं ह्रीं त्रैलोक्यनाथाय त्रिलोकमहिताय शुचिरत्नत्रयदेशकाय उत्तरस्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । यक्षदर्भः । (९ दर्भ के तिनके रखें।)

ओं निर्लेपस्य जिनेंद्रस्य, व्योममूर्तेर्महाध्वरे ।
व्योमकेशस्य दिग्भागं, कुर्म हे दर्भगर्भितम् ।।१०।।

ओं ह्रीं नवकेवललब्धिसमन्विताय देवाधिदेवाय ऐशान्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा ईशानदर्भः । (१० दर्भ के तिनके रखें ।)

पूर्वैशानस्य दिग्भागे शान्त्यर्थं जगतामिह ।
पातालवासिनो यक्षाक्षिपामि भुजगेशिनाम् ।।११।।

ओं ह्रीं फणालंकृतमूर्तये धरणेंद्राय कूर्मवाहनसमन्विताय अधरस्यांदिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । ईशानेन्द्रमध्ये धरणेंद्रदर्भः । (८ दर्भ के तिनके रखें ।)

सुधाकर निवेशाय ऊर्ध्वभागनिवासिने ।
अर्हच्चरणसेवाय रोहिणी जीवितेशिने ।।१२।।

ओं ह्रीं क्रों हरिणलांघनसमन्विताय सोमाय ऊर्ध्वायां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा (१६ तिनके का दर्भ रखें) इति दर्भस्थापनं ।

वार्दर्भगंधैः सुमनोऽक्षतौघैः धूपप्रदीपैरमृतोपमान्नैः ।
क्रमान्महामो महितां महद्भिर्महीं महादेवमहामहस्य ।।११।।

ओं नीरजसे नमः । शीलगंधाय नमः । (क्रमसे जल, गंध स्वाहा ।)

अक्षताय नमः अक्षतान् । विमलाय नमः - पुष्पं । परमसिद्धाय नमः । चरूं । ज्ञानोद्योतनाय नमः दीपं । श्रुतधूपाय नमः धूपं । अभीष्टफलदाय नमः फलं । भूमिदेवतायै नमः अर्घ्यं ।

* अथ मंडप प्रतिष्ठाविधानम् *

ओं मणिमयमहास्तंभसंभृतसप्तादि द्वात्रिंशदंतकरान्यतमायामसमुत्तुंग समचतुरस्त्रचतुर्द्वारोत्तंभितघंटादर्पणाघलंकृतकपिलाविशुद्धगोभयपयोद्रुम कषाय संमार्जनमहितमहीतलविहितविचित्ररंगावलिविराजितं। समसमुत्पन्नसुरचापशत शंकावह-विचित्रवितानसंपादितचित्तचमत्कारंसौरभासक्त मधुकरमालाकरंबित कमनीयकुसुममालाकलापनिरंतरितांतरालम् । दश विधानेक ध्वंजदंड कोटि विघट्यमानघनाघनगलन्मुक्तासारसंकाशमुक्ताफललंबूषतारकादिभूषणाविभूषितम्। विविधाकारकल्पिताल्पकेतनमालालंब मानधवलकलशाष्टकदर्भ मालावरण विभ्राजितम् धूपघटपटलनिर्यद्‌धूम लेखासौरभप्रसरसुरभीकृतसकल दिङ्मुखम्। दर्शनविशुद्धयादिषोडश भावनीयभव बीजयवसिद्धार्थादिद्रव्यबीजकृत पुंजनिकरूंबरंजितम् । मणि कनकचंदनमलयानेकयज्ञांग भाजनभाव द्रव्यरत्नफल पल्लव दूर्वादि पूजापरिकरपरिपूर्णम् । घोषविशुद्ध प्रवचनपाठस्तवनाशीर्वादवाद्यप्रमुख निनादमुखरितदिगंतरविविधविनेयजनपरिपूरितम् । जन्माभिषवन्समय पांडुकशिला तटघटितमहामंडपलक्ष्मीमात्मशोभातिशय भव्यजन संकल्पाभ्या सादात्मसात्कुर्वाणम्। निर्वाण कारण दयायागसाधन तयामहनीयमखिल मंगल मंडित महामंडप मिमं बहुमानयामहे।

(मंडपांतः समंताद् भूषणादिवस्तुषु च पृथक् कुंकुमाक्त पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।।)

यत्पंचवर्णाक्तपवित्रसूत्रं । सूत्रोक्ततत्त्वाभमनेकमेकम् ।
तेन त्रिवारं परिवेष्टयामः शिष्टेष्टयागत्रयमंडपेन्द्रं ।।

(मंडपमिमंबहिः पंचवर्णसूत्रेण त्रीन्वारान्वेष्टयेत्)

श्रीमंडपाभं मिलितत्रिलोकी श्रीमंडितंपंडितपुंडरीकम् ।
श्रीमंडपं खंडितपापतापं तमेनमर्घ्येण च मंडयामः ।।

ओं ह्रीं मंडपार्चनं करोमि स्वाहा ।

स्तोत्र, आशीर्वाद, मंगलपाठ आदि बोलते हुए, बाजों की ध्वनिपूर्वक पंचवर्णसूत्र (कलावा / मोळी) वेदि, मंडप को लपेटे ।

* अथ कुमुदादि द्वारपालानुकूलनम् *

रक्षार्थमस्यपूर्वादि – द्वारदक्षिणभागकं ।
कुमुदं चांजनं यक्षे वामनं पुष्पदंतकम् ।।१।।

तोरणोपांतापसव्यदेशेषु कुंकुमाक्तपुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

– स्रग्धरा –

कुंभुं शुंभंतमुच्चै, धंवलितममितः, सर्वसस्यांकुराढयैः ।
पंचास्यैः स्वतिकस्थं, सततमभिमुखं, लीलया लोकयंतम् ।।
विभ्राणं हेमदंडं, मरकतखचितं, कांतियुक्तं कदल्याः ।
पूर्वद्वाराधिकारं, कुमुदमतिमुदं, कुर्महे पूजनेन ।।

ओं ह्रीं कुमुदप्रतीहार! पूर्वद्वारे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । (इत्यादि मंत्रोंसे पुष्पांजलि क्षेपण कर अर्घ्य समर्पित करें ।)

कुंभुं शुंभंतमुच्चै, धंवलितममितः, सर्वसस्यांकुराढयैः ।
पंचास्यैः स्वतिकस्थं, सततमभिमुखं, लीलया लोकयंतम् ।।
विभ्राणं हेमदंडं, मरकतखचितं, कांतियुक्तं कदल्याः ।
कुर्वेऽपाग्द्वारपालं, बलिविहितमुदं, सांजनाभाजनत्वाम् ।।२।।

ओं ह्रीं अंजनप्रतीहार! दक्षिण द्वारे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । इत्यादि....इदं अर्घ्यं...

कुंभुं शुंभंतमुच्चै, धंवलितममितः, सर्वसस्यांकुराढयैः ।
पंचास्यैः स्वतिकस्थं, सततमभिमुखं, लीलया लोकयंतम् ।।
विभ्राणं हेमदंडं, मरकतखचितं, कांतियुक्तं कदल्याः ।
प्रत्यग्द्वाराधिकारं, विधुधवलरूचं, वामनंमानयामि ।।३।।

ओं ह्रीं वामनप्रतीहार! पश्चिमद्वारे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । इदं अर्घ्यं ....

कुंभुं शुंभंतमुच्चै, धंवलितममितः, सर्वसस्यांकुराढयैः ।
पंचास्यैः स्वतिकस्थं, सततमभिमुखं, लीलया लोकयंतम् ।।
विभ्राणं हेमदंडं, मरकतखचितं, कांतियुक्तं कदल्याः ।

लब्धोदग्द्वारदक्षं, विधिविहितबलिं पुष्पदंतं तनोमि ।।५।।

ओं ह्रीं पुष्पदंतप्रतीहार । उत्तरद्वारे तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । इदं अर्घ्यं पाद्यं....

।। इति मंडप प्रतिष्ठा विधानम् ।।

- पूजामुखविधि -

※ घटयात्राविधि ※

अभिषेक प्रारंभ करने के पहिले अभिषेक तथा पूजन के लिए जल आवश्यक है । इसलिए सौभाग्यवती स्त्रियाँ अथवा कन्याऐं बाजेके साथ अपने-अपने माथेपर नारियल ढके हुए कलश ले जावें और निम्नलिखित विधिपूर्वक जल लावें । नीचे के श्लोक प्रमाण जलाशय पर अर्घ चढावें और उत्सवपूर्वक जल को मंदिरजी में शद्धिपूर्वक लावें । वेदि प्रतिष्ठा या अन्य कलशारोहणादि विधियोंमें भी इसी तरह लावें ।

– शार्दूल –

पद्मापादनतो महामृतभवानंदप्रदानान्नृणाम् ।
जैनामार्ग इवावभासिविमलो, योगीवशीतिभवन् ।।
जैनेन्द्र स्नपनोचितोदकतया क्षीरोदवत् तत्सताम् ।
प्रज्ये त्वां शुभशुद्धजीवननिधिं कासार संपूजये ।।१।।

ओं ह्रीं पद्माकराय अर्घ्यं निर्मपामीति स्वाहा ।

श्रीमुख्यदेवीः कुलशैलमूर्द्धं पद्मादि पद्माकरसद्मसक्ताः ।
पयः पटीराक्षत पुष्प हव्य प्रदीपधूपोद्धफलैः प्रयक्ष्ये ।।२।।

ओं ह्रीं श्री प्रभृति देवीभ्यः इदं जलादि अर्घ्यं....

गंगादिदेव्यरतिमंगलांगा गंगादि विख्यातनदीनिवासाः ।
पयः पटीराक्षत पुष्प हव्य प्रदीप धूपोद्धफलैः प्रयक्ष्ये ।।३।।

ओं ह्रीं गंगादि देवीभ्यः इदं जलादि अर्घ्यं...

सीतानदीविद्धमहाह्रदस्थान् ह्रदेश्वरान्नागकुमारदेवान् ।
पयः पटीराक्षतपुष्प हव्य प्रदीपधूपोद्धफलैः प्रयक्ष्ये ।।४।।

ओं ह्रीं सीताविद्ध महाह्रद देवेभ्यः इदं जलादि अर्घ्यं

सीतोत्तरामध्य महाह्रदस्थान् ह्रदेश्वरान्नागकुमारदेवान् ।

पयः पटीराक्षतपुष्प हव्य प्रदीपधूपोद्धफलैः प्रयक्ष्ये ।।५।।

ओं ह्रीं सीतोदविद्ध महाह्रददेवेभ्य: इदं जलादि...

क्षारोदकालोदकतीर्थवर्ति श्रीमाग धादीनमरानशेषान् ।

पयः पटीराक्षतपुष्प हव्य प्रदीपधूपोद्धफलैः प्रयक्ष्ये ।।६।।

ओं ह्रीं लवणोदकालोदमागधादि तीर्थ देवेभ्य इदं जलादि...

सीतातदन्त्यद्वयतीर्थवर्ति श्रीमागधादीनमरानशेषान् ।

पयः पटीराक्षतपुष्प हव्य प्रदीपधूपोद्धफलैः प्रयक्ष्ये ।।७।।

ओं ह्रीं सीतासीतोद्यो: मागधादि तीर्थ देवेभ्य: इदं जलादि

समुद्रनाथांल्लवणोदमुख्यसंख्या व्यतीतांबुधिभूति भोक्तृन्

पयः पटीराक्षतपुष्प हव्य प्रदीपधूपोद्धफलैः प्रयक्ष्ये ।।८।।

ओं ह्रीं संख्यातीत समुद्रदेवेभ्यो अर्घ्यं

लोकप्रसिद्धोत्तमतीर्थदेवान् नन्दीश्वरद्वीपसरः स्थितादीन् ।

पयः पटीराक्षतपुष्प हव्य प्रदीपधूपोद्धफलैः प्रयक्ष्ये ।।९।।

ओं ह्रीं लोकाभिमत तीर्थदेवेभ्यो जलादि...

गंगादयः श्रीप्रमुखाश्चदेव्यः श्रीमागधाधाश्च समुद्रनाथाः

ह्रदेशिनोऽन्येऽपि जलाशयेशास्ते सारयन्त्वस्य जिनोचितांभः ।।१०।।

ऊपर का 'गंगादय...' आदि श्लोक मंत्र बोलकर जलाशय से जल निकालना चाहिए । कलशों को चंदन लगाकर नीचे लिखा मंत्र बोलकर कलशोंमें जल भरना चाहिए ।

ओं ह्रीं श्री ह्रीं धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी शान्ति पुष्टय: श्री दिककुमार्यो जिनेन्द्र महाभिषेक कलशमुखेष्वेतेषु नित्यविशिष्टा भवत भवतेति स्वाहा ।

– स्रग्धरा –

तीर्थेनानेन तीर्थान्तर दुराधिगमोदारदिव्यप्रभाव–

स्फूर्जत्तीर्थोत्तमस्य, प्रथितजिनपतेः, प्रेषितप्रामृतानाम् ।।

श्रीमुख्यख्यातदेवी, निवहकृतमुखाद्यासनोद्भूतशक्ति – ।

प्रागल्भ्यानुद्धरामो, जयजयनिवदे, शातकुंभीयकुंभान् ।।

ऊपर का श्लोक बोल जलशुद्धि विधान पूर्णकर वे जलकलश सौभाग्यवती स्त्रियों अथवा कन्याओंके द्वारा मस्तक से धारण कराकर लाना चाहिए । कलशों की संख्या ११,२१ या ८१ तक होती है। जैसा विधान हो–उतने कलश लेवें।

।। इति घटयात्रा विधानम् ।।

* पंचामृताभिषेकं *

– वसंत –

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत् त्रयेशं ।
स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हम् ।।
श्रीमूलसंघसुदृशां सकृतैकहेतुर् ।
जैनेद्रयज्ञविधिरेष मयाभ्यधायि ।।

ओं ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा इति जिनस्नपनप्रस्तावना पुष्पाञ्जलिः ।

(नीचे लिखे श्लोक को पढकर यज्ञोपवीत और आभूषण धारण करें ।)

– शार्दूल –

श्रीमन्मन्दरसुन्दरे शुचिजलैर्धौते सदर्भाक्षते ।
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं तत्पादपुष्पस्त्रजा ।।
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थममलं यज्ञोपवीतं दधे ।
मुद्राकंकणशेखरानपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ।।

(नीचे लिखा श्लोक बोल तिलक लगावें ।)

– वसंत –

सौगन्ध्यसंगतमधुव्रतझंकृतेन ।
संवर्ण्यमानमिव गन्धमनिंद्यमादौ ।।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृन्दवन्द्यं ।
पादारविन्दमभिवन्द्य जिनोत्तमानाम् ।।

भूमि प्रक्षालन (भूमि शुद्धि)

ये सन्ति केचिदिह दिव्यकुलप्रसूता ।

नागाः प्रभूतबलदर्पयुता भुवोधः ।।

संरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषां ।

प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम् ।।

ओं ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थंकराय श्री शान्तिनाथाय परमपवित्रेभ्यः शुद्धेभ्यो नमो भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा ।

पीठ प्रक्षालन

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः ।

प्रक्षालितं सुरवरैर्यदनेकवारम् ।।

अत्युद्यमद्यतदहं जिनपादपीठं ।

प्रक्षालयामि भवसंभवतापहारि ।।

ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन श्रीपीठ प्रक्षालनं करोमि स्वाहा ।

* पीठपर श्रीकारलेखन *

श्री शारदासुमुख निर्गतबीजवर्ण ।

श्री मंगलीकवर सर्वजनस्य नित्यं ।।

श्रीमत् स्वयं क्षयति तस्य विनाश विघ्नं ।

श्रीकार वर्ण लिखितं जिनभद्रपीठे ।।

ओं ह्रीं श्रीलेखनं करोमि स्वाहा ।

* अग्नि प्रज्वालनक्रिया *

दुरन्तमोहसन्तान कान्तारदहनक्षमम् ।

दर्भै : प्रज्वालयाम्यग्निं ज्वालापल्लविताम्बरम् ।।

ओं ह्रीं क्ष्वीं अग्निं प्रज्वालयामि स्वाहा ।

* दशदिक्पाल आह्वान *

– स्रग्धरा –

पूर्वाशादेश हव्यासन महिषगते नैर्ऋते पाशपाणे ।

वायो यक्षेन्द्र चन्दाभरण फणिपते रोहिणीजीवितेश ! ।।

सर्वेऽप्यायात यानायुधयुवतिजनैः सार्धमो भूर्भुवः स्वः ।

स्वाहा गृह्णीत चार्घ्यं चरूममृतमिदं स्वस्तिकं यज्ञभागं ।।

ओं ह्रीं क्रों प्रशस्तवर्ण सर्वलक्षण सम्पूर्ण स्वायुधवाहनवधू चिह्न सपरिवारा इन्द्राग्नियमनैर्ऋतवरूण वाहन कुबेरेशान धरणेन्द्र सोमनामदश दिग्पाला आगच्छत आगच्छत संवौषट्, स्वस्थाने तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ममात्र सन्निहिता भवत भवत वषट् इदमर्घ्यं पाद्यं चरूं स्वस्तिकं यज्ञभागं च गृह्णीध्वं गृह्णीध्वं ओं भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा ।

इति इन्द्रादिदशलोकपाल परिवारदेवतार्चनम् ।।

नाथ त्रिलोकमहिताय दश प्रकार – ।

धर्माम्बुवृष्टि परिषिक्त जगत्त्रायाय ।।

अर्घं महार्घ गुणरत्न महार्णवाय ।

तुभ्यं ददामि कुसुमैर्विशदाक्षतैश्च ।।

ओं ऱ्हीं श्री त्रिलोकमहिताय धर्मोपदेशनकराय श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.

क्षेत्रपाल को अर्घ

भो : क्षेत्रपाल! जिनप प्रतिमाङ्कभाल ।

दंष्ट्रा कराल जिनशासन वैरिकाल ।।

तैलाहिजन्म गुड चन्दन–पुष्प–धुपैर् ।

भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वर यज्ञकाले ।।

ओं आं क्रों ह्रीं अत्रस्था विजयभद्र–वीरभद्र–माणिभद्र–भैरवापराजित पंचक्षेत्रपालाः इदं जलादिकमर्चनं गृह्णीध्वं गृह्णीध्वं ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधा स्वाहा । इति क्षेत्रपालार्चनम् ।

जन्मोत्सवादि समयेषु यदीय कीर्ति ।

सेन्द्राः सुराः प्रमदभारनताः स्तुवन्ति ।।

तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुद्धया ।

पुष्पाञ्जलिं मलयजार्द्र मुपाक्षिपेऽहम् ।।

। पुष्पांजलिं क्षिपामि ।

– अथ कलशस्थापनमाह –

सत्पल्लवार्चितमुखान कलधौतरूप्यं ।
ताम्रारकूटघटितान् पयसा सुपूर्णान् ।।
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान् ।
संस्थापयामि कलशज्जिनवेदिकान्ते ।।

ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंछ केशरी महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीरांभोनिधि शुद्ध जलं सुवर्णघटं प्रक्षालित परिपूरित नवरत्नगन्ध पुष्पाक्षताभ्य र्चित मामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा ।

अभिषेक के लिए प्रतिमाजीको अर्घ चढाना ।

उदक चंदन तण्डुल पुष्प कैश्चरू सुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवल मंगल गानरवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।।

ओं ह्रीं श्री परम ब्रह्मणे अनन्तानन्तज्ञानशक्तये अष्टादशदोष रहिताय षट्चत्वारिंशद् गुण संयुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने अनर्घ्यपद प्राप्त्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथैवं सत्कृतं जिनबिम्बं पूर्वस्थापित पीठे निवेश्यमित्याह –

यं पांडुकामल शिलागतमादिदेवं ।
अस्नापयन्सुरवरा सुरशैलमूर्घ्नि ।।
कल्याणमीप्सुरहमक्षततोय पुष्पैः ।
सम्भावयामि पुर एव तदीयबिम्बम् ।।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा ।

– मुद्रिका स्वीकारमाह –

प्रत्युप्तनीलकुलिशोपलपद्मराग ।

निर्यत्करप्रकरबद्धसुरेन्द्रचापम् ।।
जैनाभिषेकसमयेऽङ्गुलीपर्वमूले ।
रत्नाङ्गुलीयकमहं विनिवेशयामि ।।
ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हम् अ सि आ उ सा नमः मुद्रिकास्वीकारः ।

१ - जलाभिषेक

प्रत्यग्रतारतरमौक्तिक चूर्णवर्णैर् – ।
भृंङ्गारनालमुखनिर्गतचारूधारैः ।।
शीतैः सुगन्धिभिरतीव जलैर्जिनेन्द्र – ।
बिम्बोत्सव स्नपनमेष समारमेऽहम् ।।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हम् वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिने जलाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

मंत्र २ – ओं ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्द्धमानांत चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जन्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे भारत देशे ---------प्रान्ते -----नाम्निनगरे एतत् -----जिनालये अद्य वीर निर्वाण संवत ----मासे ----पक्षे ----तिथौ------वासरे मुनि आर्यिका श्रावक श्राविकानांसकल कर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा । इति जलस्नपनम्।

२. शर्कराभिषेकं

मुक्त्यंगनानर्मविकीर्यमाणैः ।
पिष्टार्थकर्पूर रजो विलासैः ।।
माधुर्यधूर्यैवरशर्करौघैर् ।
भक्त्या जिनस्य स्नपनं करोमि ।।

ओं ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हम् त्रिभुवनपतेः शर्कराभिषेकं करोमि स्वाहा ।

३. अथ इक्षुरसाभिषेकमाह

भक्त्या ललाट तट देशनिवेशितोच्चैर् –
हस्तैः स्तुता सुरवरासुरमर्त्यनाथैः ।
तत्कालपीलितमहेक्षुरसस्य धारा

सद्यः पुनातु जिन बिम्बगतैव युष्मान् ।।

ओं ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हम् त्रिभुवनपते: इक्षुरसाभिषेकं करोमि स्वाहा ।

४. अथ घृताभिषेकं

उत्कृष्ट वर्ण नव हेमरसाभिराम ।

देहप्रभावलयसङ्गमलुप्तदीप्तिम् ।।

धारां घृतस्य शुभगन्धगुणानुमेयां ।

वन्देऽर्हतः सरभसं स्नपनोपयुक्ताम् ।।

ओं ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हम त्रिभुवनपते: घृताभिषेकं करोमि स्वाहा ।

५. अथ दुग्धस्नपनं

सम्पूर्ण शारदशशाङ्कमरीचिजाल।

स्यन्दैरिवात्मयशसामिव सुप्रवाहैः ।।

क्षीरैर्जिनाः शुचितरैरभिषिच्यामानाः ।

सम्पादयन्तु मम चित्तसमीहितानि ।।

ओं ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हम् त्रिभुवनपते: दुग्धाभिषेकं करोमि स्वाहा ।

६. अथ दधिस्नपनं

दुग्धाब्धिवीचिचयसंचितफेनराशिः ।

पांडुत्व कान्तिमवधीरयतामतीव ।।

दध्नां गता जिनपतेः प्रतिमां सुधारा ।

सम्पद्यतां सपदि वाञ्छित सिद्धये नः ।।

ओं ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हम् त्रिभुवनपते: दधि अभिषेकं करोमि स्वाहा ।

७. अथ सर्वौषधिस्नपनम्

संस्नापितस्य घृतदुग्धदधीक्षुवाहैः ।

सर्वाभिरौषधिभिरर्हत उज्वलाभिः ।।

उद्वर्तितस्य विदधाम्याभिषेक मेला ।

कालीयकुंकुमरसोत्कटवारिपूरैः ।।

ओं ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हम् त्रिभुवनपते: सर्वौषधिस्नपनं करोमि स्वाहा ।

८. अथ पूर्व स्थापित कलशचतुष्टयेन स्नानमाह

इष्टैर्मनोरथशतैरिवभव्य पुंसां ।
पूर्णैः सुवर्णकलशैर्निखिलावसानम् ।।
संसारसागर विलंघन हेतु सेतुं ।
आप्लावये त्रिभुवनैकपतिं जिनेन्द्रम् ।।

ओं ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हम् त्रिभुवनपतेः चतुःकोणकलशाभिषेकं करोमि स्वाहा ।

९. नालिकेररसाभिषेकं

नालिकेरजलैः स्वच्छैः शीतैः पूतैर्मनोहरैः ।
स्नानक्रियां कृतार्थस्य विदधे विश्वदर्शिनः ।।

ओं ह्रीं नालिकेर रसेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।

१०. आम्ररसाभिषेक

सपक्वैः कनकच्छायैः सामोदैर्मोदकारिभिः ।
सहकाररसैः स्नानं कुर्मः शर्मैकसद्मनः ।।

ओं ह्रीं पवित्रतर सहकार रसेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।

११. चन्दनानुलेपनं, पुष्पवृष्टि

संशुद्ध शुद्ध्या परिहार शुद्धया कर्पूर साम्मिश्रितचंदनेन ।
जिनेन्द्र देवोपरि पुष्पवृष्टिं विलेपनं चारू करोमि भक्त्या ।।

ओं ह्रीं सुमन सुखदाय पुष्पवृष्टिं करोमि स्वाहा । चन्दनानुलेपनं करोमि.

वासन्तिका जातिशिरीषवृन्दैर्बन्धूकवृन्दैरपि चंपकाद्यैः ।
पुष्पैरनेकैरलिभिर्हताग्रैः श्रीमज्जिनेन्द्रांघ्रियुगं यजेऽहम् ।।

१२. अथारार्तिकावतारणं कार्यमित्याह

– वसंत –

दध्युज्वलाक्षतमनोहर पुष्पदीपैः ।
पात्रार्पितैः प्रतिदिनं महदादरेण ।।

त्रैलोक्यमंगल ! सुखालय ! कामदाहं ।

आरार्तिकं तव विभोरवतारयामि ।।

ओं ह्रीं श्री मंगलारार्तिकावतारणम् ।। नीराजनं करोमि दुरितमस्माकमपहरतु भगवान् स्वाहा ।

१३. सुगंधितजलाभिषेकं

(कर्पूरादिमिश्रितेन तोयेनाप्यभिषेकः कार्यं इति आह)

द्रव्यैरनल्पघनसारचतुःसमाढयै –

रामोदवासितसमस्तदिगन्तरालंः

मिश्रीकृतेन पयसा जिनपुङ्गवानां ।

त्रैलोक्यपावनमहं स्नपनं करोमि ।।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हम् वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्य स्वामिने गन्धोदकाभिषेकं करोमि स्वाहा ।

ओं ह्रीं ध्यातृभिरभीप्सितफलदेभ्यः स्वाहा । ।। पुष्पांजलिः ।।

अथ शांतिमंत्र प्रारभ्यते

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ओं नमः सिद्धेभ्य। ओं नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ओं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावतीसहिताय घातिकर्मनिर्मुक्ताय द्वादशगणपरिवेष्टिताय अनन्तज्ञान दर्शन वीर्य सुखास्पदाय प्रक्षीणाशेषकल्मषाय, अस्माकं अपायं सर्वपापोपसर्गभयविघ्नरोगवैरिवर्गाप मृत्युनिपातान्नाशय नाशय, नर करि तुरग गो महिषायमारीरूपशमय उपशमय, सर्वसस्य धान्य वृक्षगुल्म लतापत्रपुष्पफलराष्ट्रमारीर्विनाशय विनाशय, सर्वग्रामनगरखेडकर्वटमडम्ब पत्तनद्रोणमुखसंवाहनघोषकरानभिनन्दय अभिनन्दय, सुदर्शमहाजयचक्र विक्रमसत्वतेजोबलशौर्ययशांसि पूरय पूरय, अर्हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

ओं नमोऽर्हते भगवते देवाधिदेवाय सर्वोपद्रवविनाशनाय सर्वापमृत्युं जय करणाय सर्व मंत्रसिद्धिंकराय ओं क्रों ठः झं वं व्हः पः हः क्षीं अ सि आ उ सा सर्वशान्तिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

ओं नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये

ओं नमः शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वपापप्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव विनाशनाय ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वरोगशांतिमायुरारोग्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

– शार्दूल –

हेमाद्रिर्धवलामल च्छविरभूद्यत्स्नान दुग्धार्णसा
क्षीराब्धिः प्रथितोऽभवज्जिनपतेः स्नानोपयोग्यैर्जलैः
यस्य स्नानजलावसिक्तमखिलं पूतं जगज्जायते
जीयादेष जिनेशिनामर हतां जन्माभिषेकोत्सवः

पुष्पाञ्जलि

अथ मृत्तिका संग्रह विधि

पालिका, पटली, शराव इत्यादिकोंके अन्दर यक्षादिकोंकी पूजा होने के बाद मृत्तिका संग्रह के लिए आवे । सर्वाह्ण यक्ष की मूर्ति को हाथी पर विराजमान करके गाजेबाजे के साथ सभी द्रव्य लेकर सौभाग्यवती स्त्रियों के हाथों में सोना – चांदी की थालियाँ देकर उत्सव के साथ नगर भ्रमण करते हुए नगर के ईशान दिशा में नदियाँ, सरोवर या समुद्र या उत्तम बगीचे में या किसी खेत में प्रथम सर्वाह्ण यक्ष की मूर्ति स्थापन करें । इन्द्र के द्वारा एक हाथ भूमि खुदवाकर पूजा-विधि हो ।

भूमिपूजा, पंचकुमार पूजा

ओं ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा ।। पुष्पाञ्जलीं ।।

विहारकाले जगदीश्वराणामवाप्तसेवार्थ कृतापदानं ।
हुत्वार्चितो वायुकुमारदेव ! त्वं वायुना शोधय याग भूमिम् ।।१।।

ओं ह्रीं वायुकुमारदेव ! महीं पूतां कुरू कुरू हुं फट् स्वाहा ।

(दर्भ से भूमि सम्मार्जन करें)

ओं ह्रीं वायुकुमारदेव इदं अर्घ्य पाद्यं गद्यं अक्षतान् पुष्पं दीपं धूपं फलं चरूं बलिं

स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

विहारकाले जगदीश्वराणा – भवाप्तसेवार्थकृतापदानं ।

हत्वार्चितो मेघकुमारदेव । त्वं वारिणा शोधय याग भूमिम् ।।२।।

ओं ह्रीं क्षीं भूः शुद्धयतु स्वाहा । (षड्दर्भपूलोपात्तजलेन भूमिं सिंचेत्)

गर्भान्वयादौ महितद्विजेन्द्रै निर्वाण पूजासु कृतापदानं ।

हत्वार्चितो वह्निकुमारदेव ! त्वं ज्वालया शोधय यागभूमिम् ।।३।।

ओं ह्रीं क्षीं अग्निं प्रज्वालयामि निर्मलाय स्वाहा ।

(षड्दर्भपूलानलेन भूमिं ज्वालयेत)

तुष्टा अमी षष्टिसहस्त्रनागा भषंत्ववार्या भुवि कामचाराः ।

यज्ञावनीशानदिशाप्रदत्तसु धोपमानांजलिपूर्ण वार्भिः ।।४।।

ओं ह्रीं श्रीं क्षीं भूः षष्टिसहस्रसंख्येभ्योनागेभ्यः स्वाहा ।

इति नागतर्पणार्थमैशान्यांदिशि जलांजलिं क्षिपेत्)

ब्रह्मप्रदेशे निदधामि पूर्वं पूर्वादिकाष्ठासु पुनः क्रमेण ।

दर्भं जगद्गर्भ जिनेन्द्रयज्ञविघ्नौघविध्वंसकृते समंत्रण ।।५।।

ओं दर्प मथनाय स्वाहा । (इतिब्रह्मस्थानादिषु दर्भखंडानवस्थापयेत् ।)

क्षेत्रपालार्चनं

– शार्दूल –

ऊर्ध्वस्थेन करद्वयेन फलकं खड्ग कराभ्यामधो ।

वर्तिभ्यामुरूसारमेयमसित स्फूर्जद्गदा बिभ्रतम् ।।

प्रत्यूहक्षपणक्षमं समवित क्षेत्र व्रजं क्षेत्रपं ।

तैलेनाद्य सताभिषिच्य विदधे सिंदूर कैर्धूसरम् ।।

ओं ह्रीं क्षेत्रपाल ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट । ओं ह्रीं क्षेत्रपाल ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ओं ह्रीं क्षेत्रपाल ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । ओं ह्रीं क्षेत्रपालाय तैलाभिषेकं करोमि प्रतिगृह्यतां २ स्वाहा । ओं ह्रीं क्षेत्रपालाय सिंदूरसेचनं करोमि स्वाहा ।

क्षेत्रं मखेऽस्मिन् परिपालयन्तं विघ्नान शेषानपसारयन्तम् ।
अग्नेर्दिशायां गुडदानपूर्वं श्रीक्षेत्रपालं बलिना धिनोमि ।।

ओं ह्रीं क्षेत्रपालाय गुडदानपूर्वकं यजामहे प्रतिगृह्यतां २ स्वाहा । ओं ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय इदं अर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां २ स्वाहा । ओं ह्रीं क्षेत्रपालाय भूषणं जयामहे प्रतिगृह्यतां २ स्वाहा । (पूर्व मुख या उत्तरमुख होकर मिट्टीखोदे पुन: ऊपर की मिट्टी हटाकर नीचे की शुद्ध मिट्टी इकट्ठी करें ।) नीचे लिखे मंत्रपूर्वक भरें । अर्घ्य समर्पण करें ।

वार्दर्भगंधैः सुमनोक्षतौघै–र्धूप प्रदीपैरमृतोपमान्नैः ।
इमां समर्चामि विशुद्धमृत्स्नां पुण्यांकुराभ्यर्चनमूलभूताम् ।।

– स्वागता –

पूजितां समभि मंत्र्य मे, षामहस्तमपि पूर्वमुखो वा ।
तेन तामहमिहोत्तरवक्त्रो, वा न्यसामि कनकादिसुपात्रे ।।

ओं ह्रीं असुजर सुजर भव स्वाहा । (जल से बायें हाथ को मंत्रित करें)
ओं ह्रीं असुजर सुजर भव स्वाहा । (भूमि पर जल छिडककर मंत्रित करें)
ओं ह्रीं सर्वलोकगुरूभ्ये नम: स्वाहा । (मिट्टी को पात्र में भरें ।)

– शार्दूल –

शंखादौ सुपिरे ततेच वितते भेरीमृदंगादिके ।
वीणादौ विवते घने घन तरं तालादिके चोत्थिते ।।
शब्दे पंचविधे सगीतनिनदे व्याज्रम्भमाणेतराम् ।
मृत्सनापूरितपात्रकानि कृतिनां मूर्ध स्विहारोपये ।।

(मिट्टी से भरे पात्रा शिष्यों के मस्तक पर रखावे । जिनयज्ञ महोत्सव को करनेकी इच्छासे महामहोत्सव पूर्वक मिट्टी को लाकर सर्वाह्णयक्ष देवता को उचित स्थानपर विराजमान करके मंगलवाद्य बजवाते हुए पूर्व में जिन पात्रों की घटी शराव पटलिका और पालिकाओं में पूजा विधि संपन्न की है, उनके पास मिट्टीसे

भरे पात्रों को रखें । गंधाक्षतादिसे आगत जनों का सत्कार करके मंदिर और ग्राम के आश्रित देवाताओंको यज्ञभाग समर्पित करें ।)

ओं ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा ।। पुष्पाञ्जलिः ।।

(सर्वाह्णयक्षको उचित स्थानपर विराजमान करके मृत्तिकासे भरे पात्रों को सामने रखें ।)

सर्वाण्हयक्ष स्थापना

संस्थाप्य यक्षं निजपूर्वपीठे श्रीमृत्तिकापूरितपात्रकाणि ।
अमत्रकाणामधिवासितानां, पुरः प्रदेशे विनिवेशयामः ।।
धामाश्रिता दिक्पतयोष्टसंख्या, ग्रामाश्रितास्ते च परे च सर्वे ।
अर्घ्य प्रदानेन सुतृप्तिभाजो, निघ्नंतु विघ्नान् प्रकृताध्वरस्य ।।

ओं ह्रीं धामग्रामाश्रितदिक्पालदेवः सर्वेऽपि ओं भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदमर्घ्यं गृण्हीत गृण्हीत यागविघ्नशान्तिं कुरूत कुरूत स्वाहा (इस मंत्र से अर्घ्य देवें)

देवर्षिद्विजपूजनं च विहितं श्रेयोर्थिनां ते मता ।
रागद्वेषविमोहमूलविलयात् सारंभसंगोज्झनात् ।।
स्थूलप्राणिवधादिवर्जनविधेर्देवानुषींस्तादृशान् ।
संपूज्य द्विजपुंगवांश्च धिनुयात्तांबूलदानादिभिः ।।

अनंतर जिनेन्द्र प्रभुका अभिषेक करके अष्ट द्रव्य से पूजा करें । अनंतर अठासी देवोंसहित नवदेवता पूजा करें और श्रुतपूजा व गुरूपूजा करके पात्रों में रखी मिट्टी को लेकर उत्तर मुख होकर घटी आदि पात्रों में मिट्टी भर देवें । अच्छी तरह से अंकुरशक्ति वाले बोये जाने वाले गेहू आदि धान्यों को पवित्र जल से धोवें । पुनः रात्रि में शुभमुहूर्त में वाद्य बजवाते हुए कुलांगनाओं से उन पात्रों में बीज डलवाकर स्वयं भी बीज बोवें, पंचकुंभ में भरे हुए जल से मंत्रपूर्वक जलसिंचन करके पुण्य तीर्थजलसे पुण्याहमंत्र से जलसिंचन करके कमलपत्रादि से उन पात्रों को ढककर जहाँ सुखद वायु मिल सके, ऐसे निर्बाध स्थान में उन्हें रखें । (पुनः गंध पुष्प शेषाक्षत, तांबुल आदि से श्रावकों को संतर्पित करें ।

यक्षादि देवताओं का विसर्जन करके तीन दिन तक पंचकुंभोंके जल से उनका सिंचन करें ।)

ततो जिनेन्द्रस्य महोत्सवेन महास्तपनमेकादशविधार्चनां पंचमंडलाराधनां श्रुतस्कन्धमहर्षिणांच सपर्यां विधिना विदध्यात् ।।

(पद्य व मंत्र पढकर सौभाग्यवती स्त्रियों से पात्रों में मिट्टी भरावें ।)

आनीतमृद्भिर्विधिना सतीभिः पात्राणि सर्वाण्यधिवासितानि ।
न्यासक्रमेणोचितमुत्तरस्याः प्रपूरयामोद्य समंत्रमेव ।।

ओं ह्रीं परिपूर्णानंतचतुष्टयायनमः । (इति पालिकादिपात्रेषु मृत्तिकां पूरयेत्)

(आगे के पद्य व मंत्रों से बीज धुलावे और बीज बोएं ।)

– उपजाति –

गोधूम मुद्गान शिलशालिशिंबान् कुलत्थमाषांस्तिलराजमाषान् ।
व्रीह्याढकी कोद्रव–सर्षपौघान् श्यामाक कंगूंश्चणकान् यवांश्च ।।
सुगर्भतोष्टादश बीज धान्या–न्यमूनि धौतानि शुभैः पयोभिः ।
लग्ने प्रशस्ते सति शंखनादे कुलांगनाभिर्निशि वापयामः ।।

ओं न्ही नमो वृषभाय रोहिणीचंडे महाचंडे सर्वचंडे स्वाहा ।

(बीज प्रक्षालित करे)

ओं णमो रोहिणी वर्ध्दमानविजये विजयचंडे बीजप्रमुखाय लोकविदिताय सर्वज्ञाय स्वाहा । (इति सुंदरी भिर्वापयेत् स्वयं (इन्द्र) च वपेत्)

(गाजे–बाजे के साथ अठारह प्रकार के धान्यों को पाटलीकादि मे वपन करें । गेंहू मूंग शिल शालि, शिंबा, कुलथी, उडद, तिल, राजमा, ब्रीहि, अरहर, कोदों, सरसों, श्यामातंदुल, कंगनी, चना, जौ)

(पुण्याह मंत्रों से और आगे के पद्यों को पढकर पंचकुंभ में भरे हुए जल से घटी आदि में जल सिंचन करें ।)

अथ पुण्याहमंत्र

अथ निरतिशयनिजमहिमभरसमसमानमितात्मीयचरणपरिचरणचतुर चतुर्णिकाया मरनिकुरूं बशुंभत् कोटिरकोटिकोटितटावघटितस्फुटतरप्रभा भासुरानेकनूत्नरत्न

निकराकरदिवाकर शताधिकाति गंभीरविपुलप्रभामंडल क्षीरोददिंडीरपिंडाय मानचतु:षष्ठिचामर प्रभृतिलक्ष्यमाणाप्रतिपक्षबहिरंग महालक्ष्मीनाथस्य, अशेषदोषा वरणविगमसमसमनंतरसमुद्भूतसकल लोकालोकनिरंतरपरिपूर्ण सर्वद्रव्यपर्याय विषय क्रमकरण व्यवधानातिवर्ति केवलाख्यपरंज्योति: स्वरूपांतरंगिकाक्षय महालक्ष्मीनाथस्य, भगवदर्हत् परमेश्वरस्य पादांभोरूहं सकलमंगल पुरोगम पुण्यांकुरैरभ्यर्चयितुकामा: तम:स्थानावस्थापितपात्रप्रोद्यदंकुरान् संसेचयितु फल पल्लव फुल्लादि चंचत् पंचकुंभेभ्य: शीतलातिविमलसलिलमिदानीमाहराम: ।

य: पूर्णावगम: सुशीतलवचो – वार्भिर्विनेयांकुरा–।
नुच्चैरून्नतिमानिनाय जगतामीशस्य तस्यार्हत: ।।
श्रीमत् पादपयोजपूजनकृते तत्पूर्णकुंभाबुभि: ।
सेसिच्येह समंत्रकं जनयत: पुण्यांकुरानंकुरान् ।।

ओं नमो रोहिणीचंडे पार्श्वचंडे विघ्नविजयचंडे अजितचंडे सर्वचंडे स्वाहा ।
(इति जल सेचनं कुर्यात । पुण्याहमंत्रेणापि जलसेचनं कुर्यात् ।)

शिवमस्तु सर्वजगतां परहितनिरता भवन्तु भूतगणा: ।
दोषा प्रयांतु नाशं तिष्ठतु जिनशासनं सुचिरम् ।।

(आशीर्वाद देवें)

(देवर्षिद्विजपूजनंच विहितमिति पूर्वोक्त श्लोकेन जैन ब्रह्मजन सभा पूजनम्)।।

– अनुष्टप –

इष्टास्तेऽमी सुराहूता: शिष्टार्हत् प्रभुपूजने ।
इष्टमस्माकमापाद्य तुष्टा यांतु यथायथम् ।।

ओं ह्रीं सर्वाण्हयक्षप्रमुखदेवा आहूतार्चिता: सर्वे स्वस्थानं गच्छत गच्छत ज: ज: ज: । (इति विसर्जनमंडलेषु पुष्पाञ्जलिं वितीर्य देवता विसर्जयेत् ।)

(महामहोत्सव समाप्तिके दिन इन अंकुरोंके पात्रोंको सुवासिनी स्त्रियाँ मस्तक पर लेकर मंदिर की तीन प्रदक्षिणा देकर आगे का श्लोक व मंत्र पढकर भगवान के सामने इन अंकुरों को चढावें – स्थापित करें)

गद्य – ओं मंगल लोकोत्तम शरणार्हद् भट्टारक महाध्वर दिवसात् पूर्वस्मिन्नवम

सप्तमपंचमान्यतमदिने विधिनांकुरार्पणं विधाय त्रिदिनमुक्तकुंभांभोभि: सेचनं निर्वर्त्य, समुत्पन्नेष्वंकुरेषु तत्तृतीयदिनेऽन्यस्मिन्वा दिने जैनमहामहमत्युत्सवेन विनिर्माप्य तदर्चनासमये समुज्जृंभमाण विचित्रवादित्र जालेषु दिग्भित्तिमासादयत्सु निजनिजोत्तमांगेषु विधृत्य वरवर्णिनीभिर्महत्या विभूत्या चैत्यालयं प्रदक्षिणी कृत्य प्रदत्तेषु पात्रेषु प्ररूढै: प्रगाढ सौंदर्यमास्कंद दिभ: साक्षात्पुण्यांकुरैरिव कुंदेन्दुहार गौरांकुरै: कीर्तनीयमुर्तिमापन्नै: भव्यानुरागैरिव सुवर्ण हाटक हटत् पिशंगवर्णनीयांकुरैर्वा, समसमानतामरकोटीरकोटिकोटितटाव घटित नानारत्न प्रभाभारांकुरै: समाराधनीय पादाम्भोरूहं भगवंतमर्हन्तं ईश्वरमर्चितं समर्चामहे ।

– स्रग्धरा –

प्रध्वस्ताशेषघातिप्रकटनिरवधिज्ञानदृगवीर्यसौख्य: ।
कल्याणै: पंचभेदै: प्रविलसति चतुस्त्रिंशता चातिशेषै: ।।
तैरष्टप्रातिहार्यैस्त्रिजगदधिपतिर्यस्तमेनं जिनेन्द्रं ।
प्रोद्यत्पुण्यांकुरौघैरनघमिह यजेऽगण्यपुण्यांकुरार्थम् ।।

ओं ह्रीं नम: परमकल्याणेभ्य: स्वाहा ।(इस मंत्र से अंकुरणत्रों से जिनेन्द्र देव की पूजा करें ।)

– अनुष्टप –

प्रमादाज्ज्ञानदर्पाद्यैर्विहितं विहितं न यत् ।
जिनेन्द्रास्तु प्रसादात्ते सकलं सकलंच तत् ।।

क्षमापनपुर:सरं पंचांगप्रणाम: ।।

–वसंत तिलका –

प्रक्षीणदोषमलविद्धनिजप्रकाशं ।
लोकैकभूषणमहं जिन–दिव्यरत्नम् ।।
मुक्तिश्रियं सपदि संवदनं विधातुं ।
पूज्यं प्रपूज्य हृदये निदधे भवन्तम् ।।

ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा स्वस्थानं गच्छ गच्छ ज: ज: ज: ।

– शार्दूल –

मोहध्वान्तविदारणं विशदविश्वोद् भासिदीप्तिश्रियं ।
सन्मार्ग प्रतिभासकं विबुधसंदोहामृतापादकम् ।।
श्रीपादं जिनचंद्रशांतिशरणं, सद्भक्तिमानेमिते ।
भूयस्तापहरस्य देव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनन् ।।इति।।

अंकुरारोपण विधि

श्रीमज्जिनेन्द्रं जगदेकचंद्रं, चन्द्रार्ककोटी प्रभमिद्ध लोकम् ।
लोकानवन्त प्रणिपत्यपुण्यं, पुण्यांकुराभ्यर्चन मातनोमि ।।

मंडल या मन्दिर के उत्तर दिशा या पूर्व दिशा में एक वेदी बनावें । उस वेदी को चंदोवा आदि लगाकर खूब सजावें । दशदिक्पाल ध्वजा बांधे । वेदी के ऊपर पीले और लाल रंग के अष्ट दल कमल बनावें । कर्णिका में 'ह्रीं' पर एक मिट्टी का मंगल कलश पानी से भरकर रखें । उस कलश पर भी नारियल पल्लव रखें । सूत से बांधे और उसको भी सुशोभित कर देवें । आठ दलों में क्रमश: श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी शान्ति पुष्टि लिखें । कमलदल के बाहिर दशदिक्पाल के मन्त्र लिखें । अष्टमंगल द्रव्य स्थापन करें, चावल से स्वस्तिक बनावें । उस स्वस्तिक पर दश या बारह घट पालिका, शराव, पटली रखें चारों कोणों पर भी चार मंगल कलश रखें । इस वेदी के पश्चिम भाग में एक छोटी वेदी बनाकर उस पर सर्वाण्हयक्ष की मूर्ति स्थापन करें । कल्पवासी, भवनवासी, व्यन्तर व ज्योतिष्क देवों की सामूहिक अथवा पृथक-पृथक अर्घ्यादि चढाकर स्थापना करें। पहले जिनेन्द्र भगवान का महामस्तकाभिषेक करके शान्तिचक्र आराधना करें, होम करे, सर्वाह्नयक्ष की पूजा करें ।

सर्वाह्नयक्ष पूजा

उत्तुंगंशरदभ्रशुभ्रमुचितं सद्विभ्रमं बिभ्रतं ।
यो दिव्याद्रिपमारुरोह शिरसि, श्रीधर्मचक्रं दधौ ।।
हस्ताभ्यामसितद्युतिं करयुगे – नान्येन बद्धांजलिं ।

तं जैनाध्वररक्षणक्षममिमं सर्वाह्वयक्षं यजे ।।

ओं ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण हे सर्वाह्वयक्ष ! एहि एहि संवौषट् ।
ओं ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण हे सर्वाह्वयक्ष ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ओं ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण हे सर्वाह्वयक्ष ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।
ओं ह्रीं सर्वाह्वयक्ष इदमर्घ्यं पाद्य गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

इन्द्रवज्रा – यक्षेश्वरोऽयं जिनमार्गरक्षा – दक्षः सदा भव्यजनैकपक्षः ।
निर्दग्धनिःशेषविपक्षकक्षो भूयात् प्रतीक्षोमख रक्षणाय ।।
ओं ह्रीं सर्वाह्वयक्ष ! यजमान प्रभृतीनांशांतिं कुरू कुरू स्वाहा ।

– वसंत –

श्री शात कुंभमयकुंभमुतान्यकुंभं ।
गर्भीकृतामलपयोमणिशातकुंभम् ।।
शुंभंतमब्दफलपल्लवसूत्रवस्त्रैः ।
संस्थापये स्थिरतरं वर कर्णिकायां ।।

ओं ह्रीं स्वस्तये कलशस्थापनं करोमि स्वाहा ।

– शार्दूल –

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज – प्रोद्गंधिगंधै : सितैः ।
सूक्ष्मत्वायति शालिशालिसदकैर्गंधोद्गमैरूद्गमैः ।।
हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशभैर्दीपैर्विपद् धूपकैः ।
धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः, कुंभं समभ्यर्चये ।।

ओं ऱ्हीं नेत्राय संवौषट् कलशार्चनं करोमि स्वाहा ।

मेरोर्दक्षिणतो महाकुकुभृत पद्माकराम्भोरूह ।
प्रासादस्थितिकाः शचीपतिवधूः श्री ह्रीं धृतीरंबिका ।।
तस्यैवोत्तरतस्तथोत्तरसुरेड् गृह्यांच कीर्ति धियम् ।
लक्ष्मी शांतिकरीं च शांतिमिह सत्पुष्टिं च पुष्टिं यजे ।।

आह्वानादि पुरः सर प्रत्येकपूजा प्रतिज्ञापनाय पत्रेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।
ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमल हस्तेश्रीदेवि! अत्रागच्छ २ संवौषट्।
ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमल हस्तेश्रीदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमल हस्तेश्रीदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।।

ओं श्री देव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृहयतां प्रतिगृहयतां स्वाहा ।।१।।

ओं रक्तवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते न्ही देवि ! अत्र आगच्छ २ संवौषट्
ओं रक्तवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते न्ही देवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ओं रक्तवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते न्ही देवि ! अत्र मम सन्निहिता भव-भव वषट् ।

ओं ह्रीं देव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।२।।

३) ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते धृतिदेवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते धृतिदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते धृतिदेवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ओं धृति देव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।३।।

ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते कीर्ति देवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।
ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते कीर्ति देवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते कीर्ति देवि ! अत्र मम

सन्निहिता भव भव वषट् ।

ओं कीर्ति देव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।४।।

ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते बुद्धि देवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते बुद्धि देवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते बुद्धि देवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ओं बुद्धि देव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।५।।

ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते लक्ष्मी देवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते लक्ष्मी देवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते लक्ष्मी देवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ओं लक्ष्मी देव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।६।।

ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते शांति देवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते शांति देवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते शांति देवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ओं शांति देव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं

स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।७।।

ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते पुष्टि देवि ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते पुष्टि देवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशकमलहस्ते पुष्टि देवि ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

ओं पुष्टि देव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।८।।

सप्तमातर इति व्यपदेशं या वहंति जिनमातृसमेताः ।
श्र्यादयः षडपि ताः सुखपुष्टिं शांति पुष्टि सहिता वितरंतु ।।

(श्री, ऱ्ही, धृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी, और जिनमाता इन सात की 'सप्तमातरः' संज्ञा है ।)

ओं ह्रीं प्रशस्तवर्णाः चतुर्भुजाः पुष्पमुखकलशकमलहस्ताः श्रयाद्यष्ट दिक्कन्यका यजमान प्रभृतीनां सर्वशांति कुरुत कुरुत स्वाहा ।। पूर्णार्घ्यः ।।

अथ दिक्पालक पूजा

– शार्दूल –

श्रीमत् सर्वजनीनजैनसवन – प्रत्यूह विध्वंसनं ।
प्रोद्भूताऽप्रतिमप्रभावविहित – प्रख्यातिपूजांचितान् ।।
स्वस्वातुच्छपरिच्छदान् दशदिशा–भान्याप्रधृष्यामितान् ।
दिक्पालान् जगदेकपालकजिनाधीशाध्वरे व्याह्वये ।।

(आह्वानादिपुरःसर प्रत्येकपूजा प्रतिज्ञापनाय पुष्पाक्षतं प्रक्षिपेत् ।)

ओं ह्रीं कनकवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहनवधूचिह्नसपरिवार हे इंद्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ओं ह्रीं कनकवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहनवधूचिह्नसपरिवार हे इंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ओं ह्रीं कनकवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वयुधवाहनवधूचिह्नसपरिवार हे इंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(स्थापना करके आगे का मंत्र पढकर अर्घ्य चढावे, ऐसे ही आगे स्थापना व अर्घ्य है)

इंद्राय स्वाहा । इंद्रपरिजनाय स्वाहा । इंद्रानुचराय स्वाहा । इंद्र महत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरूणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ओं स्वाहा । भू: स्वाहा । भुव: स्वाहा । स्व: स्वाहा । ओं भूर्भुव: स्व: स्वाहा स्वधा। इंद्राय स्वगणपरिवृताय इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।१।।

ओं ह्रीं क्रों रक्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्नसपरिवार हे अग्ने ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ओं ह्रीं क्रों रक्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्नसपरिवार हे अग्ने ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:।

ओं ह्रीं क्रों रक्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्नसपरिवार हे अग्ने ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अग्नये स्वाहा । अग्निपरिजनाय स्वाहा । अग्निअनुचराय स्वाहा । अग्नि महत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरूणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ओं स्वाहा । भू: स्वाहा । भुव: स्वाहा । स्व: स्वाहा। ओं भूर्भुव: स्व: स्वाहा स्वधा । अग्नेय स्वगणपरिवृताय इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।२।।

ओं ह्रीं क्रों कृष्णवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्नसपरिवार हे यम ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ओं ह्रीं क्रों कृष्णवर्ण सर्वलक्षण संपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्नसपरिवार हे यम ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: ।

ओं ह्रीं क्रों कृष्णवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्नसपरिवार हे यम ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

यमाय स्वाहा । यमपरिजनाय स्वाहा । यमानुचराय स्वाहा । यममहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरूणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ओं स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा। ओं भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । यमाय स्वगणपरिवृताय इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।३।।

ओं ह्रीं क्रों श्यामवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्नसपरिवार हे नैऋत्य! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ओं ह्रीं क्रों श्यामवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्नसपरिवार हे नैऋत्य! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ओं ह्रीं क्रों श्यामवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्नसपरिवार हे नैऋत्य! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

नैऋत्याय स्वाहा । नैऋत्य परिजनाय स्वाहा । नैऋत्यानुचराय स्वाहा। नैऋत्यमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरूणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ओं स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा । ओं भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । नैऋत्याय स्वगणपरिवृताय इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।४।।

ओं ह्रीं क्रों धवलवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्नसपरिवार हे वरूण! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ओं ह्रीं क्रों धवलवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुध वाहनवधू चिह्नसपरिवार हे वरूण ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ओं ह्रीं क्रों धवलवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्नसपरिवार हे वरूण! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

वरूणाय स्वाहा । वरूण परिजनाय स्वाहा । वरूणानुचराय स्वाहा । वरूणमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरूणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ओं स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा । ओं भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । वरूणाय इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।५।।

ओं ह्रीं क्रों कृष्णवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्नसपरिवार हे पवन! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ओं ह्रीं क्रों कृष्णवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहन वधू चिह्नसपरिवार हे पवन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ओं ह्रीं क्रों कृष्णवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्नसपरिवार हे पवन! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

पवनाय स्वाहा । पवन परिजनाय स्वाहा । पवनानुचराय स्वाहा । पवनमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरूणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ओं स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा । ओं भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । पवनाय इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।६।।

ओं ह्रीं क्रों पीतवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिह्नसपरिवार हे कुबेर ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ओं ह्रीं क्रों पीतवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्नसपरिवार हे कुबेर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ओं ह्रीं क्रों पीतवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्न सपरिवार हे कुबेर ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

कुबेराय स्वाहा । कुबेर परिजनाय स्वाहा । कुबेरानुचराय स्वाहा । कुबेरमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरूणाय

स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ओं स्वाहा । भू: स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ओं भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । कुबेराय स्वगणपरिवृताय इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।७।।

ओं ह्रीं क्रों धवलवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्न सपरिवार हे ईशान! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ओं ह्रीं क्रों धवलवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुध वाहनवधू चिह्न सपरिवार हे ईशान! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ओं ह्रीं क्रों धवलवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्न सपरिवार हे ईशान! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ईशानाय स्वाहा । ईशान परिजनाय स्वाहा । ईशानानुचराय स्वाहा । ईशानमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरूणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ओं स्वाहा । भू: स्वाहा । भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा । ओं भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । ईशानाय स्वगणपरिवृताय इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।८।।

ओं ह्रीं क्रों धवलवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्नसपरिवार हे धरणीन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ओं ह्रीं क्रों धवलवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुध –वाहनवधू चिह्नसपरिवार हे धरणीन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ओं ह्रीं क्रों धवलवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्नसपरिवार हे धरणीन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

धरणीन्द्राय स्वाहा । धरणीन्द्र परिजनाय स्वाहा । धरणींद्रानुचराय स्वाहा । धरणींद्रमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा। वरूणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ओं स्वाहा । भू: स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ओं भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । धरणींद्राय

स्वगणपरिवृताय इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरू दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।९।।

ओं ह्रीं क्रों धवलवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिह्न सपरिवार हे चंद्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

ओं ह्रीं क्रों धवलवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहन वधू चिह्नसपरिवार हे चंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ओं ह्रीं क्रों धवलवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्न सपरिवार हे चंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

चंद्राय स्वाहा । चंद्रपरिजनाय स्वाहा । चंद्रानुचराय स्वाहा । चंद्रमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरूणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ओं स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा। ओं भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा । चंद्रायस्वगणपरिवृताय इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरू दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।१०।।

– मालिनी –

शतमखशिखिकाला यातुधानप्रचेताः ।
पवन धनदनागाकल्पनागेन्द्र चन्द्राः ।।
मखमुखविहितार्घाः येऽप्रधृष्यप्रभावाः ।
प्रकृतयजनविघ्नान घ्नन्त ते मंत्रनिघ्नाः ।। पूर्णार्घ्यः ।।

(दश दिक्पालकेभ्यः पूर्णार्घ्यं समर्पयामि ।)

अष्टमंगलद्रव्य की स्थापना

न्यसामि भेरीरवशंखघंटा – प्रदीपचंद्रार्करथांगकाब्दान् ।
मंत्रात्मकान् पूर्वमुखासु दिक्षु क्रमादिहाष्टावपि मंगलानि ।।१।।

(१) ओं भेरीश्रियै स्वाहा । (२) ओं शंखश्रियै स्वाहा । (३) ओं घंटाश्रियै स्वाहा। (४) ओं प्रदीपश्रियै स्वाहा । (५) ओं चंद्रश्रियै स्वाहा । (६) ओं आदित्यश्रियै

स्वाहा। (७) ओं चक्रश्रियै स्वाहा। (८) ओं दर्पणश्रियै स्वाहा।

।। लेखनमंत्राः ।।

(यहां भेरी, शंख, घंटा, प्रदीप, चंद्रमा, सूर्य, चक्र और दर्पण ये आठ मंगल द्रव्य माने हैं – इन्हें अंकुरारोपण की आठ दिशाओं में लिखें।)

मंगल द्रव्यों की पूजा

वार्दर्भ गंधैः सुमनोक्षतौधैः धूप प्रदीपै रमृतोपमात्रैः।
अभ्यर्चये मंगलमष्टभेदं भूम्यर्चनाया विधिनार्चनीयम् ।।२।।

ओं नीरजसे नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीलगंधाय नमः गंधं

अक्षताय नमः अक्षतान्

विमलाय नमः पुष्पं

दर्पमथनाय नमः नैवेद्यं

ज्ञानोद्योताय नमः दीपं

श्रुत धूपाय नमः धूपं

परमसिद्धाय नमः फलं

अथ घटीनामभ्यन्तरेषु (छोटे घडों के अंदर पुष्पादि से पूजा)

घटीवत् प्रथितघटीनामभ्यंतरेषु चमखैरोचनादि सर्व भवनेन्द्राणां आह्वानादि पुरःसरं समुचित सपर्याक्रमं यथा क्रममुपक्रमामहे।

(आगे के मंत्रों से घटी के भीतर दशविध भवनवासी देवों की स्थापना करके पूजा करें।)

द्वासप्ततिर्यानि भवन्ति लक्षाः कोट्यश्च सप्तातिमहान्ति तानि।
प्रपालयन्तो भवनानि सर्वेऽप्यायात यूयं भवनामरेन्द्राः ।।३।।

आह्वानादि पुरःसर प्रत्येक पूजा प्रतिज्ञापनाय घटीषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

ओं ह्रीं असुरकुमारेन्द्र!अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ओं ह्रीं असुरकुमारेन्द्राय इदं अर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं

दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा ।।१।।

(एवं सर्वत्र योज्यम्)

ओं ह्रीं नागकुमारेन्द्र ! अत्र------

ओं ह्रीं नागकुमारेन्द्राय इदं --स्वाहा ।।२।।

ओं ह्रीं विद्युतकुमारेन्द्र ! अत्र------

ओं ह्रीं विद्युतकुमारेन्द्राय इदं --स्वाहा ।।७।।

ओं ह्रीं सुपर्ण कुमारेन्द्र ! अत्र ------

ओं ह्रीं सुपर्णकुमारेन्द्राय इदं --स्वाहा ।।३।।

ओं ह्रीं अग्निकुमारेन्द्र ! अत्र ------

ओं ह्रीं अग्निकुमारेन्द्राय इदं --स्वाहा ।।९।।

ओं ह्रीं वातकुमारेन्द्र ! अत्र ------

ओं ह्रीं वातकुमारेन्द्राय इदं --स्वाहा ।।१०।।

ओं ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्र ! अत्र ------

ओं ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्राय इदं -- स्वाहा ।।६।।

ओं ह्रीं उदधिकुमारेन्द्र ! अत्र

ओं ह्रीं उदधिकुमारेन्द्राय इदं --स्वाहा ।।५।।

ओं ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्र ! अत्र

ओं ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्राय इदं -- स्वाहा ।।४।।

ओं ह्रीं दिक्कुमारेन्द्र ! अत्र

ओं ह्रीं दिक्कुमारेन्द्राय इदं --स्वाहा ।।८।।

असुरफणिसुपर्ण– द्वीपशेषाधिपाये ।
परमुदधित्रिपल्यार्धार्धहीनायुषः स्युः ।।
प्रवरमहिषमुख्यैः सप्तभेदैरनीकैः ।
कृतपरिवृतयोऽप्राक् तेर्घिताः सन्तु शान्त्यै ।।

ओं ह्लीं असुरेन्द्रादिदशविधभवनेन्द्रेभ्यः इदं अर्घ्यं ----स्वाहा ।।पूर्णार्घ्यं.
ओं ह्लीं असुरेन्द्रादिदशविधभवनेन्द्रा यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरूत कुरूत स्वाहा।

- शरावाणामभ्यन्तरेषु -

संख्या व्यतीताश्रयवर्तमाना भौमामराणं । प्रभवो भवंतः ।

आयांतु तिष्ठंतु ममात्र साक्षाद् – भवंतु गृह्वन्तु च यज्ञभागम् ।।

आह्वानादि पुरःसर प्रत्येक प्रतिज्ञापनायशरावाणामभ्यंतरेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।
ओं ह्लीं किन्नरेन्द्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ओं ह्लीं किन्नरेन्द्राय इदं अर्घ्यं ---स्वाहा ।।१।।

ओं ह्लीं किंपुरूषेन्द्र ! अत्र....

ओं ह्लीं किंपुरूषेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।२।।

ओं ह्लीं महोरगेन्द्र ! अत्र

ओं ह्लीं महोरगेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।३।।

ओं ह्लीं गंधर्वेन्द्र ! अत्र

ओं ह्लीं गंधर्वेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।४।।

ओं ह्लीं यक्षेन्द्र ! अत्र

ओं ह्लीं यक्षेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।५।।

ओं ह्लीं राक्षसेन्द्र ! अत्र

ओं ह्लीं राक्षसेन्द्राय इदं --- स्वाहा ।।६।।

ओं ह्लीं भूतेन्द्र ! अत्र

ओं ह्लीं भूतेन्द्राय इदं --- स्वाहा ।।७।।

ओं ह्लीं पिशाचेन्द्र ! अत्र

ओं ह्लीं पिशाचेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।८।।

पूर्णार्घ्य

– शालिनी –

त्रायस्त्रिंशैर्लोक पालैर्व्य पेतैर्य सेव्यंते सप्त सामानिकाद्यैः

तेऽमी युक्ता द्विद्विदेवीसहस्रैः सर्वे शान्त्यै संतु भौमागरेन्द्रा ।

ओं ह्रीं किन्नराधष्टविधव्यन्तरेन्द्रेभ्यः इदं ---------स्वाहा ।

ओं हीं किन्नराधष्टविध व्यन्तरेन्द्रा यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरूत कुरूत स्वाहा।

- अथपटलिकानामभ्यंतरेषु -

कायप्रवीचार सुखानुरक्तान् पीतांतलेश्यांस्त्रिविधानवंतौ ।

ज्योतिष्क देवानपि चंद्रसूर्या–वायातमात्मीयपरिच्छदाभ्याम् ।।

आह्वानादिपुरःसर प्रत्येकपूजाप्रतिज्ञापनाय पटलिकासु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।

ओं ह्रीं सूर्येन्द्र ! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् ।

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ओं ह्रीं सूर्येन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ओं ह्रीं सूर्येन्द्राय इदं अर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं बलिं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।१।।

ओं ह्रीं चन्द्रेन्द्र ! अत्र

ओं ह्रीं चन्द्रेन्द्राय इदं ---अर्घ्यं स्वाहा ।।२।।

–: पूर्णार्घ्य :-

यो योजनान्यष्टशतीं व्यतीत्य भूमेश्चरन व्योमनि भानुमाली ।

यो योजनाशीतिमतीत्य तस्माच्चंद्रोर्धितो तौ भवतां प्रसन्नौ ।

ओं ह्रीं सूर्याचन्द्रमसौ इदं अर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं बलिं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां शांतिं कुरुता कुरुता स्वाहा ।। पूर्णार्घ्यः ।।

अथ पालिकानामभ्यंतरेषु

(वैमानिक देवों की अर्चा)

द्वौ सागरौ सप्तदश द्विसप्त– स्थितिः क्रमाद् द्विद्वयधिकाच यावत् ।
द्वाविंशतिर्येषु सुराधिपास्ते सर्वे समायांतु भजंतु पूजाम् ।।

(आहवानादिपुरःसर प्रत्येक पूजा प्रतिज्ञापनाय पालिकासु पुष्पाक्षतं क्षिपेत् ।)

ओं ह्रीं सौधर्मेन्द्र ! अत्र-----
ओं ह्रीं सौधर्मेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।१।।
ओं ह्रीं ईशानेन्द्र ! अत्र-----
ओं ह्रीं ईशानेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।२।।
ओं ह्रीं सानत्कुमारेन्द्र ! अत्र -----
ओं ह्रीं सानत्कुमारेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।३।।
ओं ह्रीं माहेन्द्रेंद्र ! अत्र -----
ओं ह्रीं माहेन्द्रेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।४।।
ओं ह्रीं ब्रह्मेन्द्र ! अत्र -----
ओं ह्रीं ब्रह्मेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।५।।
ओं ह्रीं लान्तवेन्द्र ! अत्र -----
ओं ह्रीं लान्तवेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।६।।
ओं ह्रीं शुक्रेन्द्र ! अत्र -----
ओं ह्रीं शुकेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।७।।
ओं ह्रीं शतारेन्द्र ! अत्र -----
ओं ह्रीं शतारेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।८।।
ओं ह्रीं आनतेन्द्र ! अत्र -----
ओं ह्रीं आनतेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।९।।
ओं ह्रीं प्राणतेन्द्र ! अत्र -----
ओं ह्रीं प्राणतेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।१०।।

ओं ह्रीं आरणेन्द्र ! अत्र -----

ओं ह्रीं आरणेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।११।।

ओं ह्रीं अच्युतेन्द्र ! अत्र -----

ओं ऱ्हीं अच्युतेन्द्राय इदं ---स्वाहा ।।१२।।

– पूर्णार्घ्य –

हस्तान् सप्त षडेव पंच चतुर–स्त्रीनर्धयुक्तानथ ।
त्रीनुत्सेधमुशंति जैनमुनयो, येषु द्वयोश्च द्वयोः ।।
तेऽमी सारसुखानुभावकलिता नन्दन्ति चेदंतिच ।
स्वर्लक्ष्मीपतयः सदा विदधतां, शांतिं सतामर्चिताः ।।

ओं ह्रीं सौधर्मादि द्वादश कल्पेन्द्राः इदं अर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं बलिं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां यजमान प्रभृतीनां शांतिं कुरुत कुरुत स्वाहा ।। पूर्णार्घ्यः।।

* पंचकल्याणक व इन्द्रध्वजादि विधानोंमें होनेवाला झंडारोहण विधि *

अंकुरारोपण होने के बाद झंडारोहण विधि करे । झंडारोहण विधि पंचकल्याणक में किया जाता है या बडे विधानोंमें । झंडारोहण के लिए पांडाल के सामने तीन कटनी वाली वेदी बनावें । उसमें विधिपूर्वक झंडारोहण करे । प्रथम बृहत शांतिचक्र विधान करके, उस शांतिचक्र विधान में प्रथम जयादि देवियों की, फिर सोलह विद्या देवियों की चौबीस यक्षों की बत्तीस इंद्रों की दस दिकपालों की चौबीस यक्षियों की नवग्रहों की और अनावृत यक्ष की पूजा करें । नवग्रह होम करे जिनेन्द्र भगवान का पंचामृताभिषेक करें तथा जिनेन्द्र पूजा करें । झंडे का चित्र चित्र में देख लेवे ।

झंडा रोहण विधि

श्रीमज्जिनस्य जगदीश्वरता ध्वजस्य ।
मीन ध्वजाद्रिरिपुलाल जय ध्वजस्य ।।
तन्न्यासदर्शन जनागमन ध्वजस्य ।

चारोपणं विधिवदाविदधेध्वजस्य ।।

ओं ह्रीं श्रीं भू: स्वाहा (विधियज्ञ प्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिः ।)

श्रीमद् विगानाभिमुखध्वजस्थं, यक्षं प्रसूनांजलिभिः समंत्रम् ।

आहूय संस्थाप्य च संनिधाप्य, प्रसादये दिक्पतिदिक्कुमारी ।।

ओं ह्रीं सर्वाह्न यक्षसहिताः सर्वध्वजदेवताः ! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।

ओं ह्रीं ....अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ओं ह्रीं ....अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

(''अभिनव'' आदि श्लोक बोलकर ८ कलश स्थापित करें । इन कलशों के पास मंगल द्रव्य आदि स्थापित करें पुनः आगे लिखित 'ओं ऱ्हां' आदि मंत्र पढते हुए उन कलशों में जल डाले । 'ओं ह्रीं स्वस्तये' मंत्र बोलकर कलशों को स्थापित करने हेतु उन पर पुष्पांजलि छोडें । अनंतर 'स्वच्छै' इ. श्लोक बोलकर कलशों को अर्घ्यं चढावे ।

– मालिनी –

अभिनवनवकुंभान्पुण्यतीर्थाम्बुपूर्णान् ।
विधिवदिह निवेश्याभ्यर्च्य यक्षध्वजाग्रे ।।
कलशनिकटदेशे सर्वतः स्थापयामि ।
प्रकृतयजनयोग्यं मंगलद्रव्यजालम् ।।

ओं ह्रां ह्रीं ऱ्हूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत् पद्म महापदमतिगिंछ केशरि महापुंडरीक पुंडरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीतासीतोदा नारीनरकांता सुवर्णकूलारूप्यकूलारक्तारक्तोदाक्षीरांभोधिजलं सुवर्ण घटं प्रक्षिप्तसर्वगंध पुष्पाढ्यं आमोदकं पवित्रं कुरु कुरु झौं झौं वं वं मं हं सं तं पं स्वाहा । (जलाभिमंत्रण कलशों में जल डालें) (चावलों का स्वस्तिक बना कर कलश रखें । ओं ह्रीं स्वस्तये कलशस्थापनं करोमि स्वाहा। (कलशों को स्थापित करें)

– शार्दूल –

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज – प्रोद्गंधिगंधैः सितैः ।

सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै– गंधोद्गमैरूद्गमैः ।।

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै–र्दीपैर्विपद्धूपकैः ।

धूपैरिष्टफलावठैर्बहुफलैः कुंभान्समभ्यर्चये ।।

ओं ह्रीं नेत्राय संवौषट् कलशार्चनं करोमि स्वाहा ।

अथ गंधाक्षत पुष्पफलादि मंगलोपकरणस्थापनम् ।

(जो नव कलश जलसे भरे है, उनसे दर्पण में प्रतिबिम्बित सर्वाण्हयक्ष का अभिषेक करे या मूर्ति का करे)

तत्कुंभवार्भिर्वरमंत्रपूतैः सत्संमुखीनंप्रतिबिंबितानाम् ।

यक्षादिसर्व ध्वज देवतानां संप्रोक्षणं सांप्रतमातनोमि ।।

ओं ह्रीं सर्वाह्णयक्षसहित सर्वध्वजदेवते इदं स्नानं गृहाण गृहाण
ओं सर्व राष्ट्र क्षुद्रोपद्रवं हर हर ओं स्वस्ति भद्रं भवतु स्वाहा (संप्रोक्षणं)

– मालिनी –

अभिमुखनिहित श्रीदर्पणेयक्षनायं ।

प्रतिफलिततनुं श्रीचंदनानुलिप्य ।।

ध्वजविलिखितकाष्ठानाथदिक्कन्यकानां ।

मुकुरमुपगतानांतेन तन्वेऽनुलेपम् ।।

ओं ह्रीं श्रीं अर्हं नमः अरिहंताणं सर्वाह्णयक्षाय धर्मचक्रविराजिताय चतुर्भुजाय सुवर्णवर्णाय गजारूढाय सर्वजननयनाह्लादकाय सुगंधानुलेपनं करोमि स्वाहा।

मुखवस्त्रदान विधि

अनुष्टप – कांडादिमंडितादभ्र – श्रीकांडपटमुज्वलं ।
यक्षस्य संप्रयच्छामि सर्वधान्यादिसंभृतम् ।।

ओं ह्रीं श्रीं अर्हम् नमः सर्वाह्नयक्षस्य मुखवस्त्रमहं प्रक्षिपामि स्वाहा
(मुखवस्त्रप्रदानम् । सामने पर्दा डाले)

- नेत्रोन्मीलन विधि -

('ध्वजविरचित' आदि श्लोक पढकर व मंत्र पढते हुए नेत्रोन्मीलन विधि करें । एक सुवर्ण कटोरी में दूध शक्कर और कपूर मिलाकर रखें, सोने की सलाई से उसे लेकर सर्वाह्नयक्ष के नेत्रोंमें लगावें । यही नेत्रोन्मीलन विधि है ।)

– मालिनी –

ध्वजविरचितमूर्तेयक्षनाथस्य सद्यो ।
हिमसितयुतदुग्धैः स्वर्णपात्रोपयुक्तैः ।।
कनकमयशलाकाग्राह्यतैर्वल्गु लग्ने ।
विधियुतमिह नेत्रोन्मीलनं संविदध्मः ।।

ओं ह्रीं श्रीं अर्हम् नमः णमो अरिहंताणं सर्वाह्नयक्षायश्यामवर्णाय यथोक्त लक्षणलक्षिताय सर्वजननयनाह्लादकराय नयनोन्मीलनं करोमि स्वाहा ।

सर्वाह्नयक्ष का अर्घ

– शार्दूल –

उत्तुंगं शरदभ्रशुभ्रमुचितं सद्विभ्रमं बिभ्रतं ।
यो दिव्यद्विपमारूरोह शिरसि श्रीधर्मचक्रं दधौ ।।
हस्ताभ्यामसितद्युतिं करयुगे–नान्येन बद्धांजलिं ।
तं जैनाध्वररक्षणक्षममिमं सर्वाह्नयक्षं यजे ।।

ओं ह्रीं सर्वाह्नयक्षाय इदं अर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरू दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

इंद्रादिदिक्पाल का अर्घ

श्रीमत् सर्वजनीन जैनसवनप्रत्यूहविध्वंसन ।
प्रोद्भूताऽप्रतिमप्रभावविहित – प्रख्यातिपूजांचितान् ।।
स्वस्वातुच्छपरिच्छदान दशदिशामान्याप्रधृष्यामितान् ।
दिक्पालाञ्जगदेकपालक जिनाधीशाध्वरे व्याह्वये ।।

ओं ह्रीं इंद्रादिदशदिक्पालकेभ्य: इदं अर्घ्यं.... स्वाहा ।

- अष्टदिक्कन्यका अर्घ -

मेरोर्दक्षिणतो महाकुलकुभृत् पद्माकरांभोरूह ।
प्रासादस्थितिका: शचीपति वधू: श्री ऱ्ही धृतीरंबिका: ।।
तस्यैवोत्तरतस्तथोत्तर सुरेड्गृह्यांच कीर्तिधियम् ।
लक्ष्मीं शांतिकरीच शांतिमिह सत्पुष्टिं च पुष्टिं यजे ।।

ओं ह्रीं अष्ट दिक्कन्यकाभ्य: इदं अर्घ्यं स्वाहा । (तत: पुरिमहोत्सवेन विहारणम् ।) पूजा विधान करके ध्वज और सवाह्नयक्ष की मूर्ति को हाथी पर विराजमान करके महा उत्सव के साथ जुलुस शहर मे घुमाकर ध्वज स्थापना के स्थान पर लाकर ध्वजदंड का पंचमृताभिषेक आगे लिखित विधि से करना है ।)

- ध्वजदंड शुद्धि एवं दर्भमालावेष्टन -

समंतत: श्रीध्वजदंडमग्र्यं, प्रक्षाल्य सर्वौषधिमिश्रवार्भि: ।
अश्वत्थकंकेलिदलौघभाजा दर्भस्त्रजेनं परिवेष्टयामि ।।

ओं ह्रीं श्रीं क्ष्वीं नमोऽर्हते श्रीमत्पवित्रजलेन ध्वजदंडशुद्धिं करोमि स्वाहा ।
संप्रोक्षणं ।। (ध्वजदंडपर जल डाले, धोवें, शुद्धि करें ।)
ओं ह्रीं दर्पमभयनाय नम: स्वाहा (दर्भमालावेष्टनम् ।। डाभ की माला पहनावें)

दर्भतुरा स्थापनविधि

(ध्वजदंड के ऊपर जो तीन कोकिला है उनके अग्रभाग में दर्भ की तुरा बांधे।)

अनुष्टुप - ध्वजदंडाग्रभागस्थ, कोकिलात्रयवर्तिन : ।
वेणुदंडस्य तस्याग्रे बध्नामि कुशकूर्चिकां ।।

ओं ह्रीं दर्पमथनाय नम: । (वेणुयष्ट्यग्रे कुशकूर्चस्थापनम् ।।
(तुरा-लंबी कूंची बांधे)

* ध्वजदंड का पंचामृत अभिषेक *

(आगे का श्लोक पढकर अनादि सिद्धमंत्र द्वारा ध्वजदंड का पंचामृताभिषेक करें। पुन: 'नीरजसे नम:' आदि ये अष्ट द्रव्य चढा कर स्वच्छैस्तीर्थ --से अर्घ्य चढावें)

ज्ञानशक्तिमयीं मत्वा ध्वजदंडाग्रचूलिकां ।

अनादिसिद्धमंत्रेण पंचभिः स्थापयेऽमृतैः ।।

ओं णमो अरिहंताणं । ओं णमो सिद्धाणं । ओं णमो आइरियाणं । ओं णमो उवज्झायाणं । ओं णमो लोए सव्व साहूणं । चत्तारिमंगलं–अरिहंतमंगलं सिद्ध मंगलं । साहू मंगलं । केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा–अरिहंत लोगुत्तमा । सिद्ध लोगुत्तमा । साहू लोगुत्तमा । केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि–अरिहंत सरणं पव्वज्जामि । सिद्ध सरणं पव्वज्जामि । साहू सरणं पव्वज्जामि । केवलि पण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि । ओं ह्रौं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा । (अनादि सिद्धमंत्रः) अवेन ध्वजदंडस्य पंचामृस्नपनम् (इस मंत्र से पंचामृताभिषेक) ओं नीरजसे नमः स्वाहा । शीलगंधाय नमः गंधं । अक्षताय नमः अक्षतान् । विमलाय नमः पुष्पं । दर्पमथनाय नमः नैवेद्यं । ज्ञानोद्योताय नमः दीपं । श्रुतधूपाय नमः धूपं । परमसिद्धाय नमः फलं ।

– शार्दूल –

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज – प्रोद्गांधिगंधैः सितैः ।

सूक्ष्मत्वायतिशालि शालि सदकै – गंधोद्गमैरूदगमैः ।।

हव्यैर्न व्यरसैः प्रदीपितशुभै :– र्दीपैर्विपद्धूपकैः ।

धूपैरिष्ट फलावहैर्बहुफलै : दण्डं ध्वजस्थार्चये ।।

ओं ह्रीं ध्वजदंडाय संवौषट् ध्वजदंडार्चनं करोमि स्वाहा । (अर्घ्य चढावे)

* ध्वजदंड रोपने के गर्त भूमि का अर्चन *

(आगे का श्लोक बोलकर जहां ध्वजदंड स्थिर करना है, उस गड्ढे में दूध, दही और धान्य स्थापित करके अष्ट द्रव्य से पूजा करके हिरण्य – सुवर्णयुक्त खीर वहां रखें पुनः ध्वजदंड वहां स्थापित करें।)

विन्यस्य दूर्वादधिमिश्रधान्यं भूम्यर्चनासंविधिना समर्च्य ।

हिरण्ययुक्तं परमान्नमेतन् न्यसामि शस्ते ध्वजदंडगर्ते ।।

(दूर्वादधिमिश्रधान्यस्थापनम्)

ओं नीरजसे नमः जलं । शीलगंधाय नमः गंधं । अक्षताय नमः

अक्षतान् । विमलाय नमः पुष्पं । परमसिद्धाय नमः चरू। ज्ञानोद्योतनाय नमः दीपं। श्रुतधूपाय नमः धूपं । अभीष्टफलदाय नमः फलं ।

(इति गर्तभूम्यर्चनम्) सुवर्ण सहित खीर की स्थापना करे – गड्ढे में डाल देवे । अनंतर ध्वजदंड स्थापित करे और दिकपाल आदि स्थापन,लघुध्वजदंड स्थापन)

अधिवासयेऽधिकर्द्धिं सार्वं सर्वाह्णयक्षमिमम् ।

अष्टोत्तरशतवारं संजप्यानादिसिद्ध मंत्रेण ।

(णमोकार मंत्र का १०८ बार जाप्य)

* सर्वाह्णयक्ष का पंचामृताभिषेक *

यदि सर्वाह्णयक्षका कपडे आदि पर चित्र है तो उसे दर्पण में प्रतिबिंबित कर दर्पण का अभिषेक करे । यदि मूर्ति व यंत्र है तो उसी का अभिषेक करें ।

वसंत –**श्रीमज्जिताघजिनबिंबहटत्तिरीटं,सर्वज्ञयज्ञविधिरक्षणदक्षयक्षम्।**

पंचामृतैरमृतभव्यसुखार्थिभव्यमूर्धा भिषिक्त मभिषिक्तमिमं तनोमि

(अनादिसिद्धमंत्रेण पंचामृतस्नपनम् । (चत्तारि मंगल ....बोलकर)

– शार्दूल –

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज– प्रोद्गंधिगंधैः सितैः ।

सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै – गंधोद्गमैरूद्गमैः ।।

हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै र्दीपैविपद्धूपकै : ।

धूपैरिष्ट फलावहैर्बहुफलैः यक्षं समभ्यर्चये ।।

ओं ह्रीं सर्वाह्णयक्ष इदं जलादिक अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वस्ति भद्रं भवतु स्वाहा।

(अथ यक्षाग्रे सर्वलोकशान्त्यर्थमिष्ट प्रार्थनामालामंत्र घोषणम्)

– शार्दूल –

तीर्थेशानवदेवता बहुविधाः सर्वे जयाद्याः सुराः ।

योगीन्द्रा महिताः त्रिषष्टिपुरुषा –स्तत्त्वप्रबोधादयः ।।

राज्ञोऽमात्यवरादिसर्वतनुभृद्वृन्दस्य राष्ट्रादिक –

स्यात्र्यादीन् परिहृत्य नित्यपरमानंदं विदध्युर्भृशं ।।

सब्रह्मवृद्धिर्भूयात् सद्धर्मवृद्धिर्भूयात् ।।

(यजमान को आशीर्वाद रूप में विशेष पढना चाहे तो 'प्रतिष्ठा तिलक' पृ. १९४ पर ॐ जय...)

इह सकलचैत्यालया अकृत्रिमचैत्यालया इव स्वर्णमया रत्नमया ज्योतिर्मया भूयासुरश्रांतम् ।।४८।।

नित्योत्सव मासोत्सव पक्षोत्सव वर्षोत्सव प्रमुखोत्सवानां समृद्धयोऽर्हतां मंदिरेषु भूयासुरश्रांतम् ।।४९।।

भगवज्जिनेश्वर प्रतिमाप्रतिष्ठामहोत्सवप्रारंभेविधीयमानध्वजारोहण मुहूर्तः सुमुहूर्तो भूयात् ।।५०।।

स जयतु जिनधर्मो यावदाचंद्रतारम् ।
व्रतनियमतपोभिर्वर्द्धतां साधुसंघः ।।
अहरहरभिवृद्धिं यांतु चैत्यालयास्ते ।
तदधिकृतजनानां क्षेममारोग्यमस्तु ।।

।। इत्याशीर्वाद : ।।

* ध्वजारोहण मंत्र *

आगे का श्लोक बोलकर व मंत्र बोलकर बाजे बजाते हुए शुभ मुहूर्त में ध्वजा रोहण करे । यहाँ ध्वजदंड में रत्नत्रय और ध्वज में केवल ज्ञान का संकल्प है। सभी लोग णमोकार मंत्र का उच्चारण करते रहें ।

– वसंत तिलका –

रत्नत्रयात्मकतयाभिमतऽत्र दंडे ।
लोकत्रयप्रकृतकेवलबोधरूपम् ।।
संकल्प्य पूजितमिदं ध्वजमर्च्य लग्ने ।
स्वारोपयामि सति मंगलवाद्यघोषे ।।

ओं णमो अरिहंताणं स्वस्ति भद्रं भवतु । सर्वलोके शांतिर्भवतु स्वाहा ।

सर्वाह्ण यक्ष को अर्घ –

– शार्दूल –

यज्ञैनेन्द्रमहामहस्य सुतरा–माद्यं विधेयं मतं ।

यज्जैनोत्सवसंदिदृक्षुजनसंघानक्षरावाहनम् ।।

यल्लोकाखिलदुःखहारिसुखसंतानैकसंपादकम् ।

तच्चारोप्य महाध्वजं विधिकृते–नार्घ्येण संभावये ।।

ओं ह्रीं सर्वाह्णयक्ष इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वस्ति भद्रं च भवतु स्वाहा ।

(इति ध्वजारोहण विधानम्)

* धामसंप्रोक्षणं *

(नूतन जिनमंदिर शुद्धि विधान)

श्रीविमानस्याष्टदिक्षु प्रत्येकं नवकलशान् सर्वौषधिमिश्रतीर्थजलपरिपूर्णान् विधिनासंस्थाप्य समंत्रं श्रीजिनालयं तैरधिवासित कलशैरभिषिच्य पुण्याहमंत्रेण कुशोद्धृत जलेन चैत्यालयमन्तर्बहिश्च परिषिच्य दर्भमालयाभिवेष्ट्या भ्यर्च्य तदग्रे स्थित्वाशिषं पठित्वा जिनधामसंप्रोक्षणमेवं विधातुमिमे वयमुत्सहामहे । (जिनमंदिर के आठों ही दिशाओंमें सर्वौषधि मिश्रित कलशों में जल भरकर प्रत्येक दिशामें नौ–नौ कलश स्थापन करें । मंत्र सहित श्री जिनालय का उन कलशों से अभिषेक करें, पुण्याहवाचनमंत्र बोलकर दर्भयुक्तजलसे जिनमंदिर का अंदर बाहर से सिंचन करे । नवीन जिनमंदिर को दर्भमाला व पंचरंगा धागा (कलावा / मोली) से वेष्टित करें, फिर जिनमंदिर की पूजा करे, जिनमंदिरके आगे खडे होकर आशीर्वादात्मक श्लोक पढकर शांति के लिए मंदिर के चारों दिशाओं में लघु होम विधान करके मंदिर प्रतिष्ठा उत्साह से समापन करे ।

स्वर्मुक्त्योरधिरोहिणीपदमितो, योऽगण्यपुण्यावहः ।

पापापायहरः सतांच शरणं, लोकोत्तमो मंगलम् ।।

पूज्यो नित्यमहादिसाधनतया, धर्मस्यमूलं हितम् ।

रम्यं जैनविमानमेनमधुना तत्कल्पतः शोधये ।।

(पुष्पांजलिः)

ततः क्षेत्रपालबल्यादि भूम्यर्चनांतां भूमिशुद्धिं विदध्यात् ।

भूशोधनादिं विधिमाविधाय पूर्वादि दिक्षु प्रतिदिग् नवैव ।

कुंभान् विशुद्धाम्बुभृत: प्रसिद्धान् संस्थाप्य सर्वान् परिपूजयाम:

ओं ह्रीं स्वस्तये कलशस्थापनं करोमि स्वाहा ।

श्रीखंड कर्पूर वरादिगंध – द्रव्यप्रसूनोत्तमरिष्ट रत्नम् ।
क्षिपामि मध्यस्थमहाघटेऽस्मिन् गलस्थवस्त्रादि विराजमाने ।।

ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्ममहापद्म तिगिंछ केसरि महापुंडरीक पुंडरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकांता सीता सीतोदानारीनरकान्ता सुवर्णकूलारूप्यकूलारक्तारक्तोदा क्षीरांभोनिधिजलं स्वर्णघटप्रक्षिप्तं सर्वगंधपुष्पाढ्यं आमोदकं पवित्र कुरू कुरू झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं असिआउसा नम: स्वाहा ।

अनेन मध्यमहाकुंभे रैरत्नादि निक्षेपणं ।।

– शार्दूल –

स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज – प्रोद्गंधिगंधै: सितै: ।
सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै–र्गंधोद्गमैरूद्गमै: ।।
हव्यैर्नव्यरसै: प्रदीपितशुभै – र्दीपैर्विपद् धूपकै: ।
धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलै: कुंभान् समभ्यर्चये ।।
ओं ह्रीं नेत्राय संवौषट् कलशार्चनम् ।

- जिनालय पूजा -

स्वर्मुक्त्योरधिरोहिणीपदमितो, योगण्यपुण्यावह: ।
पापापायहर: सतश्चशरणं, लोकोत्तमो मंगलम् ।।
पूज्यो नित्यमहादिसाधनतया धर्मस्य मूलं हितम् ।
त्रैलोक्यस्थजिनालयं तमखिलं, भक्त्या समाह्वानये ।।

ओं ह्रीं सर्वजिनालया ! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट् ।
ओं ह्रीं सर्वजिनालया ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: ।
ओं ह्रीं सर्वजिनालया ! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

उद्धृत्य कुंभान् परया विभूत्या, तदीयवार्भिर्बहिरंतरश्च ।

मंत्रातिपूतैरभिषेचयामि, श्रीजैनगेहं विभवैकगेहम् ।।

ओं ह्रीं सर्वजिनालया जलाद्यभिषेकं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमो जिनालयेभ्य: स्वाहा ।

इत्यनेन मंत्रेण जिनालयं तैरधिवासितकलशैरभिषेचयेत् ।

(इस मंत्र से उन चार दिशा में स्थापित ९-९ कलशोंसे जिनालय का अभिषेक करें या मंदिर के सामने बडा दर्पण रखकर शिखरसमेत प्रतिबिंबित मंदिर का दर्पण में अभिषेक करें ।)

(ओं) भवन भवन जानां, ज्योतिषां कल्पजानाम् ।
मणिमयनिलयस्था, येऽहमिंद्रालयस्था ।।
बहुविभवयुता ये ये च मध्ये त्रिलोके ।
जिनपतिनिलयास्तांस्तांश्च सर्वान् महामि ।।

गद्य - ओं रजतमहारजतेन्द्रनीलमरकतमाणिक्यमयमहामानभासुरभित्ति स्तंभशालिशिखरमंडपमहामानस्तंभाद्यंगोपांगसंगताकीर्णपंचवर्णप्रभाजाल प्रभा वाहितविचित्रांबरविलासांबराणाम् ।। संततानादिसंसिद्धहटद्धाटकीयधूपघट पेटकास्यनिर्यद् विश्वतोविसर्पि धूमलेखाजालबहलपरिमल प्रसरसुरभीकृतसकल दिङ्मुखानाम् ।। वंदारूसुरासुरवृदांरकजयजयारावसुरनर्तकीकरकंकण झंकारद्विगुणीकृतानादिघटितघंटाजालझणझण ध्वानबधिरीकृतनिखिल दिङ्मंडला -नाम्।। तम:समूलसमुत्पाटनपटुतावलेपलिप्सागतगभस्तिमालि मंडलायमानहट -द्धाटकीयघटपेटकीयघटपेटकोपघटितचित्तचमत्काराणाम् ।। चकचकायमाननाना -विधोपकरणनिचितनीलतरनिर्जितज्योतिर्गणांकित गगनांगणानाम् ।।समुत्तुंगसुवर्ण -भित्तिभागावलंबमानमणिमालाभूषित मेरूगिरीपार्श्वशोभातिशयानाम् ।। विचित्र विनिर्मापणवदनाभिषेक नर्तन संगीतावलोकनादिमंडपाभिमंडितचैत्यमहीमहितानाम् ।। कुंजराराति कुंजरादिदशविधध्वजराजिसभाजिताद्यद्वितीयशालांतर ध्वजधराविराजितानाम् ।। चतुर्दिग्गताशोकसप्तच्छदचंपकाम्रचतुर्वनांचिततृतीय बहि:शालांतरावनीविनुतानाम् ।। चतुर्वीथिपर्यंतगतमहामानस्तंभाहित प्रतितीर्यजनमानस्तंभानाम् ।। सहजसकलपरिष्काराणामकृत्रिमाणा

महार्यविविधालंकारणामपि कृत्रिमाणां ।। मंगललोकोत्तमशरणभूतानाम् ।। भगवज्जिनचैत्यालयानामष्टतयीमिष्टिं करोमि स्वाहा ।

ओं ह्रीं सर्वजिनचैत्यालया जलं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमः ।

ओं ह्रीं सर्वजिनचैत्यालया गंधं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमः ।

एवं अक्षतादि । (इसी प्रकार से अक्षतादि आठों द्रव्य चढावें ।)

शार्दूल - **स्वच्छैस्तीर्थजलैरतुच्छसहज - प्रोद्गंधिगंधैः सितैः ।**
सूक्ष्मत्वायतिशालिशालिसदकै - गंधोद्गमैरूद्गमैः ।।
हव्यैर्नव्यरसैः प्रदीपितशुभै-दीपैर्विपद् धूपकैः ।
धूपैरिष्टफलावहैर्बहुफलैः चैत्यालयान्संयजे ।।

ओं ह्रीं सर्वजिनचैत्यालयाः अर्घ्यं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं नमः ।

(मंदिरके आगे खडे होकर नीचे लिखे अनुसार आशीर्वादात्मक श्लोक बोलें।)

आर्या - **शिवमस्तु सर्वजगतां, परहितनिरता भवंतु भूतगणाः ।**
दोषाः प्रयांतु नाशं, तिष्ठतु जिनशासनं सुचिरम् ।।

इममाशीर्वादमुद्घोषयेत् ।

– मालिनी –

सजयतु जिनधर्मो यावदाचंद्रतारं ।
यमनियमतपोभिर्वर्द्धतां साधुसंघः ।।
अहरहरभिवृद्धिं यांतु चैत्यालयास्ते ।
तदधिकृतजनानां क्षेममारोग्यमस्तु ।।

। इत्याशीर्वादः ।

अथ शांतिशुद्ध्यभिधान होमविधेः प्रयोगः (शांतिशुद्धि होमविधि)

(चैत्यालय की चारों दिशाओं में चौकोन १-१ कुंड बनवाकर होम मंडप बनावे पुनः पुण्याहवाचन आदि विधि करें, उसे ही दिखाते है ।)

गद्य - अथ चैत्यालयस्य चतुर्दिक्षु विधिविहित चतुरस्रचतुः कुंडविराजमान समुचितालंकारोपेतहोममंडपे संकल्पपूर्वक पुण्याहवाचनां, भूमिशोधन विधानं, होमकुंड पश्चिमपार्श्वे सिद्धपूजनमासनस्थापनादिदिक्पालपूजा पर्यंतं

अग्निमुखविधिं, तदनंतरमाज्याहुतिं, पुनरप्याज्येन पूर्णाहुतिं पुण्याहवाचनामग्रेरर्चनं, स्तवनादिविधिं, होमार्थमाहूतदेवताविसर्जनं विधातुमिमे वयमुत्सहामहे ।। पुष्पाञ्जलिः ।।

इस प्रकार पूजा करके मंदिर के चारो कोणों में होमकुंड की रचनाकर लघु होम विधान करें, शांतिविसर्जन करके मंदिर प्रतिष्ठा समाप्त करें ।

नोट :- मंदिर प्रतिष्ठा में भी वेदी – प्रतिष्ठा के समान ही भूमि शुद्धि, भूमि पूजा, क्षेत्रपाल पूजा करना चाहिए, वहाँ देख लेवें ।

- प्रतिष्ठा तिलक -

❊ मंदिर प्रतिष्ठा व वेदीप्रतिष्ठा ❊

यदि अलग से वेदी प्रतिष्ठा करना है तो कम से कम तीन दिन का महोत्सव रखना चाहिए, अगर मंदिरजी में बडा कमरा हो तो वहाँ महोत्सव करें अथवा अलग से बडा पांडाल लगवाकर वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव करें, निर्ग्रंथाचार्य संघ के सानिध्य में धर्मात्मा जीवों को महोत्सव में बुलाकर इस उत्सव को करे, जिन मंदिर को सुशोभित करें, खूब सजावें, एक अच्छी आमंत्रण पत्रिका छपवाकर, सभी चतुर्विध संघ को आमंत्रित करें, शुभ मुहूर्तमें इस कार्य को संपन्न करें ।

प्रथम दिन का कार्य

श्रावक श्राविका प्रतिष्ठाचार्य इन्द्र इन्द्राणि प्रातः स्नानकर शुद्ध वस्त्र पहनकर ईर्यापथशुद्धि पूर्वक जिनमंदिरजी में आवें । मंदिर की तीन प्रदक्षिणा लगाकर भगवान को नमस्कार करें । आचार्य निमंत्रण होने के बाद संध्यावंदन क्रिया करे । फिर इन्द्र इन्द्राणि मिलकर जिनाभिषेक के लिए घटयात्रा विधि के अनुसार जलभर लावें, अभिषेक करे, फिर झंडारोहण विधि करें, कोई भी एक मंत्र का साढे बारह हजार जाप्य के लिए जाप्य प्रारंभ करवावें । नित्यनियमपूजा कर प्रात:काल की विधि समाप्त करें । चतुर्विध संघ को आहारादि देकर, पुनःसब लोग मंदिरजीमें आजावें मध्याह्न में शांतिचक्र विधान या पंचपरमेष्ठि विधान करें । उसके लिए सकलीकरण इन्द्रप्रतिष्ठा वेदी प्रतिष्ठा पंचकुमार पूजा,

दश दिक्पाल पूजा, स्वस्तिनयन, महर्षि उपासनादि करके मूलविधानकी पूजा कर रात्रि में भजन आरती सांस्कृतिक नाटकादि करके समाप्त करें ।

द्वितीय दिन का कार्य

प्रात: स्नानादि क्रिया से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र पहनकर मंदिरजी में जावें, तीन प्रदक्षिणा लगावें - मंदिर की, ईर्यापथशुद्धि करके भगवान को नमस्कार करे, पुन: सामायिक वंदना करके जिनेन्द्र भगवान का पंचामृताभिषेक करें । सामायिक वंदना करके जिनेन्द्र भगवान का पंचामृताभिषेक करें । जाप्यादिक करके नित्यपूजा करें । आहारदानादि देकर मध्याह्न में वेदीशुद्धि के लिए घट-यात्रा महोत्सवपूर्वक ८१, ११ या ५ कलशों में प्रासुक किया हुआ कुआं वापिका से, बडे धूम-धामसे गाजे-बाजे के साथ इंद्राणियाँ केशरिया लाल पीले कपडे पहनकर सौभाग्यवतियाँ जलभर के लावें । वेदी शुद्धि की समस्त क्रियाको संपन्न करें । रात्रि में आरती शास्त्रसभा भजन सांस्कृतिक कार्यक्रम - समाप्त ।

तीसरे दिन का कार्य

प्रात: स्नानादिक से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारण कर मंदिरजी में आवें, तीन प्रदक्षिणा लगाकर, ईर्यापथशुद्धि करके भगवान को नमस्कार करे, संध्या-वंदनादि करके जिनाभिषेक करें, नित्य पूजा जाप्यानुष्ठान पूर्ण करे, समस्त इंद्र - इंद्राणियाँ मिलकर होम करे, जाप्य के दशांश आहूति देवे, हवन समाप्ति के बाद सब विसर्जन करें । चतुर्विध संघ को आहारादि दान देवें

मध्याह्न में प्रतिष्ठाचार्यादि का दान - दक्षिणा देकर सम्मान करें, अतिथियों का सत्कार करें, रथोत्सव निकाले । रात्रि में आरती शास्त्र सभा भजन आदि करके महोत्सव का समापन करें ।

वेदी प्रतिष्ठा की मूल विधि

घट - यात्रा द्वारा लाये हुए जलकलश नये मंदिर में या वेदी प्रतिष्ठा के स्थानपर लावें । एक मिट्टी के घडे में बड पीपल उमर गूलर जामुन आम,

अर्जुन, अशोक, पलास, कटहल और चंपा इन सब वृक्षों की एक-एक तोला छाल मंगवाकर १ सेर पाणी में मिलावें । फिर उसको अच्छी तरह उबालें, छानकर एक बर्तन में रखले, कुछ पांच कलशों के पानी में उस काढा को और अष्टगंध, वासक्षेप, चन्दन चूरा, लवंग चूर्ण, जायफल चूर्ण, सर्वौषधि इन सबको मिला दिया जाय, मृत्तिकानयन द्वारा लायी हुई मिट्टी अथवा ऐसे ही खेत की शुद्ध मिट्टी लावें ।

* वेदी प्रतिष्ठा संबंधी भूमि पूजन *

ओं घंटादिवाद्यं उद्घोषयामि स्वाहा ।

(बाजों पर पुष्पाञ्जलि क्षेपणकर घंटा मजीरा ढोलक आदि बाजे बजाकर जय जय ध्वनि करे ।)

ओं ह्रीं परमब्रह्मणे नमो नमः । स्वस्ति स्वस्ति जीव जीव नंद नंद वर्द्धस्व वर्द्धस्व विजयस्व विजयस्व अनुशाधि अनुशाधि पुनीहि पुनीहि पुण्याहं पुण्याहं मांगल्य मांगल्यं पुष्पाञ्जलिः ।। सोदकानि पुष्पाणि क्षिपेत्

ओं ह्रीं अत्रस्थित क्षेत्रपालाय स्वाहा ।

ओं ह्रीं वास्तुदेवाय इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

ओं ह्रीं वायुकुमारदेवाय सर्वविघ्नविनाशनाय इदं अर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां ।। महीं पूतां कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा । (षड्दर्भपूलेन भूमिं सम्मार्जयेत्)

ओं ह्रीं मेघकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय इदमर्घ्यं प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां । धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं ठं यक्ष फट् स्वाहा । (षड्दर्भपूलोपात्त जलेन भूमिं सिंचेत्) (डाभ के पूले से जल लेकर भूमि पर छिडके, ६ तिनके से)

ओं ह्रीं अग्निकुमाराय इदमर्घ्यं प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां । भूमिं ज्वालय ज्वालय अं हं सं वं झं ठं यक्ष फट् स्वाहा । (डाभ या कपूर जलाकर भूमि शुद्ध करें ।)

ओं ह्रीं क्रों षष्टिसहस्रसंख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा । इदमर्घ्यं....

(नागतर्पनार्थमैशान्यां दिशि जलांजलिं क्षिपेत् । (ईशान दिशामें जलांजलि देवें ।)

दर्भस्थापन विधि

प्रकृतक्रमविध्यवधानाय पुष्पाञ्जलि: ।। (पुष्पांजलि क्षेपण करे ।)
ओं ह्रीं दर्पमथनाय नम: स्वाहा । (ब्रह्मस्थानमें दर्भ स्थापना करें – ब्रह्मदर्भ:)
ओं ह्रीं अनन्तज्ञानाय अनंतदर्शनाय अनंतवीर्याय अनंतसुखाय पूर्वदिङ्मुखे दर्भमवस्थापयामि नम: स्वाहा । (इंद्रदर्भ: पूर्व दिशामें दर्भ स्थापित करें)
ओं ह्रीं ब्रह्मणे स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । जिनाय स्वाहा । जिनोत्तमाय स्वाहा। धवाय स्वाहा । धवोत्तमाय स्वाहा । शुचिष्ठाशुचिष्ठेषु स्वाहा । कोणाकोणेषु स्वाहा। (अग्निदर्भ: आग्नेयां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । अग्निदर्भ:)
ओं ह्रीं अनंतवीर्याय स्वाहा। जितेन्द्रियाय स्वाहा।(यमदर्भ: दक्षिण दिशामें दर्भ)
ओं ह्रीं परमब्रह्मणे नैऋत्यां दिशिदर्भ व्यवस्थापयामि स्वाहा । (नैऋत्यदर्भ:)
ओं ह्रीं परममंगलाय परमपवित्राय परमनिर्वाण कारणाय स्वाहा । (वरूण दर्भ:)
ओं ह्रीं पंचमहाकल्याण संपूर्णाय। वायव्यं । दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । (वायु दर्भ: वायव्य दिशा में)
ओं ह्रीं त्रैलोक्यनाथाय त्रिलोकमहिताय शुचिरत्नत्रयदर्शनकराय उत्तरस्यां दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा । (यक्ष दर्भ : उत्तर दिशामें)
ओं ह्रीं नवकेवललब्धिसहिताय देवाधिदेवाय । ऐशान्यं दिशि दर्भमवस्थापयामि स्वाहा ।। (ईशान दर्भ:)
इति दर्भस्थापन विधानम् ।
ओं ह्रीं नीरजसे नम: जलं । शीलगंधाय नम: गंधं । अक्षताय नम: अक्षतान् विमलाय नम: पुष्पं । दर्पमथनाय नम: चरू । ज्ञानोद्योताय नम: दीपं । श्रुतधूपाय नम: धूपं । परमसिद्धाय नमं फलं । इति भूम्यर्चनम् । (अष्टद्रव्य से भूमि पूजा करना ।

भूमिपूजन होने के बाद इन्द्राणियोंके द्वारा नवीन वेदी में मिट्टी के ११–११ पुंज में रखवाये जांय । प्रतिष्ठाचार्य अमृतबीजमंत्र से प्रौक्षिणी द्वारा वेदी का सिंचन करावे । उन घडों से पानी लेकर मिट्टी मिलाकर ओं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्ष: स्वाहा । इस मंत्र से महिलाओंके द्वारा वेदी धुलवावे । फिर उन पाँच घडों के

काढे से व अलग बर्तन में रखे हुए काढेसे वेदीको धुलवावे । ५ अथवा ८१ कलशों को मंत्र पूर्वक वेदी पर ढुलवावे ।

* ८१ घटों से वेदी शुद्धि मंत्र *

१. ओं ह्रीं इन्द्र कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
२. ओं ह्रीं अग्नि कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
३. ओं ह्रीं यम कलशेन वेदीशुद्धिं करामीति स्वाहा ।
४. ओं ह्रीं नैऋत्य कलशेन वेदीशुद्धिं करामीति स्वाहा ।
५. ओं ह्रीं वरूण कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
६. ओं ह्रीं मारूत कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
७. ओं ह्रीं कुबेर कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
८. ओं ह्रीं ईशान कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
९. ओं ह्रीं गारून्मत कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
१०. ओं ह्रीं मरकतमणि कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
११. ओं ह्रीं गाङ्गेय कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
१२. ओं ह्रीं हाटक कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
१३. ओं ह्रीं हिरण्य कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
१४. ओं ह्रीं कनक कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
१५. ओं ह्रीं अष्टापद कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
१६. ओं ह्रीं महारजत कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
१७. ओं ह्रीं आनन्द कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
१८. ओं ह्रीं नन्दन कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
१९. ओं ह्रीं विजय कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
२०. ओं ह्रीं अजित कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
२१. ओं ह्रीं अपराजित कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
२२. ओं ह्रीं शतानन्द कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

२३. ओं ह्रीं स्नानद कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
२४. ओं ह्रीं कुन्द कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
२५. ओं ह्रीं मलिकाख्य कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
२६. ओं ह्रीं चम्पक कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
२७. ओं ह्रीं कदम्ब कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
२८. ओं ह्रीं मन्दार कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
२९. ओं ह्रीं पारिजात कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
३०. ओं ह्रीं सन्तानक कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
३१. ओं ह्रीं हरिचन्दन कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
३२. ओं ह्रीं कल्पवृक्ष कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
३३. ओं ह्रीं जपा कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
३४. ओं ह्रीं विशाल कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
३५. ओं ह्रीं भद्रकुम्भ कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
३६. ओं ह्रीं पूर्णकुम्भ कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
३७. ओं ह्रीं जयन्त कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
३८. ओं ह्रीं वैजयन्त कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
३९. ओं ह्रीं चन्द्र कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
४०. ओं ह्रीं सूर्य कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
४१. ओं ह्रीं लोकालोक कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
४२. ओं ह्रीं त्रिकूट कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
४३. ओं ह्रीं उदयाचल कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
४४. ओं ह्रीं हिमाचल कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
४५. ओं ह्रीं निषध कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
४६. ओं ह्रीं माल्यवत् कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
४७. ओं ह्रीं सत्पात्र कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।
४८. ओं ह्रीं गन्धमादन कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

४९. ओं ह्रीं सुदर्शन कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
५०. ओं ह्रीं मन्दर कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
५१. ओं ह्रीं अचल कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
५२. ओं ह्रीं विद्युन्मालि कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
५३. ओं ह्रीं चूडामणि कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
५४. ओं ह्रीं गुल्लिका कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
५५. ओं ह्रीं दक्षिणावर्त कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
५६. ओं ह्रीं कोक कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
५७. ओं ह्रीं राजहंस कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
५८. ओं ह्रीं हरिन कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
५९. ओं ह्रीं मृगेन्द्र कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
६०. ओं ह्रीं कोकनद कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
६१. ओं ह्रीं काल निधि कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
६२. ओं ह्रीं पद्म कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
६३. ओं ह्रीं महाकाल निधि कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
६४. ओं ह्रीं सर्वरत्न कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीतिस्वाहा।
६५. ओं ह्रीं पाण्डु कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
६६. ओं ह्रीं नैसर्प कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
६७. ओं ह्रीं माणव कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
६८. ओं ह्रीं शङ्ख निधि कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
६९. ओं ह्रीं सर्वार्थसिद्धि कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
७०. ओं ह्रीं पिंगल कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
७१. ओं ह्रीं पुष्करावर्त कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
७२. ओं ह्रीं मकरध्वज कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
७३. ओं ह्रीं ब्रह्म कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।
७४. ओं ह्रीं सुवर्ण कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

७५. ओं ह्रीं इन्द्रनील कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

७६. ओं ह्रीं अशोक कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

७७. ओं ह्रीं पुखराज कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

७८. ओं ह्रीं कुमुद कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

७९. ओं ह्रीं सम्यग्दर्शन कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

८०. ओं ह्रीं सम्यग्ज्ञान कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

८१. ओं ह्रीं सम्यक्चारित्र कलशेन वेदीशुद्धिं करोमीति स्वाहा ।

अथदिग्बन्धन

वामायामथ तर्जन्यां न्यस्यैवं पंचमंत्रकः ।
पूर्वादि दिक्षु रक्षार्थं दशास्वपि निवेशयेत ।।

प्रतिष्ठाचार्य अपने बायें हाथ की तर्जनी अंगुली पर णमोकार मंत्र का न्यास करें, फिर उस उंगली को पूर्वादिदिशाओंमें मन्त्र पढते हुए घुमाते जाए ।

ओं क्षां ह्रां पूर्वे, ओं क्षीं ह्रीं अग्रे, ओं क्षूं ह्रूं दक्षिणे, ओं क्षें ऱ्हें नैऋत्ये, ओं क्षैं ऱ्हैं पश्चिमे, ओं क्षों ऱ्हों वायव्ये, ओं क्षौं ह्रौं उत्तरे, ओं क्षं ऱ्हं ईशाने, ओं क्षः हः अधो, ओं क्षीं ह्रीं ऊर्ध्वे । (इति दिग्बन्धनं)

फिर दस सौभाग्यवती स्त्रियों के हाथों में मूंग, मजीठ, हल्दी, सुपारी, अक्षत, पुष्प, रत्न, दूर्वा, दही, अष्टगंध, वासक्षेप, और सर्वौषधि, इन सभी चीजों को मिलाकर देवे । एक थाली में प्रज्वलित दीपक धूप अग्निपात्र रख कर साथ में ले । एक बडे कलश में दूध तथा दूसरे कलश में अष्टगंध मिश्रित जल इतना लेवें कि चारों ओर पतली धार हो सके । दोनों कलश सौभाग्यवती स्त्रियों को देवें । एक आदमी को खंत्री देकर साथ में रख लेवें । मंदिर प्रतिष्ठा के लिए खंत्री जरूरी है ।)

गृहस्थाचार्य अपने हाथ में मोली का गिंडा या चांदी का पतला तार दिग्बंधनार्थ साथ में लेवे (दाक्षिणात्य परंपरा में दर्भ की रस्सी भी रखते हैं)

ल र श ष व प स ह हा ही वर्णान् सबिंदुकान्

अष्टदिग्पति समेतान् प्रणवादि नमोऽन्तगान्

वेदीप्रतिष्ठा हो तो वेदी के पूर्व में और मंदिर प्रतिष्ठा हो तो मंदिर के पूर्व में एक स्त्री के द्वारा / एक-एक के द्वारा -

(१) ओं ल इन्द्राय अत्रागच्छ-२ इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं जलं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं स्वस्तिक यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा । (अर्घ्य के साथ महिला के हाथ की (पहली) चीजें चढा देवे । (वहीं से प्रतिष्ठाचार्य दिग्बंधन दूध, अष्टगंधयुक्त जलधार चलें)

(२) ओं रं अग्रे ! अत्रागच्छ ....(दूसरी स्त्री के हाथ की चीजें चढावे)

(३) ओं शं यम ! अत्रागच्छ ....(तीसरी स्त्री के हाथ की चीजें चढावे)

(४) ओं षं नैऋत्य ! अत्रागच्छ ....(चौथी स्त्री के हाथ की चीजें चढावे)

(५) ओं वं वरूणाय ! अत्रागच्छ ....(पांचवी स्त्री के हाथ की चीजें चढावे)

(६) ओं पं पवन ! अत्रागच्छ ....(छठी स्त्री के हाथ की चीजें चढावे)

(७) ओं सं कुबेर ! अत्रागच्छ ....(सातवीं स्त्री के हाथ की चीजें चढावे)

(८) ओं हं ऐशान ! अत्रागच्छ ....(आठवीं स्त्री के हाथ की चीजें चढावे)

(९) ओं ह्रां धरणीन्द्र ! अत्रागच्छ ....(नौमी स्त्री के हाथ की चीजें चढावे)

(१०) ओं ह्रीं सोम ! अत्रागच्छ ....(दसवीं स्त्री के हाथ की चीजें चढावे)

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

सिद्ध भक्ति पढकर दिग्बंधन क्रिया समाप्त करें ।

फिर - ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्म महापद्म तिगिंछ केशरी महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकांता सीता सीतोदा नारी नरकांता सुवर्ण कूलारूप्यकूला रक्तारक्तोदापयोधि शुद्धजल सुवर्णघट प्रक्षालित नवरत्न गंधाक्षत पुष्पार्चित मामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रों झ्रों वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सः स्वाहा ।

इस मंत्र से अभिमंत्रित प्रोक्षिणी के जल से अमृतबीज मंत्र द्वारा पुनः प्रोक्षण किया जाय ।

चतुष्कोणेषु कुंभांश्चमाला चंदनचर्चितान् ।

फलपल्लव वक्त्रस्थान ससूत्रान्स्थापयेत् क्रमात् ।।

इस श्लोक को पढकर वेदी के चारों कोणों में चार कलशों को संस्कारित करके वेदी के रूप में जमीन पर रखवायें जाय । खाली घडों को उच्चस्थान पर रखवा दिया जाय । फिर वेदी के सामने नंद्यावर्त सांथियाँ बनाकर उसके ऊपर ओं स्वस्तये पुष्पं कुंभं स्थापयामि स्वाहा । इस प्रकार यजमान के द्वारा मंगल कलश स्थापना करवाकर आगे लिखित पूजा करे ।

* विनायक यंत्र पूजा *

मुहूर्त सिद्धः कृत सिद्धभक्तिः । विलिख्ययंत्रं सुविनायकाख्यं

छत्रत्रयं सिद्ध मुनीश्वरर्द्धि श्रुतानि संस्थाप्य चरेत्सपर्या

प्रत्यूहनिर्णाशविधौप्रसिद्धं गणेन्द्र वक्त्राम्बुज गीतकीर्तिं

यन्त्रं पुरा पूजितमत्रनेयं पात्रे लिखित्वापि कृतार्चनादि

पुष्पांजलिः ।

ओं जय-३ निस्सही-३ वर्द्धस्वं-३ स्वस्ति-३ । वर्द्धतां जिनशासनं ।

णमोकारमंत्र पढकर चत्तारि मंगल पढें ।

ओं अद्य वेदी शुद्ध्यर्थं भावशुद्धिः पूर्वक आचार्य भक्ति श्रुतभक्ति पूर्वक कायोत्सर्गं करोम्यहं ।

अथ स्थापना

परमेष्ठिन् मंगलादि त्रय विघ्न विनाशने ।

समागच्छ तिष्ठ तिष्ठ मम सन्निहितो भव ।।

ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणभूत अत्र-अवतर अवतर संवौषट् । ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणभूत अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ओं ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणभूत अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।।

– अष्टक –

स्वच्छैर्जलै स्तीर्थ भवै जराय, मृत्यूग्ररोगायनुदेपुरस्तान् ।

अर्हन् मुखान् पंचपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमानमांगलिकान्यजेऽहं ।।

ओं ह्रीं अद्य वेदी शुद्धिविधान ऽ र्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सच्चंदनैर्गन्धहृतालिवृन्दैः, चितैहिमांशु प्रसरावदातैः ।

अर्हन् मुखान् पंचपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमान्मांगलिकान्यजेऽहं ।।

ओं ह्रीं अद्य---भवाताप विनाशनाय चंदनं... ।।२।।

सदक्षतैर्मौक्तिक कांतिपाटै :, चरै सितैमानसनेत्रमित्रैः ।

अर्हन् मुखान् पंचपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमान्मांगलिकान्यजेऽहं ।।

ओं ह्रीं अद्य अक्षयपद प्राप्त्यै अक्षतान्..... ।।३।।

पुष्पैरनेकैर्रसवर्णगंधैः प्रभासुरैर्वासित दिग्वितानैः ।

अर्हन् मुखान् पंचपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमान्मांगलिकान्यजेऽहं ।।

ओं ह्रीं अद्य कामबाण विनाशनाय पुष्पं ... ।।४।।

नैवेद्यपिण्डैर्घृतशर्कराक्तै – र्हविष्य भागैः सुरसाभिरामैः ।

अर्हन् मुखान् पंचपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमान्मांगलिकान्यजेऽहं ।।

ओं हीं अद्य .... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।।५।।

आरर्ति कैर्रत्नसुवर्णरूक्म पात्रार्पितैर्ज्ञानविकाशहेतोः ।

अर्हन मुखान् पंचपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमान्मांगलिकान्यजेऽहं ।।

ओं ह्रीं अद्य वेदी शुद्धिविधान ऽ र्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।६।।

आशासुयद्धर्म वितानमृद्धै – तैर्धूपवृन्दैर्दहनोपसर्पैः।

अर्हन मुखान् पंचपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमान्मांगलिकान्यजेऽहं ।।

ओं ह्रीं अद्य वेदी शुद्धिविधान ऽ र्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।

फलैर्रसालैर्वर दाडिमाद्यै – र्हद्घ्राणहार्यै – रमलैरूदारैः ।

अर्हन मुखान् पंचपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमान्मांगलिकान्यजेऽहं ।।

ओं ह्रीं अद्य वेदी शुद्धिविधान ऽ र्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो महामोक्षफलप्राप्त्यै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।८।।

द्रव्याणि सर्वाणि निधाय पात्रे ह्यनर्घमर्घं वितरामि भक्त्या ।

अर्हन मुखान् पंचपदान् शरण्यान्, लोकोत्तमान्मांगलिकान्यजेऽहं ।।

ओं ह्रीं अद्य वेदी शुद्धिविधानऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु मंगल लोकोत्तम शरणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्त्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।९।।

अनादि सन्तान भवान् जिनेन्द्रानर्हत्पदेष्टानुपदिष्ट धर्मान् ।

द्वेधाश्रियालिंगितपादपद्मान्, यजामि वेदीप्रकृतिप्रसत्यै ।।१।।

ओं ह्रीं उद्भिन्नान्त ज्ञानगर्भस्ति संदृष्ट लोकानुभावान मोक्षमार्ग प्रकाशनानन्तचिद्रूप विलासान् अर्हत परमेष्ठिन: संपूजयामि स्वाहा ।।१।।

कर्माष्टनाशाच्चयु भावकर्मोद्भूतोन्निजात्मस्वविलासभूपान् ।

सिद्धाननन्तांस्त्रिक कालमध्ये गीतान्यजाम्यष्टविधि प्रशक्त्यै ।।२।।

ओं ह्रीं द्विविधकर्ममलरहित लोकाग्रशिखरावस्थायिन: सिद्ध परमेष्ठिनोऽर्चयामि स्वाहा ।।२।।

ये पंचधाचार परायणानां अग्रेसरा दीक्षणशिक्षिकासु ।

प्रमानिर्णीतपदार्थसार्थान् आचार्यवर्यान् परिपूजयामि ।।३।।

ओं ह्रीं व्यवहाराधारचारक्त्वाद्यनेक गुणमणिभूषितोरस्कान् संघप्रतिसार्थवाहानाचार्यवर्यान् परिपूजयामीति स्वाहा ।।३।।

अर्थश्रुतं सत्य विबोधनेन द्रव्यश्रुतं ग्रन्थ विदर्भनेन ।

येऽध्यापयन्ति प्रवरानुभावा: तेऽध्यापका मेऽर्हणया दुहंतु ।।

ओं ह्रीं द्वादशाङ्ग श्रुताम्बुनिधि पारंगतान् परिप्राप्तपदार्थ स्वरूपानुपाध्याय परमेष्ठिन: संपूजयामीति स्वाहा ।।४।।

द्विधा तपोभावनया प्रवीणान् स्वकर्मभूवीध्रविखंडनेषु ।

विविक्तशय्यासनहर्म्यपीठ – स्थितान् तपस्विप्रवरान यजामि ।।

ओं ह्रीं घोरतपश्चरणोद्यत प्रयास स भासमानन् स्वकारूण्यपुण्य पुण्य गण्यपण्यारत्ना्

लंकृतपादान् साधुपरमेष्ठिनः संपूजयामि स्वाहा ।।५।।

– आर्या –

अर्हन्मंगलमर्चे सुरनरविद्या धरैकपूज्यपदं ।

तोयप्रभृतिभिरर्घ्यै – र्विनीतमूर्धा शिवाप्तये नित्यं ।।

ओं ह्रीं अर्हन्मंगलाय नमः अर्घ्यं ।।६।।

ध्रौव्योत्पादविनाशो रूपाखिलवस्तुजनानर्थकरं ।

सिद्धं मंगलमिति वा मत्वार्चे चाष्टविध वस्तुभिः ।।

ओं ह्रीं सिद्ध मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामिती स्वाहा ।।७।।

यद्दर्शनकृतविभवा द्रोगोपद्रवा मृगेव मृगेन्द्रात् ।

दूरं भजंति देशं साधुभ्योऽर्चते विधिना ।।

ओं ह्रीं साधु मंगलाय नमः अर्घ्यं ।।८।।

केवलिमुखावगतया वाण्या निर्दिष्ट मेदधर्मगणं ।

मत्वा भवसिंधुतरीं प्रयजे तन्मंगलं शुद्धयै ।।

ओं ह्रीं केवलिप्रज्ञप्त धर्ममंगलायार्घ्यं ।।९।।

लोकोत्तममय जिनराट् पदाब्जसेवामित दोष विलयाय ।

शक्तं मत्वा घृत जल, गंधैरर्चेसमीड् प्रभवे ।।

ओं ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाय अर्घ्यं ।।१०।।

सिद्धारचुतदोषमला लोकाग्रं प्राप्य शिवसुखं व्रजिता ।

उत्तमपथगा लोके तानर्चे वसुविधार्चनया ।।

ओं ह्रीं सिद्ध लोकोत्तमाय अर्घ्यं ।।११।।

इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्रैरर्थिततपसां व्रतैषिणां सुधियाम् ।

उत्तममध्वानमसावर्चेऽहं सलिलगंध मुखैः ।।

ओं ह्रीं साधु लोकोत्तमाय अर्घ्यं ।।१२।।

रागपिशाचादिमर्दनमत्र भवे धर्मं धारिणामतुलम् ।

उत्तममपगत कामो वृषमर्चे शुचितरं कुसुमैः ।।

ओं ह्रीं केवलिप्रज्ञप्त धर्म लोकोत्तमाय अर्घ्यं ।।१३।।

अर्हच्छरणमथार्चेऽनन्त जनुण्यपि न जातु संप्राप्तम् ।
नर्तनगानादिविधि मुद्दिश्याष्ट कर्मणां शांन्त्यै ।।

ओं ह्रीं अर्हच्छरणाय अर्घ्यं ।।१४।।

निर्व्याबाधगुणादिक प्राग्र्यं शरणं समेतचिदनन्तम् ।
सिद्धानाममृतानां भूत्यै पूजेयमशुभहान्यर्थम् ।।

ओं ह्रीं सिद्धशरणाय अर्घ्यं ।।१५।।

चिदचिद्भेदं शरणं लौकिकमाप्यं प्रयोजनातातिम् ।
त्यक्त्वा साधुजनानां शरणं भूत्यै यजामि परमार्थम् ।।

ओं ह्रीं साधुशरणाय अर्घ्यं ।।१६।।

केवलिनाथमुखोदगत धर्मः प्राणिसुखहितार्थमुद्दिष्ट ।
तत् प्राप्त्यै तद्यजनं कुर्वे मखविघ्ननाशाय ।।

ओं ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्म शरणाय अर्घ्यं ।।१७।।

(अत्र लवंगकैरष्टोत्तरशतं 'ओं ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिसमृद्ध गणधरेभ्यो नमः'। इस मंत्र को या – ओं ह्रीं अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा । इस मंत्र की १०८ जाप्य करनी चाहिए)

अथ महर्षि पर्युपासनम्

(प्रदिशन्तु बोलने पर पुष्पांजलि छोडे)

औषधीरसबलर्द्धि तपःस्थाः क्षेत्रबुद्धिकलिताः क्रिययाढ्याः ।
विक्रियर्द्धिमहिताः प्रणिधान प्राप्तसंसृतितटा मुनिपूज्याः ।।
केवलावधिमनः प्रसराङ्गा बीज कोष्ठमति भाजन शुद्धाः ।
वीतराग मद मत्सरभावा बोधिलाभमनद्यः प्रदिशन्तु ।।
यद्वचोऽमृतमहानदमग्नाः जन्मदाह परितापमपास्य ।
निर्ववुः सुखसमाजतटेषु बोधिलाभमनद्यः प्रदिशन्तु ।।
श्रोतृभिन्नमतयः पदपंथा दृष्ट संसृति पदार्थविभावाः ।
तत्त्वसंकलित धर्म्यसुशुक्लाः बोधिलाभमनद्यः प्रदिशन्तु ।।

स्पर्शनश्रवणलोकनबुद्धा घ्राणसंस्थरसनोपकृता ये ।
दूरतोऽप्यनुभवंहिसमाप्ता बोधिलाभमनद्यः प्रदिशन्तु ।।
छिन्नस्वर्यविधिना चतुर्दश दिग्सुपूर्वमतिना निमित्तगाः ।
वादि बुद्धि कृतिनोमतिश्रमाः बोधिलाभमनद्यः प्रदिशन्तु ।।
अष्टधोक्तदशधाभिदया ये बुद्धिवृद्धिसहिताः शिवयात्राः ।
विण्मलादिगदहापनदेहाः बोधिलाभमनद्यः प्रदिशन्तु ।।
दृष्टवक्त्र मनसा विषभक्ति प्रीणिताः श्रुत् सरित् पतिपुष्टाः ।
लोक मंगलिषु सन्यसिता ये बोधिलाभमनद्यः प्रदिशन्तु ।।
वाक्यमानसबलेन समग्रा उग्रदीप्ततपसस्त्रिक गुप्ताः ।
घोरवीर्यगुण भावित चिन्ताः बोधिलाभमनद्यः प्रदिशन्तु ।।
दुग्धमध्वमृतभोजन कृत्वा सर्पिरास्रविक्चोऽ भिनियुक्ताः ।
अण्वलाघववशित्व विदर्भाः बोधिलाभमनद्यः प्रदिशन्तु ।।
कामरूपगुरूता प्रतिसर्पान् तदर्धानवसतिगृह युक्ताः ।
चारणाजल फलाग्निकसूत्राः बोधिलाभमनद्यः प्रदिशन्तु ।।
आत्मशक्ति विभवागतसर्व – पौद्गलीयममताश्चुतवस्त्राः ।
सत्परीषहभटार्दनदास्ते बोधिलाभमनद्यः प्रदिशन्तु ।।

ओं ह्रीं अष्टप्रकार सकलर्द्धि प्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– वसंत तिलका –

आधेशितुर्वृषभसेन पुरस्सरा ये ।
सिंहादिसेन पुरतोऽजिततीर्थभर्तुः ।।
श्री संभवस्य किल चारुविसेन मुख्याः।
तुर्यस्य वज्रधरमुख्यगणाधिराजः ।।
कोक ध्वजस्य चमराधिपपूर्वगास्युः ।
पद्मप्रभस्य कुलिशादिपुरः स्थिताश्च ।।
श्री सप्तमस्य बलमुख्यकृताः पुराणे ।
चन्द्रप्रभस्य शमिनः खलुदत्तमुख्याः ।।

मकरांकितो गणभृतश्चविदर्भमुख्या ।
श्री शीतलस्य गणपा अनगारगण्या: ।।
श्रेयोजिनस्यनिकटे ध्वनिकुंथुपूर्वा: ।
धर्मादये गणधरा वसुपूज्यसूनो: ।।
मेर्वादयश्च विमलेशितुरूदबुद्धया ।
जय्यार्यनामभरणाश्च चतुर्दशस्य ।।
धर्मस्य शांति शमिन: सदरिष्टमूला: ।
चक्रायुधप्रभृतय: खलु शान्तिभर्तु: ।।
कुन्थु प्रभोर्यममृत: कथिता: स्वयंभू ।
वर्या: पुनत्वरविभो: स्मृतकुम्भमान्या: ।।
मल्लेर्विशाखमुनयो मुनिसुव्रतस्य ।
मल्लिप्रवेकगणपा नभिभर्तुरिष्टा: ।।
सप्तर्द्धि पूजितपदा: सुप्रभासमुख्या: ।
नेमिश्वरस्य वरदत्तमुखा गणेशा: ।।
पार्श्वप्रभो: स्वयमित: सुखवान्तनाम्ना ।
वीरस्य गौतममुनीन्द्र मुखा पुनन्तु ।।
एभ्योऽर्घपाद्यमिह यज्ञधरावनार्थं ।
दत्तंमया विलसतां शुचिवेदिकायाम् ।।
पुष्पाञ्जलि प्रकर तुंदिलमाज्यपात्रं ।
उत्तारयामि मुनिमान्यचरित्रभक्त्या ।।

ओं ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर गणधरेभ्यस्त्रिपंचाशतसहित चतुर्दशशतसंखेभ्यश्चारुपात्रमग्रे कृत्वा अर्धमुतारयामि इति स्वाहा ।

(अत्र चारित्रभक्ति पाठं कृत्वा पुष्पाञ्जलिना वेदिकां भूषयेत् ।)

इन्द्र भूतिरग्निभूतिर्वायुभूति: सुधर्मक: ।

मौर्यमौढ्यौपुत्रमित्रावकंपन सुनामधृक् ।।

ओं ह्रीं गौतमादि एकादश गणधरमुनिभ्योऽर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

अंधबेलः प्रभासश्च रूद्रसंख्यामुनी न्यजे ।
गौतमं च सुधर्मं च जम्बूस्वामिनमूर्ध्वगम् ।।

ओं ह्रीं अन्त्यकेवलि त्रयायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रुतकेवलिनोऽन्याश्चविष्णुनंधपराजितान् ।
गोवर्द्धनं भद्रबाहु दशपूर्वधरंयजे ।।

ओं ह्रीं श्रुतकेवलिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विशाखप्रोष्ठिलनक्षत्र जयनागपुरस्सरान् ।
सिद्धार्थ धृतिषेणाह्वौ विजयं बुद्धिबलं तथा ।।
गंगदेवधर्मसेनमेकादश सुश्रुतान् ।
नक्षत्रं जयपालाख्यं पाण्डुं च ध्रुवसेनकं ।।
कंसाचार्य पुरोंगीयज्ञातारं प्रयजेऽन्वहम् ।
सुभद्रं च यशोभद्रं भद्रबाहुं मुनीश्वरं ।।

ओं ह्रीं कतिचिदंगधारिभ्योऽर्घ्यं ।

लोहाचार्य पूरापूर्वज्ञानचक्रधरं नमः ।
अर्हद्बलिं भूतबलिं माघनन्दिनमुत्तमम ।।
धरसेनं मुनीन्द्रं च पुष्पदंत सवाव्हयम् ।
जिनचंद कुन्दकुन्दमुमास्वामिनमर्थये ।।

ओं ह्रीं ऐदंयुगीनदीक्षाधरण धुरन्धरनिर्ग्रन्थाचार्यवर्यान् वेदीशुद्धि विधाने संस्थाप्याष्टविधार्चनं करोमि स्वाहा ।

–शार्दूल –

निर्ग्रन्थान् बकुशान् पुलाक बकुशान् कुशील किंशील निर्ग्रन्थकान् ।
मूलस्वोत्तर सद्‌गुणावधृतसाः किंचित् प्रकारंगतान् ।।
वंदित्वा जिनकल्पसूत्रितपदान् प्रध्वस्तपापोदयान् ।
वेदीशुद्धिविधिं वदंतु मुनयो ह्यर्घेण संपूजिताः ।।

ओं ह्रीं पुलाकबकुशकुशील निर्ग्रन्थस्नातक पदधरत्रिकन्यूननवकोटि मुनिवरेभ्योऽर्घ्यं इति अर्घ्यं पाद्यं च दत्वा ध्वजस्तंभशुद्धयर्थ पुष्पांजलिं क्षिपेत्

। इति विनायकयंत्र पूजनम् ।

विनायकयंत्र पूजन के बाद वेदी में भगवान विराजमान करें ।

वेदी में भगवान विराजमान करने का विधान

प्रथम वेदी पर विनायकयंत्र स्थापन करें, नहीं हो तो केशर से वेदी पर विनायक यन्त्र लिख दें । वेदी पर णमोकार, चत्तारिमंगलं पढे और पुष्पाञ्जलि छोडे । फिर प्रतिष्ठाचार्य आचार्य भक्ति, श्रुत भक्ति होने के बाद कार्योत्सर्ग करें महर्षि पर्युपासना कर अर्घ्यं चढावें १४५३ गणधरों का अर्घ्य चढाकर पुष्पाञ्जलि छोडे। चारित्र भक्ति पढकर कार्योत्सर्ग करें । भगवान का पंचामृताभिषेक करें। **ओं हूं फट् किरटिघातय घातय** - आदि मंत्र पढकर दशों दिशाओं में पीले चावल या सरसों फेंके ।

प्रतिष्ठा मंडप से प्रतिमा लाना है तो रथ में विराजमान कर धूमधाम से लावें ।

ईर्यापथे प्रचलताद्यमया प्रमादात् ।
एकेन्द्रिय प्रमुख जीव निकायबाधा ।।
निर्वर्तिताद्यदि भवेदयुगान्तरेक्षा ।
मिथ्या तदस्तु दुरितं गुरू भक्तितो मे ।।

उपरोक्त श्लोक बोलकर वेदी तक प्रवेश करें, गर्भगृह में प्रवेश करते समय नि:सहि-३ बोलते हुए जावे । पूर्व स्थापित अन्य वेदियों में अगर प्रतिमा है तो भगवान को नमस्कार करें । अर्घ्यं चढावे ।

ओं ह्रीं तोरणाय झं झं स्वाहा । (मंत्र पढकर तोरण लगावें)

ओं ह्रीं कलशारोहणाय झ्वीं क्ष्वीं हं सं णमो सिद्धाणं स्वाहा । (इस मंत्र को बोलकर वेदी पर कलश चढावे । पहले हो तो उन को मात्र स्पर्श करें)

ओं णमो अरिहंताणं स्वस्तिभद्रं भवतु सर्व लोकस्य शांति र्भवतु । इस मंत्र को बोलकर नवीन ध्वजा चढावें ।

एवं कृत्वा ध्वजारोहं, पुण्य प्राप्याद्भुतंकृती ।

भुक्त्वा तयादि सुभग:, श्रेयोनिर्वृतिमश्नुते ।।

फिर वेदी से पुष्पादि हटाकर भामण्डल लगाने की जगह ७ साथियाँ केसर से लिखें ।

ओं ह्रीं छत्रत्रयं स्थापयामि स्वाहा । **वेदी में छत्रत्रय लगावें ।**

ओं ह्रीं श्वेतचंवरयुग्म स्थापयामि स्वाहा । **(चंवर लगावें)**

ओं ह्रीं भामंडलाय स्वाहा । **(भामंडल लगावें)**

ओं ह्रीं मंगल द्रव्याय स्वाहा । **(मंगल द्रव्य स्थापन करें)**

जिनेन्द्र भगवान की पूजा करके शासन देवता को स्थापन कर अर्घ्य समर्पण करें । ओं आं क्रों ह्रीं जिनशासनरक्षक यक्ष यक्षि स्थापनं करोमि स्वाहा ।

ओं आं क्रों ह्रीं क्षेत्रपालं स्थापयामि स्वाहा । **(क्षेत्रपाल स्थापन करें ।)**

* जिनेन्द्र प्रतिमा स्थापना मंत्र *

ओं ह्रीं अर्हम् नम: परमेष्ठिभ्य: स्वाहा ।

ओं ह्रीं अर्हम् नमोऽनादि निधनेभ्य: स्वाहा ।

ओं ह्रीं अर्हम् नम: सुरासुरनरेन्द्रादि पूजितेभ्य: स्वाहा ।

ओं ह्रीं अर्हम् नमोऽनन्तज्ञानेभ्य: स्वाहा ।

ओं ह्रीं अर्हम् नमोऽनन्त दर्शनेभ्य: स्वाहा ।

ओं ह्रीं अर्हम् नमोऽनन्तवीर्येभ्य: स्वाहा ।

ओं ह्रीं अर्हम् नमोऽनन्त सुखेभ्य: स्वाहा ।

इन मंत्रों को पढकर वेदी पर मातृका यंत्र रखकर उसपर जिनेन्द्र प्रतिमा स्थापन करें । अन्य भी प्रतिमा हो तो वेदी में स्थापन करें । देव शास्त्र गुरू की पूजा कर इस विधान की समाप्ति करे । शांति विसर्जन करें । हवनादि करके वेदी प्रतिष्ठा कार्य पूर्ण कर, रथोत्सव करें साधर्मियों को भोजनादि देवें ।

नोट – अगर मंदिर प्रतिष्ठा हो तो भी सब कार्य वेदी प्रतिष्ठा के समान ही करें, संप्रोक्षण मात्र दर्पण प्रतिबिम्बका करें । एक बडे दर्पण में नवीन मंदिर का प्रतिबिम्ब पडता दीखे – उसी प्रतिबिम्ब का अभिषेक संप्रोक्षण करें ।

-- समाप्त --

व्रत समापन विधि

ओं आद्यानाम् आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे .... शुभ मासे ..... पक्षे तिथौ श्रीमदर्हत प्रतिमा सन्निधौ यद् व्रत गृहीत तस्य परिसमाप्ति करिष्ये .... अहं .....। प्रमादात् अज्ञानवशात् व्रते जापे मौने यानि दोषाः लग्ना तानि शांतिमुपयान्ति ओं ह्रीं क्ष्वीं स्वाहा श्रीमज्जिनेन्द्रचरणेषु आनन्द भक्तिः सदाऽस्तु, समाधिमरणं भवतु पाप विनाशनं भवतु । ओं ह्रीं अ सि आ उ सा नमः / ओं ह्रीं झ्वीं क्ष्वीं स्वाहा । सर्वशांतिर्भवतु स्वाहा ।

उद्यापन के समय व्रत निष्ठापन विधि

ओं अथ भगवतो महापुरूषस्य श्रीमदादि ब्रह्मणे मते त्रैलोक्य मध्यासीने मध्यलोके श्रीमदनावृतयक्ष सेव्यमाने दिव्य जम्बूवृक्षोपलक्षित जम्बूद्वीपे महनीय महामेरोर्दक्षिण भागे अनादिकालसंसिद्ध भरतनामधेय प्रविराजित षट्खण्डमंडित भरतक्षेत्रे सकलशलाका पुरूष संबंध विराजितार्यखण्डे परमधर्मसमाचरणप्रदेशे अस्मिन् विनेयजनमाभिरामे..... नगरे .... अस्मिन् दिव्य महाचैत्यालये एतदवसर्पिणीकालावसाने प्रवृत्त सुवृतधमौपमान्वित सकललोक व्यवहारे श्रीवृषभस्वामिपौरस्त्य मंगलमहापुरूष परिषत्प्रतिपादित परमोपशम पर्वक्रमे वृषभसेन सिंहसेन चारूसेनादि गणधर स्वामिनीरूपित विशिष्ट धर्मोपदेश पञ्चमकाले प्रथमपादे महतिमहावीर वर्द्धमान तीर्थंकरोपदिष्ट सद्धर्म व्यतिकरे श्रीगौतमस्वामि प्रतिपादित सन्मार्ग प्रवर्तमाने श्रेणिक महामंडलेश्वर समाचरित सन्मार्गावशेष वीर निर्वात संवत विक्रमङ्के मास तिथौ वासरे प्रशस्तत तारकायोगकरण नक्षत्र होरामुहूर्त लग्न युक्तायाम् अष्ट महाप्रातिहार्यशोभित श्रीमदत्परमेश्वर सन्निधौ आहं .... नाम व्रत निष्ठापन करोमि । ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ऱ्हौ ह्रः अ अि आ उ सा सर्वशान्ति भवतु सर्वकल्याण भवतु श्रीं क्लीं नमः स्वाहा ।

ध्वजा बनाने की विधि

प्रासादस्य ध्वजंचिह्न तेनासौ शोभतेयतः ।
शुभप्रदश्च सर्वेषां तस्मात्तमधिरोपयेत् ।।

ध्वजा से जिनमंदिरकी शोभा बढती है और सबको शुभप्रद है इसलिए मंदिरपर अवश्य ध्वजा चढाना चाहिए।

हस्तत्रि भागविस्तीर्णैरर्धहस्तायतैर्दृढः।
वस्त्रोत्तम सुसंश्लिष्टैर्ध्वजं निर्मापयेच्छुभम्॥

बारह अंगुल लम्बी और आठ अंगुल चौडी मजबूत उत्तम कपडे की ध्वजा बनावे।

सितं रक्तं सितंपित्तंसितंकृष्णं पुनः पुनः।
यावत्प्रासाद दीर्घत्वं तावत् संघादृयेत क्रमात॥

ध्वजा का कपडा सफेद लाल, सफेद पिला, सफेद काला फिर उसी प्रकार इसी क्रम से रंगवाली ध्वजा तैयार करें।

चंद्रार्धचंद्र मुक्तास्त्रक् किंकिणी तारकादिभिः।
नानासद्रूपयुग्मैश्चचित्रैः पत्रैर्विचित्रयेत्॥

उस ध्वजा में चंद्रमा, अर्धचंद्र, मोती की माला, छोटी-छोटी घंटियाँ, तारका आदि के द्वारा नाना समीचीन पशु पक्षी युगल, पत्रोंसे उस ध्वजा को नानाचित्रो से चित्रित करें।

अधच्छत्रत्रयं मूर्धस्तस्याधः पद्मवाहनम्।
तस्याधः कलशं पूर्ण पार्श्वयोः स्वस्तिकं लिखेत॥
दीपदंडौ लिखेत्स्वस्ति शिखायाः पार्श्वयोस्तथा।
पार्श्व योरातपत्रस्य श्वेतचामर युग्मकम्॥
मूर्धाधो धवलच्छत्रे ध्वजे वा यक्षमालिखेत्।
श्यामं चतुर्भुजं हस्त युग्मेन रचितांजलिम्॥
पराभ्यांदधतं मूर्ध्नि धर्मचक्रमृजुस्थितम्।
जिनबिंबोऽर्ध मूर्धाने ह्येक छत्र समन्वितम्॥
दीपदंडादि संयुक्तं नानालंकारणान्वितम्।
हस्तिपृष्ट समारूढं सर्वज्ञाख्यममुंलिखेत्॥
अशोकासन निर्यास चंपकाम्र कदंबकाः।

पत्रवंशादयोऽन्येऽपि दंडस्यभव भूरूहाः ।।

उस ध्वजा पर जिनबिंबका चित्र बनाकर उत्तमांगपर तीन छत्र, नीचे कमलवाहन, उसके नीचे पूर्ण कलश, उसके दोनो ओर स्वस्तिक लिखें। जिनबिंब के दोनों ओर दीपदंड व चंवर, छत्र, कलश के नीचे छत्र बनावें। अशोक चंपक आम्र, कदंब सुपारी आदि के वृक्ष चिह्नित करें। धर्मचक्र दोनों हाथों से मस्तकपर लिये हाथी की पीठ पर खडे सर्वाह्ण यक्ष का चित्र बनावे। उसके दोनों ओर भी दीपदंड, चंवर, स्वस्तिक बनावें। इत्यादि रीतिसे ध्वजा बनाकर ध्वजा की प्रतिष्ठा करें।

सदायायाम मानार्धं त्रिभागंवा चतुर्थकम् ।
ध्वजदंडस्य मानं तद्यथाशोभं प्रकल्पयेत् ।।

ध्वजा के दंडे का प्रमाण शोभा के अनुसार होना चाहिए। ध्वजा तीन भाग या चतुर्थ भाग आयाम वाली होना चाहिए। अर्ध आयाम वाली भी हो सकती है।

प्रासादस्यो र्ध्वं तुर्यांशे वेदिका वेदिका स्थितम् ।
आधारं ध्वजदंडस्य यथोक्तं परिकल्पयेत् ।।

मंदिर के चौथाई आयामवाली ध्वजा हो। मूल वेदिका के ऊपर भी ध्वजा चढाना चाहिए।

अथ मंडलनभ्यर्चय संक्षेपाद् ध्वज देवता ।
प्रतिमाप्यनादि सिद्धि मंत्रेणोष्टोत्तरं शतम् ।।

मंडल में स्थित प्रतिमाकी पूजाकर ध्वज देवता सर्वाह्णयक्ष की पूजा करके आगे कहे हुए मंत्रोंसे विधि करता हुआ १०८ बार णमोकार मंत्र का जाप्य करके ध्वजा को अच्छी तरह से दंड में बांधकर ध्वजारोहण मंत्र को बोलता हुआ शुभ लग्न में ध्वजा मंदिर के शिखरपर चढा देवे, या पीठ वेदी पर चढावें।

ध्वजश्चतुर्य संघेषु तत्र संयोज्यसंध्वजम् ।
ध्यात्वा सर्वगत ज्ञानरूपमर्धेण मानयेत् ।।
तस्य दंडमुद्धत्य प्रासादं परितः श्रिया ।
महत्या भ्रमयित्वा त्रिः सुलग्ने मंत्रमुच्चरण् ।।

चतुर्विध संघ का अच्छी तरह से सम्मान करके उनके सामने उस ध्वजदंड में मजबूती से बांधकर ध्वज की तीन प्रदक्षिणा लगाकर णमोकार मंत्र का जाप्य करता हुआ यजमान ध्वजा को मंदिर पर चढा देवे ।

ध्वजा रोहण विधि - आह्वान मंत्र

ओं ह्रीं सर्वाह्नयक्ष सहित सर्वध्वज देवते एहि-२ संवौषट् तिष्ट २ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । इदं स्नपनं अर्चनं च गृहाण गृहाण । इसी मंत्र से सर्वाह्ण यक्ष की आठों द्रव्यों से पूजा करें ।

ओं स्वस्ति भद्रं भवतु स्वाहा ।

उपरोक्त मंत्र से आह्वान स्थापनादि करके आगे की क्रिया करें ।

विधि = सर्वौषधि सहित नौ कलशों की स्थापना करके जलशुद्धि मंत्र से जल मंत्रित करके, सर्वाह्ण यक्ष की मूर्ति के सामने अथवा ध्वजपट के सामने दर्पण स्थापन करें और भी गंध, अक्षत, पुष्पादिक मंगल उपकरणादि आगे स्थापन करके ध्वज-पट के दर्पण में प्रतिबिम्बका, उपरोक्त मंत्र से अभिषेक करे । साथ में सर्वाह्ण यक्ष की मूर्ति का भी अभिषेक करें - पंचामृत से फिर आह्वानादि करके मंत्र से पूजा करें । फिर मुख वस्त्र, नयनोन्मीलन विलेपनादिं करके ध्वजा चढावें ।

* नयनोन्मीलन मंत्र *

ओं श्रीं ह्रीं अर्हम् नमः णमो अरिहंताणं सर्वाह्णयक्षाय धर्म - चक्र विराजिताय चतुर्भुजाय श्यामवर्णाय, गजाधिरूढाय सर्वजन नयनाह्लादनकराय नयनोन्मीलनमहं करोमि स्वाहा ।

ओं श्रीं ह्रीं अर्हम् नमः णमो अरिहंताणं क्षेत्रपालाय श्यामवर्णाय यथोचित लक्षण लक्षिताय सर्वजन नयनाल्हादन कराय नयनोन्मीलनमहं करोमि स्वाहा ।

इस मंत्र से ध्वजपट पर चित्रित सर्वाह्णयक्षके चित्र का नयनोन्मीलन करें। सोने की शलाका को दोनों आँखों पर फेरें । यक्षचित्र की आँखो में (इस प्रकार ध्वजा पर देवता की प्रतिष्ठा हुई ।

अशोकश्चाम्र पत्राणां दर्भ मालाभिवेष्टितम् ।

कोकिलात्रितय स्थाग्र वेणुदंड समन्वितम् ।।
ध्वजदंडं समभ्यर्च्य मेरूपीठ पुरस्कृतं ।
गर्ते शाल्यादि निक्षिप्य पूजये स्थापये दृढं ।।
ध्वनत्सुतूर्य संघेषु सुमुहूर्ते शुभोदये ।
संवंद्य तं ध्वजं यज्वा तं दंडाग्रे यथा दृढं ।।

तीन कोकिलासे संयुक्त बाँसदंड को दर्भमालासे वेष्टित करके अशोक आम्रादिके पत्तोंको बांधे । फिर ध्वजदंड की अर्चना कर, ध्वज-रोपण के गर्त में शाल्यादि डालकर अर्घ्य चढावे । फिर नाना भांतिके वादित्र बजाते हुए ध्वजा को दंडे में बांधकर ध्वजारोहण कर देवे । सब लोग णमोकार मंत्र पढे । प्रतिष्ठाचार्य निम्नोक्त ध्वजारोहणमंत्र पढकर ध्वजा रोहण करा देवें। मंदिर पर या ध्वजारोहण वेदीपर। ध्वजारोहण करते समय यजमान, प्रतिष्ठाचार्यादि ध्वजा पर अक्षत पुष्प वृष्टि करें।

* ध्वजारोहण मंत्र *

ओं णमो अरिहंताणं स्वस्ति भद्रं भवतु सर्वलोके शांतिर्भवतु स्वाहा ।

अशोकासन निर्य्यास चंपकाम्रकदंबकाः ।
पूग वंशादयोऽन्येऽपि दंडानांशुभ भूरूहा ।।

अशोक आम्र चंपक, कदंब, सुपारी आदि शुभवृक्षों को । ध्वजा पर चित्रित करें फिर ध्वजदंडको बांधे (आशाधर प्रतिष्ठासारोद्धार)

* मंदिर पर ध्वजा चढाने व ध्वजा फडकनेका फल *

यावंतः प्राणिनः केतौलग्नाः कुर्युः प्रदक्षिणाम् ।
तावंतः प्राप्नुवंत्यत्र क्रमेण विमलं पदं ।।

जितने भव्य प्राणि इस ध्वजारोहण महोत्सव में भाग लेते हैं, जब तक यह ध्वज मंदिरपर रहती है तब तक जीवों का कल्याण होता रहता है ।

मुक्ते प्राचींग ते केतौ सर्व कामानवाप्नुयात् ।

उत्तराशांगते तस्मिन् स्वस्यारोग्यं च संपदः ।।

यदि पश्चिमतो याति वायव्ये वा दिशाश्रये ।

ऐशाने वाततो वृष्टिः कुर्यात्केतुः शुभानिसा ।।

अन्यस्मिन् दिग्विभागे तु केतौ मरूद्वशात् ।

शांतिकं तत्र कर्तव्यं दान पूजा विधानतः ।।

ध्वजा का प्रथम–पूर्व दिशा में फडकने का फल – सर्व कामना सिद्धि ।

उत्तरदिशामें फडकने का फल – आरोग्य संपदा लाभ ।

पश्चिम, वायव्य, ऐशान दिशा में फडकने का फल – शुभ वर्षा ।

अन्य दिशा में हवा के जोर से ध्वजा फडकना अशुभ है – जिससे दान पूजा करके शांति करनी चाहिए ।

※ शिखर के कलश से ध्वजा की ऊँचाई और उसका फल ※

कलशादुच्छितं हस्तं ध्वज निरोगता भवेत् ।

द्विहस्तमुच्छिते तस्मात् पुत्रर्द्धि र्जायते परा ।।

त्रिहस्तं सस्य संपत्ति नृपवृद्धिश्चतुः करम् ।

पंच हस्तं सुभिक्षं स्याद् षष्ट वृद्धिश्च जायते ।।

मंदिर कलश से एक हाथ ऊँची ध्वजा – निरोगता प्रदान करती है ।

दो हाथ ऊँची ध्वजा – पुत्रादि की वृद्धि होती है ।

तीन हाथ ऊँची ध्वजा – संपत्ति की वृद्धि होती है ।

चार हाथ ऊँची ध्वजा – राज्य वृद्धि, राजादि को सुख

पाँच हाथ ऊँची ध्वजा – सुभिक्षता को करती है ।

छह हाथ ऊँची ध्वजा – वृद्धि

अंवरेण कृतोऽयं स्याद् ध्वजः सम्यक् समंततः ।

सोऽति लक्ष्मी प्रदो राज्ये यशः कीर्तिः प्रतापदः ।।

भूपाल बाल गोपाल ललनानां समृद्धि कृत ।

राज्ञां सुखार्थ दायीच धान्यैश्वर्य जयावह ।।

अंबर (कपडे की) की बनाई हुई ध्वजा अत्यंत लक्ष्मी को देने वाली तथा राज्य

में यश को फैलाने वाली होती है । राजा बाल गोपाल स्त्रियों को समृद्धि करनेवाली होती है । राजाओं को सुख, इच्छित दायी और धान्य, ऐश्वर्य, जय को देनेवाली होती है । (आशाधर प्रतिष्ठा...)

* जिनालय पर कलशारोहण विधि *

नतामर शिरोरत्न प्रभाद्योतन रव धुत्विषे
नमो जिनाय दुर्वार मार वीर मदच्छिदे
सिद्धान् साधुत्रिकं चैव भारती वै प्रणम्यच
अहं वक्ष्यामि कुंभस्य समारोहण संविधिं

तत्रादौ महर्षीणां पर्य्युपासनं

-: शिखरिणी :-

सदा पंचाचार व्रत परिचितं सूरि मनघं ।
श्रुतायाराध्यं तं श्रुतजलधिपारं परतरं ।।
निरस्ताशं साधुं दृगवगम चारित्र निरतं ।
स्तुवे स्याद्वादाढ्यं सकलगुणभूषं त्रिपुरूषं ।।

ओं ह्रीं रत्नत्रय भूषित महर्षि गण ! अत्रावतरत अवतरत संवौषट् ।अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः । अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

– मालिनी –

सकलजनकलंक क्षालनैर्व्योमगंगा ।
विमलमधुशैत्यस्यर्चिमिस्तीर्यवार्भिः ।।
दृगवगमचरित्र श्रीलता वर्द्धनीयैः ।
वयमिह तु यजामः सूर्य्यपाध्यायसाधून् ।।

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र संयुत महर्षिभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

सुरभिशिशिरकांति श्लाघ्यनिस्फार वृंदैः ।
दिगधियवर कल्यानासिकास्वादनायैः ।।
अनुप मनुलेपैरिंदु काश्मीर मिश्रैः ।
वयमिह तु यजामः सूर्य्यपाध्यायसाधून् ।।

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र संयुत महर्षिभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।।२।।

विजिन वधुविलासै रिद्ध मुक्ताफलोघै: ।

इह जगति सुभिक्षं साधु संपाद यद्भि: ।।

विशद सदक पुंजै: पुण्ययुंजानुकूलै: ।

वयमिह तु यजाम: सूर्य्यपाध्यायसाधून ।।

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र संयुत महर्षिभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।।३।।

प्रचुर परिमलौधै: प्राप्तदिक् चक्रवालै: ।

निपत कलिकदुग्रै: कल्पभू नातजातै: ।।

बकुल विकसितांभो जात जाती प्रसूनै: ।

वयमिह तु यजाम: सूर्य्यपाध्यायसाधून् ।।

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र संयुत महर्षिभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।

रजतशिखर भूभृत् सार शुभ्रप्रकाशै: ।

विपुल कनकपात्र स्थापितैर्दिव्यहव्यै: ।

हृदय नयनसारा मोदिभिर्व्यंजनाधै:

वयमिह तु यजाम: सूर्य्यपाध्यायसाधून् ।।

ओं ह्रीं रत्नत्रयसंयुत महर्षिभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।

घृणिभिरखिल लोकालोकमालोकयद्भि: ।

त्वरित मतिरवेश स्थानवद् शोभयद्भि: ।।

रविभिरिवविकाशैर्वैदिशां दीप्यमानै: ।

वयमिह तु यजाम: सूर्य्यपाध्यायसाधून् ।।

ओं ह्रीं रत्नत्रयसंयुत महर्षिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

मरकतमणिबद्ध स्वर्ग शोभाय शोभां ।

वियतिविचययिद्भि: सर्वभव्य प्रजानां ।।

सुरभिभरिह धूपै जीमूत रूपै: ।

वयमिह तु यजाम: सूर्य्यपाध्यायसाधून् ।।

ओं ह्रीं रत्नत्रयसंयुत महर्षिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।

प्रतिनवपरिपाकदर्जिता मोदपूर्णैः ।
कनक रूचिर वर्णैः चोचमोचाम्र भेदैः ।।
शुभतरूफल सार्थः सत्फल प्राप्तिहेतो ।
वयमिह तु यजामः सूर्य्यपाध्यायसाधून् ।।

ओं ह्रीं रत्नत्रयसंयुत महर्षिभ्यो महामोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।८।।

ऋषियतिमुनिमुख्यान् सानगारान् जलाद्यैः ।
जगति भजति यो सौ शुद्धवाक्कायचित्तः ।।
यदिह सकल भव्याश्चारु सम्यक्त्व लक्ष्मीं ।
अनुपमगुणभूषं शांति वृद्धिं विधत्ते ।।

ओं ह्रीं रत्नत्रयसंयुत महर्षिभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।९।।

परमजिनमतोद्यत् सूर्य्युपाध्याय साधून ।
क्रमकमलसमीप स्वर्ण भृंगारनालात् ।।
त्रिभुवनजनताया वारिधारा विमुक्ता ।
भवभय परिताप ध्वंशिनीमायुनातु ।।

शान्तये शान्तिधारा ।।

* कलशार्चनम *

(तदनु जिनमंदिरोपरिम भागे इह भगवत् पादपीठे दिव्यं प्रसाधनं कृत्वेदं कलशं पुनः अनादिसिद्ध मंत्रितं विधेयं ।)

ओं ह्रीं अनाहतसिद्धविद्यायै अ सि आ उ सा ह्रीं स्वाहा ।

अनेन मंत्रेण जलगंधादि समर्च्चताऽवयवः कुंभो विधियते ।

अनुष्टुप - पूज्य पूजावशेषेण गोशीर्षेणा ह्रतालिना ।
देवदेवाधि सेवायैः कलशं चर्चयेऽधुना ।।

ओं ह्रीं कलश चंदनानुलेपनं करोमि ।

जिनांघ्रिस्पर्शमात्रेण त्रैलोक्यानुग्रह क्षमा ।
इमाः स्वर्गारमाट्टत्यो धार्याकुंभेवरस्त्रजः ।।

ओं ह्रीं कलशोपरि पुष्पमाला धारणं ।

इदममलिन सम्यग्दर्शनज्ञान देश – ।
व्रतयमचरतात्मा कार्म्मिके ब्रह्मचर्ये ।।
स्फुरदरभुपवाशेऽनादिरत्नत्रयांते ।
नवतु भगवदर्हन् मंदिरे स्वर्णकुंभं ।।

ओं ह्रीं स्थानात् स्थानान्तरे कलशस्थापनं करोमि ।

गंगाद्युत्तम तीर्थाना, वार्जातेकलशस्थितैः ।
जिनेन्द्र भुवने तुंगे, सुकुंभं क्षालयाम्यहं ।।

ओं ह्रीं भृंगारादिना कलश क्षालनं करोमि ।

चंदनैश्चंद्रसंकाशैः कर्पूरादि विमिश्रिते ।
अंसे कुंभंजिनेंद्रस्य प्रासादस्योपरि स्थितं ।।
(चंदनानुलेपनलिप्तं पुनरपि कुंभुं विधियते)

ओं ह्रीं परमब्रह्मणे नमोऽस्तु ३

ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः हं सः स्वाहा । ओं स्वस्ति २ । जीव जीव नंद नंद वर्द्धस्व वर्द्धस्व विजयस्व अनुशाधि अनुशाधि पुनीहि पुनीहि पुण्याहं पुण्याहं मांगल्यं मागल्यं कुरु कुरु पुष्पाञ्जलिं ।।

पुनः दर्भकुश, पीली सरसों (सिद्धार्थ) आदि गृहित्वा कुंभं जलैरभिषिंचनीयं ।

* दिग्पाल पूजा *

ओं आं क्रों ह्रीं इंद्राग्निदंड धरनैऋत्यादि दश दिग्पाला अत्रागच्छत–२ इदं अर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरू दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं च यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।

- क्षेत्रपालार्चनं -

ओं आं क्रों ह्रीं पंचक्षेत्रपालदेवा ! अत्रागच्छत–२ इदं अर्घ्यं पाद्यं.... स्वाहा।

- वास्तुदेवार्चनं -

ओं आं क्रों ह्रीं वास्तुदेवा ! अत्रागच्छत–२ इदं अर्घ्यं.... स्वाहा ।

* कलशोपरि दुग्धाभिषेचनं *

शुद्धेनापि सुदुग्धेन, कुंदवद् धवलेन च ।
सिंचयामि जिनेंद्रस्य, प्रासादस्योपरिस्थितं ।।

ओं ह्रीं कलशोपरि दुग्धाभिषेचनं करोमि स्वाहा ।

इंदुवद्‌धि सदेनैक, पिच्छलेन घनेनच ।
दधिना क्षालयाम्यत्र स्वर्णकुंसुप्रभावहं ।।

ओं ह्रीं कलशोपरि दध्नाभिषेचनं करोमि स्वाहा ।

स्वर्णवर्ण निभेनैव सौरभ्येण सुसर्पिषा ।
कुंभं संस्नापयाम्यत्र तीर्थकृन्मंदिरे स्थितं ।।

ओं ह्रीं कलशोपरि घृताभिषेचनं करोमि स्वाहा ।

तत्काल पीलितेक्षूणां रसेन प्रचुरेण च ।
जिनप्रासादकुंभस्यप्रक्षालनं करोम्यहं ।।

ओं ह्रीं कलशोपरि इक्षुरसाभिषेचनं करोमि स्वाहा ।

सुरापगादि तीर्थाना–मुद्भवैर्वारि संचयैः ।
प्रक्षालयामि सत्कुंभं तीर्थकृद भवने स्थितं ।।

ओं ह्रीं कलशोपरि तीर्थजलाभिषेकं करोमि स्वाहा ।

* अथ शंकु पूजा प्रतन्यते *

(मंदिर के शिखर पर शंकु है जिस शलाका में स्वर्णकलश रखना है, उस शलाका की पूजा । शंकु (शलाका) पूजा प्रारंभ करते हैं ।)

सदाकर प्रभूताना – मयसां संचयेन च ।
प्रकल्पितं सुवृत्तं च शंकु संस्थापयाम्यहं ।।१।।

ओं ह्रीं परम ब्रह्मणे मंदिरोपरि स्थिताय सुशंकवे जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलयाद्रि समुत्पन्नैश्चंदनैर्गंध संयुतैः ।
अर्चे शंकुं जिनेन्द्रस्य भवनोपरि संश्रितं ।।२।।

ओं ह्रीं परम ब्रह्मणे मंदिरोपरि स्थिताय सुशंकवे चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तंदुलैरमलैः पुण्यैः शशिखंड समुज्ज्वलैः ।

पूजयामि महच्छंकुं शिखरे च समुत्थितं ।।३।।

ओं ह्रीं परम ब्रह्मणे मंदिरोपरि स्थिताय सुशंकवे अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रसूनैः पारिजाताधैः, सद्रं धैरलिलं कृतैः ।

प्रयजेऽहं सु भद्राख्यं शंकुसतकुंभ हेतवे ।।४।।

ओं ह्रीं परम ब्रह्मणे मंदिरोपरि स्थिताय सुशंकवे पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेधैर्विविधै र्रम्यैर्मोदकादि सुभक्षकैः ।

समर्चे शंकुकं भव्यं, सिद्धकुंभस्य हेतवे ।।५।।

ओं ह्रीं परम ब्रह्मणे जिनमंदिरोपरि स्थिताय सुशंकवे नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतकर्पूर संमिश्रै र्दीपव्रातैः प्रभासकैः ।

प्रयजामो लसच्छंकुं, सत्कुंभ स्थैर्य हेतवे ।।६।।

ओं ह्रीं परम ब्रह्मणे जिनमंदिरोपरि स्थिताय सुशंकवे दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्पूरागुरू संभूतै धूपैर्वासित दिक्चयैः ।

यजेहं शिखरारूढं शर्मकुंभस्य हेतवे ।।७।।

ओं ह्रीं परम ब्रह्मणे जिनमंदिरोपरि स्थिताय सुशंकवे धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सत्फलैर्बीजपूरा द्यैश्चोचमोचाग्र मिश्रितैः ।

समर्चे दीर्घवृत्ताढां सु–शंकुं शर्म हेतवे ।।८।।

ओं ह्रीं परम ब्रह्मणे जैनमंदिरोपरि स्थिताय सुशंकवे फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भागीरथी प्रमुखतीर्थ समुद्भवानां ।

तोयैः स चंदनरसैः कलमाक्षतौधैः ।।

पुष्पैश्च चारुचरु भिश्च सुदीपकैश्च ।

धूपैः फलैरतुलमर्घमहं ददेऽत्र ।।

ओं ह्रीं परम ब्रह्मणे जैनमंदिरोपरि स्थिताय सुशंकवे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावानां व्यंतरा भौमाः कल्पजाश्चपरे सुराः ।

सर्वे देवाः प्रयच्छन्तु मांगल्यं सौख्यमेव च ।।

(उपरोक्त श्लोक पढकर जिनालयपर पुष्पाञ्जलि छोडे)

* शंकु के ऊपर कलशारोहण विधि *

प्रथम हेमकलश पीठिका विधान –

श्रीमज्जिनेन्द्र भवनेऽत्र सुकूटके च ।
शंकूपरिस्थगित कूटशिरः प्रदेशं ।।
सद् हेमयुं च घटितस्य सु कुंभकस्य ।
धाम्नासुदीप्तमधिपीठ मलं करिश्नुः ।।

ओं ह्रीं परमब्रह्म जिनमंदिरोपरि कूटशिर: प्रदेशे हे भद्रकुंभ महापीठ ! अत्र चिरस्थायी भवभव । सर्व प्रजानां क्षेमायुरारोग्य वृद्ध्यर्थं तिष्ठ–२ यज्ञयाजक यजमानादीनां सर्व सौख्य विधानार्थं प्रत्यूह प्रणाशनार्थं च हेमाद्रिरिव अत्र शिखरोपरि प्रथम स्थाने कल्पांत स्थायी भव–भव इति स्थापनं । (इति कलशाधिपीठ् रोहण विधानं)

अनुष्टप – **वृत्तास्थूला प्रदीप्ताच चक्रवत् चक्रिका च सा ।**
आदि पीठे परिस्याप्या स्वर्णकुंभाधिरोहणे ।।

ओं ह्रीं परम ब्रह्ममजिनालयोपरि भद्रकुंभ स्थितीकरणार्थं आदिपीठोपरि चक्रकाधिरोहणं कुर्वे । हे हाटकमयचक्रिके ! अत्र शिखर शिर: प्रदेशे द्वितीय स्थाने चिरं तिष्ठ तिष्ठ (इति चक्रिका स्थापन)

(उपरोक्त मंत्र पढकर चक्रिकारोहण करना । द्वितीय चक्रिका विधान ।)

(निम्नोक्त श्लोक, मंत्र पढकर कुंभपद्माधिरोहणविधि कार्य:)

दलैः षोडशकै व्याप्तं कनत्कांचन भासुरं ।
सौवृतं सर्वतोभद्रं कुंभपद्मं विदध्महे ।।

ओं ह्रीं परम ब्रह्मजिनमंदिरोपरि कल्याण कलश स्थैर्यार्थं चक्रीकोपरि तृतीय स्थाने हेमपद्माधिरोहणं कुर्म्मः । हे जातरूपाकृते षोडशदलालं कृतपद्मपीठ अत्र जिनेद्र भवनोपरि नित्योत्सवार्थं चिरं तिष्ठ तिष्ठ।

(निम्नोक्त श्लोक मंत्र पठित्वा तत्पद्मोपरि चक्रीका समारोप्या)

* चतुर्थ विधि *

वृत्तास्थूला सुसंतप्ता नानारत्नैः समाश्रिता ।

चक्रवच्चक्रिका रम्या स्थाप्या कुंभाधिरोहणे ।।

ओं ह्रीं परमब्रह्मणे नमः । श्रीजिनेन्द्र मंदिरोपरि कुंभाधिरोहणे कुंभपद्मोपरि चतुर्थ स्थाने हिरण्यमयी चक्रीका विधेया – हे तपनीयप्रभाभासुरे चक्रिके ! अत्र जिनेन्द्र मंदिरोपरि कलश प्रतिष्ठापन विधौ जनिता विघ्नविनाशनार्थ चिरं तिष्ठ तिष्ठ ।

(निम्नोक्त श्लोक एवं मंत्र उच्चारण करके कुंभस्थाल्यावरोहणं कुर्यात्)

* पंचमविधि *

वैडूर्यादिसु दीप्तरत्नखचिता गांगेय रूपाशुभां ।
सौवर्णादि गुणान्वितासु विधिना निर्मापिता मंजुला ।।
सौवृत्ता सुदृढासु पावनखनि मध्ये तु कुंभस्य च ।
स्थाप्या भाग्यविवर्द्धनी प्रगुणिता स्थालि सु सत् शर्मदा ।।

ओं ह्रीं परमब्रह्मजिनालयोपरि मंगलकलशस्थिती करणार्थं चक्रिकोपरि पंचम स्थाने हेमकुंभ स्थाल्यावरोहणं कुर्मः सुवर्ण धृतिदीप्तांगे हे भद्रकलश स्थालिके ! अत्र तीर्थकृन्मंदिरोपरि योग क्षेमादि सिद्धयर्थ चिरंतन कालावधिं तिष्ठ–तिष्ठ ।

(निम्नोक्त मंत्र पढकर कुंभचक्रिका का रोहण करें)

* षष्ठ विधि *

दीप्तास्थूला सुवृत्ता च चक्रवत् चक्रिका मता ।
स्थाल्योपरि सुसंस्थाप्या भव्यकुंभाधिरोहणे ।।

ओं ह्रीं परमब्रह्मजिनमंदिरोपरिम क्षेत्रे कल्याणकलशारोहणार्थं स्थाल्योपरितन भागे चामीकरमय चक्रिकाधिरोहणं कुर्मः सद्माभार विराजितहिरण्य चक्रिके ! अत्र जिनभवनोपरि शिखरशिरः प्रदेशे दुष्टनिग्रह शिष्ट परिपालनार्थं चिरकालं तिष्ठ तिष्ठ ।

* सप्तम विधि *

(इस श्लोक, मंत्र को पढकर कुंभ के ऊपर चूलिका को रखे, फिर शिखर पर ध्वजा चढावे)

व्योम्निस्थापनलालसैक निपुणा मेरू रिवस्पर्धिनी ।
प्रोनत्येन विदूर दर्शनतया प्राप्तास्ति सौ वर्णिकी ।।
ज्योतिर्देवगतिस्खलंत्यतिरुचा भास्वद्भि भाव्योमनि ।

स्थाप्या कुंभ सु चूलिका जिनगृहे देवालयस्योपरि ।।

ओं ह्रीं परम ब्रह्मजिनालयोपरि शिखरोपरि परम मंगल कलशाधिरोहणार्थं चक्रिकोपरितन क्षेत्रे सप्तम स्थाने शातकुंभमयकुंभं चूलिकारोहणं कुर्म: हे चामीकर मयमूर्तेकलशाग्र निवासिनि कनकमयकुंभचूले अत्र जिनगृहोपरि कलशशिर: प्रदेशे सर्वप्रजानां शांति सिद्धि समृद्धि तुष्टि पुष्टि योगक्षेमादि सिद्धयर्थं आकल्यं चिरं तिष्ठ तिष्ठ स्थिरा भव-२

(निम्नोक्त श्लोक पढकर कलश के ऊपर पुष्पमाला चढावे)

चंदन द्रवेण कलशस्य सर्वावयवार्चनम्:

मंदारपारिजाताद्यै: प्रसूनै: कल्पिता स्रज: ।
धार्याकुंभे समृद्धयर्थं, समारोहणसद्धिधो ।।

पंचवर्ण कलावे से कलश को बांधे ।।

पंचवर्णमयै: सूत्रै स्तंतुभि: सप्तभिपरै: ।
कुर्वे रक्षाभिधानं सत् कुंभकस्य च वेष्टनं ।।

(इस श्लोक को बोलकर पंचवर्ण कलावा से कलश को सात बार वेष्टन करें)

* आशीर्वाद *

- शार्दूल -

नाभेय प्रमुखांसुपुण्यजनका: सिद्धालये संस्थिता: ।
सिद्धाश्चाष्ट गुणैर्महर्षिपतय: सत्सूरयोऽभ्यर्चिता: ।।
जीवाजीवविवेचनैकमनश: सं पाठका साधवो ।
ब्रह्मज्ञान परायणाश्च गुरव: सिद्धि प्रयच्छन्तु न: ।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

उपरोक्त सब कलशारोहण विधि करके स्वस्तिनयनविधि पढे ।

पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें, शांतिधारा छोडे छोटावाला पुण्याहवाचन करके विसर्जन करें ।

नोट :- कलशरोहणविधि भी तीन दिन में करना चाहिए । प्रथमदिन 'शांतिचक्र मंडल' पूजा करें, वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव के समान ही सब कर लेवें । हवनादि

मंत्र जाप्य रथोत्सव कलश संप्रोक्षण घटयात्रादि सब करें प्रभावनापूर्वक कलशारोहण उत्सव करके जाप्यानुष्ठान भी यथाशक्ति करावे । जाप्य शांतिमंत्र का बडा या छोटा सुविधानुसार करवावे । कलश सोने तांबे या संगमरमरका भी चलता है ।

कलशारोहणविधि २०० वर्ष प्राचीन हस्तलिखित डायरी से लिखी गई है । यह डायरी मेरे पास है ।

* मंगल कलश स्थापना का संकल्प *

ओं आद्यानामाद्ये जंबूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे -----प्रदेशे ---- देशे----- ग्रामे----- जिन चैत्यालये, वीर निर्वाणसंवत्----- तमे विक्रम संवत------ मासोत्तम मासे पक्षे तिथौ वासरे विधानावसरे ---- यजमानस्थ हस्ताभ्यां मंगलकुंभ स्थापयामि । मंगल भवतु स्वाहा।

अखण्डदीप प्रज्वलन मंत्र

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हम् आद्यानमाद्ये जंबू द्वीपे भरतक्षेत्रे आर्य खण्डे ---देशे---- राष्ट्रे -----नगरे ----वीर निर्वाण संवत ---तमे संवत्सरे ---- मासे ----पक्षे तिथौ ----वासरे १००८ श्रीजिनालये विधानावसरे ----- -यजमानस्य हस्तेन अखण्डदीपज्योति प्रज्वालयामि स्वाहा ।

मंगलकलश स्थापनामंत्र

ओं आद्य भगवतो महापुरूषस्य श्रीमद आदि ब्रह्मणे मतेऽवसर्पिण्या दुषमा कालस्य प्रथम पदे संवत्सरे -----वीरनिर्वाण---- संवते ---अयने ---ऋतौ राशीस्थितेऽर्के उत्तमे मासे ---शुभपक्षे ---वासरे ---तिथौ, सर्वदूषण रहिते, अस्मिन् विधियमाने कार्ये गोत्रोत्पन्नोऽहं प्रपौत्र पौत्र पुत्र नामोऽहं नवरत्नगंधपुष्पाक्षतादि बीजपूर सुशोभित शुद्ध प्रासुकतीर्थ जलपूरित मंगल कलश स्थापनं करोमि झ्वीं क्ष्वीं हं स: स्वाहा।

मंगलकलश में डाले जाने वाले द्रव्य - साबूत मूंग, धनिया, हल्दी गांठ बडी ५ बडी सुपारी ५ चांदी का सिक्का (कलश में स्टील, लोहा न डाले, न ही स्टील जर्मन का कलश लेवें - मिट्टी का नया कलश अति शुभ) नवरत्न या

पंचरत्न, चांदी का स्वस्तिक फूल, लवंग, लाल तूल, नारिकेल केशर से कलश पर स्वस्तिक बनावें । दर्पण पान पत्र कलावा से त्रिवार वेष्टित कर सौभाग्यवती से स्थापित करावें ।

* यंत्रो की प्राण प्रतिष्ठा मंत्र *

पहले यन्त्रों का दुग्धादिक से सपन करे / न्हवन करें, यन्त्रपर सुगंध गंध का लेप करें, प्राण प्रतिष्ठा करके यन्त्र की पूजा करे । फिर स्थापन करें।

ओं ह्रीं हे यंत्रराज ! अत्रागच्छत २ । अत्र तिष्ठत २ अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् ।

ओं ह्रीं यंत्रराजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा । इस प्रकार गंधाक्षतादि के मंत्र बोलकर पूजा करें ।

ऋषिमंडल, सिद्धचक्र, गणधरवलय, कलिकुण्ड, भक्तामरादि बडे बडे यंत्रों की पूजा विशेष रीति से करें । प्राणप्रतिष्ठा होने तक तो ऊपर के अनुसार विधान करें फिर जो जो यंत्र है उसका पूजा विधान करें ।

- छोटे छोटे सर्व यंत्र प्राणप्रतिष्ठा मंत्र -

ओं ऐं ओं क्रों ह्रीं श्री क्लीं अ सि आ उ सा अयं जीवः चेतनोऽस्मिन् प्राणा:स्थिता यंत्र मंत्र तंत्राणां सर्वेन्द्रियाणि कायवाङ् मनश्चेह स्थापय स्थापय देहे वायुं पूरय पूरय संवौषट् चिरंजीवन्तु चिरं जीवन्तु।

बडे यन्त्रो की प्राण - प्रतिष्ठा

ओं ह्रीं क्रों अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ल ए ऐ ओ औ अं अ: कम्ल्व्र्यूं ठम्ल्व्र्यूं नम: परमात्मने ओं हं स: क ख ग घ ङ् ओं ह्रां णमो अरिहंताणं क्षम्ल्व्र्यूं स्थलदेवताया:

प्राणा: च छ ज झ ञ ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं पम्ल्व्र्यूं जलदेवताया:------

प्राणा: ट ठ ड ढ ण ओं ह्रूं णमो आइरियाणं रम्ल्व्र्यूं अग्नि देवताया: प्राणा: त थ द ध न ओं ह्रौं णमो उवज्झायाणं सम्ल्व्र्यूं वायु देवताया: प्राणा: प फ ब भ म ओं ह्र: णमो लोए सव्व साहूणं खम्ल्व्र्यूं आकाशदेवताया: प्राणा: य र ल व श ष स ह ओं णमो अरिहंताणं केवलिणो मम्ल्व्र्यूं आनन्द देवताया:

प्राणा इह स्थिता सर्व यंत्र मंत्र तंत्राणां सर्वेन्द्रियाणि काय वाङ्मनश्चक्षु श्रोत्र घ्राण जिव्हेन्द्रियाणि प्राणा देहे वायुं पूरय पूरय । रूचितांगाणि चिरं तिष्ठंतु चिरं जीवन्तु ऐं क्षीं ओं नमः स्वाहा ।

(नोट – रिक्त स्थानों में यंत्र का नाम उच्चारण करें ।)

* जपमालिका प्रतिष्ठा विधान *

कैसी माला न हो = मिट्टी, पत्थर, प्लास्टिक, हड्डी, हाथी दांत, डिस्को की माला न हो न जाप दो ।

मालाऐं कौनसी हों = सोना, चांदी, मुंगा, शुद्ध मोती, शुद्ध स्फटिक, पन्ना हिरा, पुखराज आदि रत्नों की हो । सूत की माला भी श्रेष्ठ है । सफेद लाल पीली केशरियाँ । रंगवाले सूत की । (गांठ वाली माला न हो जाप निष्फल होते)

माला बनाने की विधि – नयी माला अच्छे मुहूर्त में पिरोवे, अर्हम का जाप करते हुये पिरोवे । माला पिरोने के बाद ओं ह्रीं अर्हम नमः का जाप्य करते हुये उस माला को पंचामृत में धोना चाहिए । श्री जिनेन्द्र प्रतिमा के सामने एक थाली में माला रखें

ओं ह्रीं रत्नैः सुवर्ण बीजैर्यारचिता जपमालिका सर्व मंत्र जापेषु सर्वाणि वाञ्छितानि प्रयच्छन्तु स्वाहा । इस मंत्र को १०८ बार जपते हुए माला पर अक्षत मिले पुष्प क्षेपण करते जावें । पश्चात माला पर कुंकुम पुष्पादि अर्पित करें । फिर माला को मस्तक पर लगाकर जपने के काम मे लेवें । (जिस धातु या सूत की हो मंत्रप्रतिष्ठा में उसका नाम लेवे जैसे रजत बीजैर्.....)

मंडप वेदी भूषणम्

(मंडप वेदी की सजावट)

मंगल द्रव्याष्टकं :-

१) छत्र – ओं श्वेतच्छत्रश्रियै स्वाहा । छत्र स्थापनम्।

२) दर्पण – ओं अद्रीश्रियै स्वाहा । दर्पण स्थापनम् ।

३) ध्वज – ओं ध्वजश्रियै स्वाहा । ध्वज स्थापनम् ।

४) चंवर युग्म – ओं चामरश्रियै स्वाहा । चंवरयुग्म स्थापनम् ।

५) तोरण – ओं तोरणश्रियै स्वाहा । तोरण स्थापनम् ।

६) तालवृंद (पंखा) – ओं तालवृंतश्रियै स्वाहा । पंखा (बिजना) स्थापनम् ।

७) दीप – ओं दीपश्रियै स्वाहा । दीप स्थापनम् ।

अथ आयुधाष्टक स्थापनम्

१) ओं ऐंद्रीज्यै स्वाहा । वज्र स्थापनम् पूर्व

२) ओं वैष्णव्यै स्वाहा । चक्र स्थापनम् दक्षिण

३) ओं कौमार्यै स्वाहा । तरवार स्थापनम् पश्चिम

४) ओं वाह्रिकायै स्वाहा । हल स्थापनम् उत्तर

५) ओं ब्रह्मण्यै स्वाहा । मूसल स्थापनम् आग्नेय

६) ओं लक्ष्म्यै स्वाहा । गदा स्थापनम् नैऋत्य

७) ओं चामुंड्यै स्वाहा । शक्ति (दंड) स्थापनम् वायव्य

८) ओं रूद्राण्यै स्वाहा । भिंडिमाल स्थापनम् ईशान

अथ पताकाष्टकम

१) ओं [illegible] स्वाहा । पीतवर्ण पताका स्थापनम् पूर्व

२) ओं पद्मायै स्वाहा । पद्म (लाल) वर्ण पताका दक्षिण

३) ओं मेघमालिन्यै स्वाहा । कृष्णवर्ण पताका

४) ओं मनोहरायै स्वाहा । हरिद्वर्ण पताका नैऋत्य

५) ओं चन्द्रमालायै स्वाहा । श्वेतवर्ण पताका पश्चिम

६) ओं सुप्रभायै स्वाहा । नीलवर्ण पताका वायव्य

७) ओं जयायै स्वाहा । श्यामवर्ण पताका स्थापनम् उत्तर

८) ओं विजयायै स्वाहा । पंचवर्ण पताका स्थापनम् ईशान

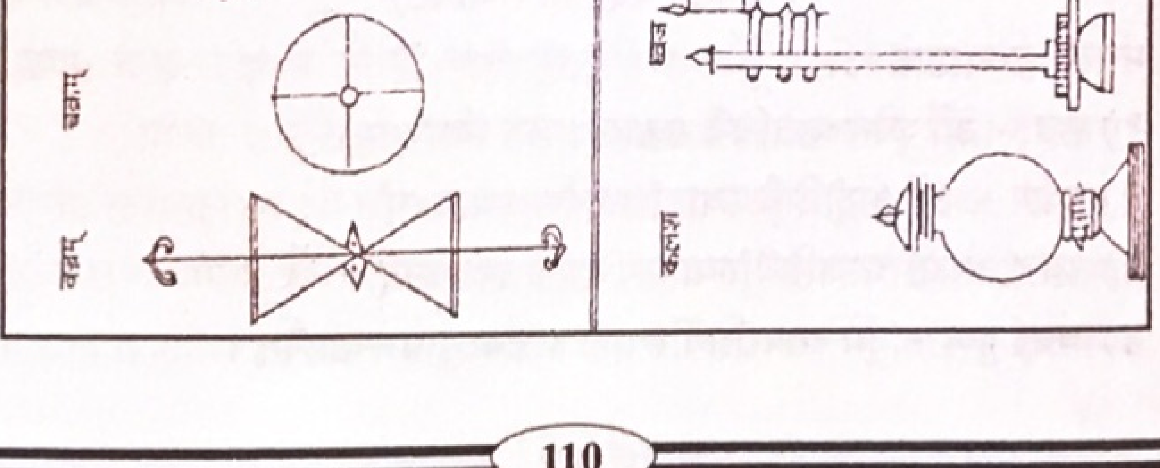

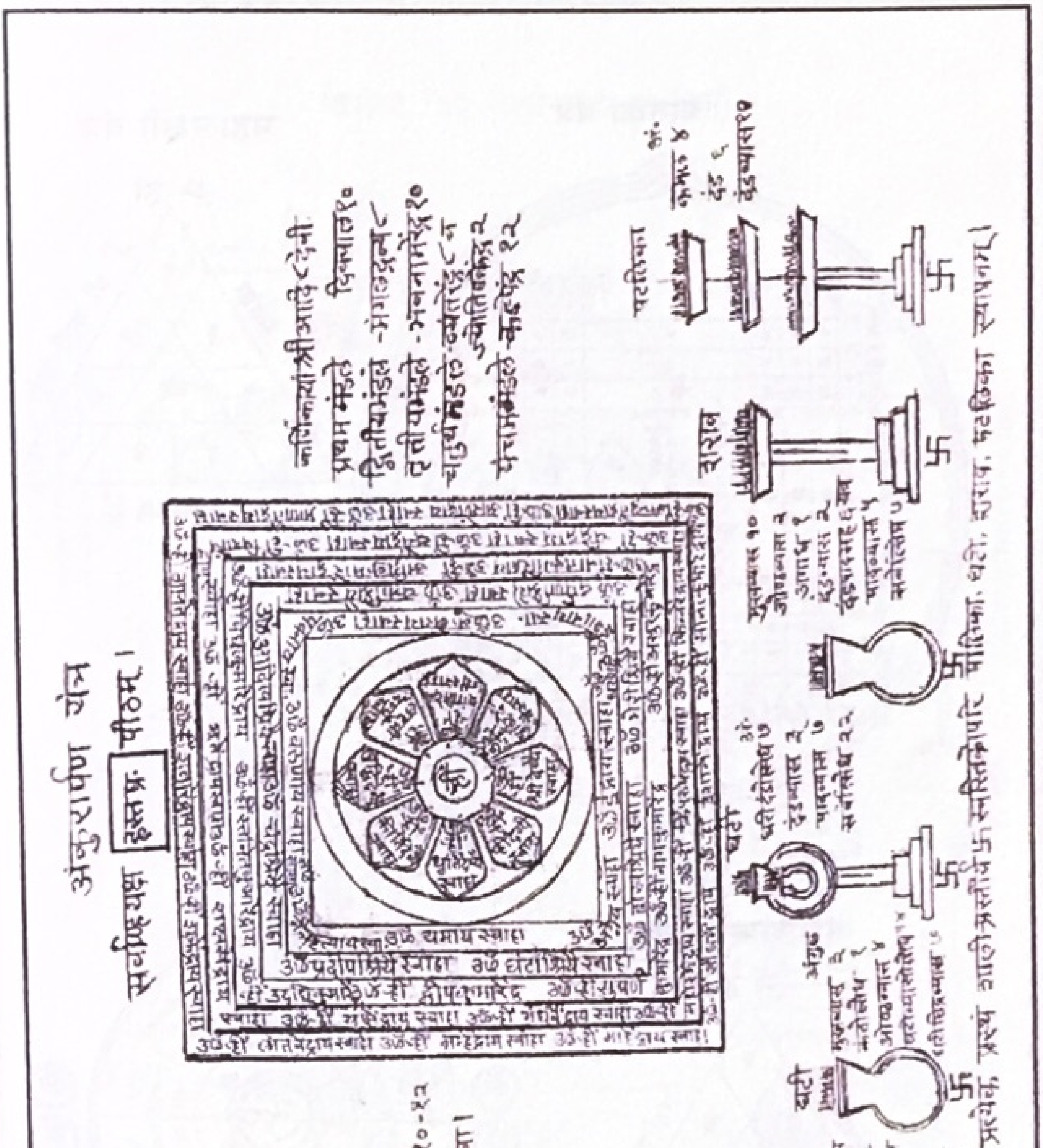
अंकुरार्पण यंत्र
सर्वाह्नयक्ष पीठम्।
पालिकादि प्रत्येकं ८-१०-१२
अक्षर दिनसंख्या वा।
कर्णिकायां श्री आदि ८ देवी
प्रथम मंडले दिक्पाल १०
द्वितीयमंडले - मंगलद्रव्य ८
तृतीयमंडले - भवनामरेंद्र १०
चतुर्थमंडले - व्यंतरेंद्र ८ व ज्योतिष्केंद्र २
पंचममंडले - कल्पेंद्र १२
पालिका
घटी
शराव
पटलिका
प्रत्येक प्रत्यं शालीप्रस्तीर्य स्वस्तिकोपरि पालिका, घटी, शराव, पटलिका स्थापनम्।

मातृका यंत्र

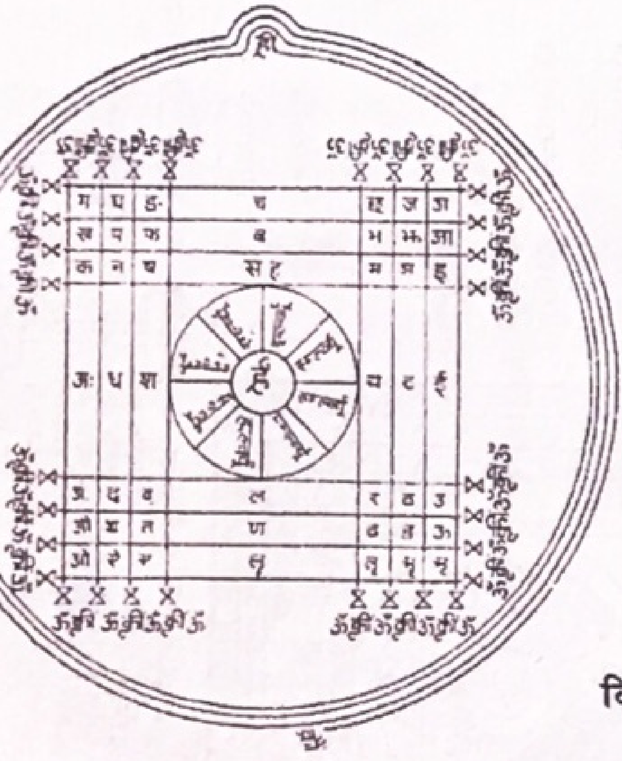

महालक्ष्मी यंत्र

विनायक यंत्र

अक्षीणऋद्धि यंत्र

ध्वजपट चित्र (सर्वाण्हयक्ष का चित्र)

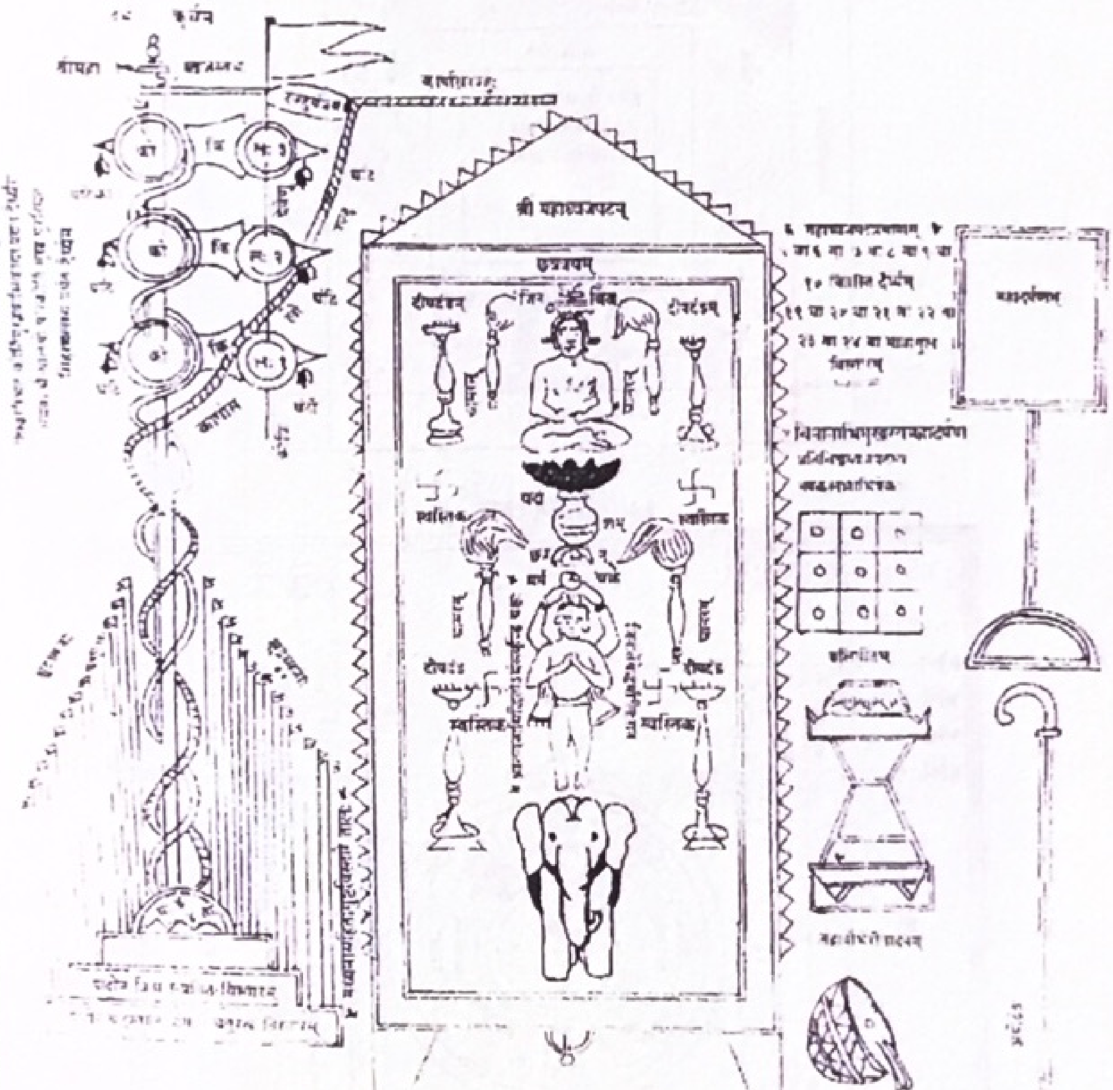

नवग्रह होमकुंड रचना

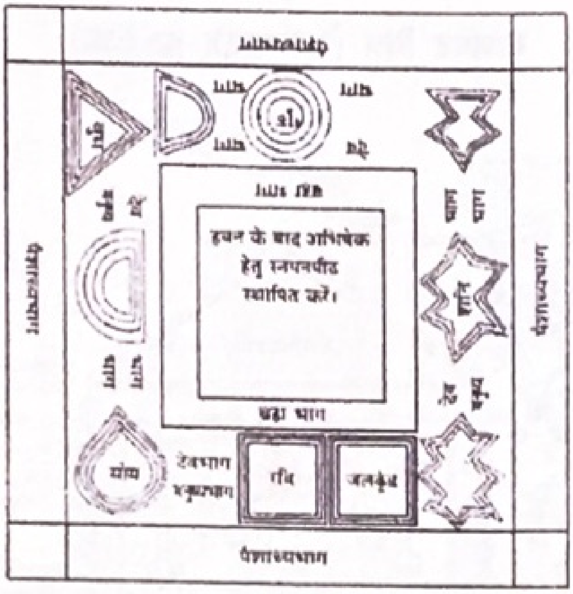

॥ कुलयंत्र ॥

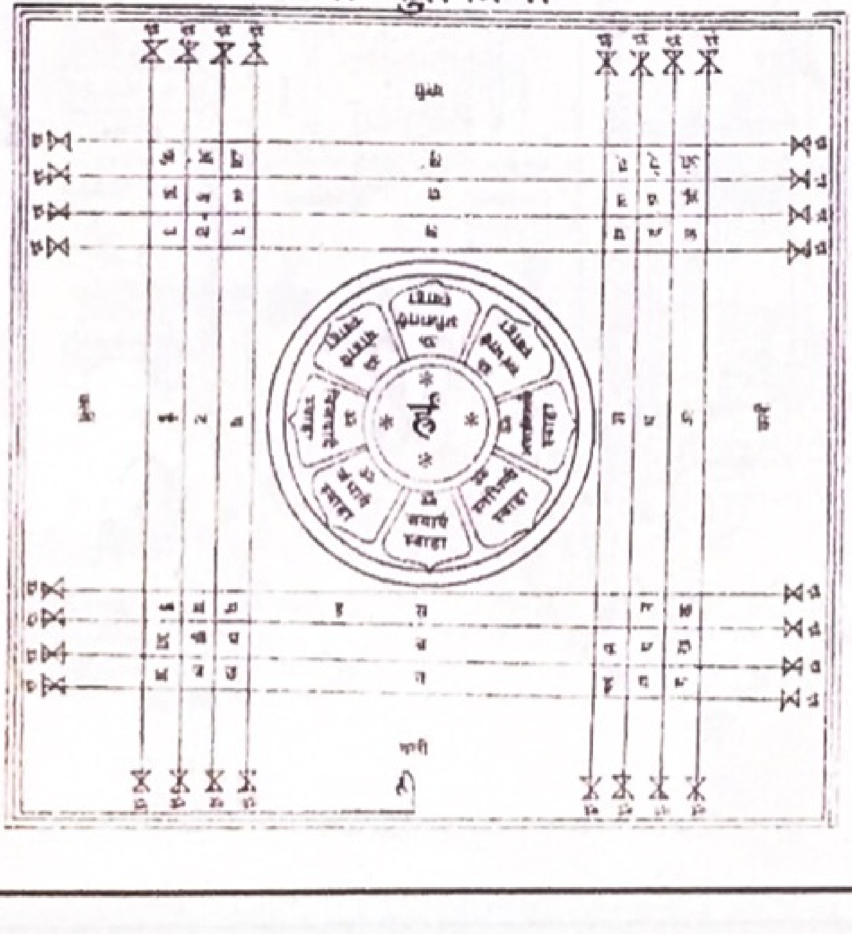

गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव द्वारा रचित व अनुवादित साहित्य

१) लघु विद्यानुवाद
२) हुम्बुज श्रमण सिद्धांत पाठावली
३) शीतलनाथ विधान
४) चतुर्विशति तीर्थंकर यंत्र मंत्र संग्रह
५) रात्रि भोजन त्याग कथा
६) सम्मेद शिखर जी माहात्म्य
७) भैरव पद्मावती कल्प
८) घंटाकर्ण कल्प
९) लघु विद्यानुवाद (द्वितीय संग्रह)
१०) गोम्मट प्रश्नोत्तर चिंतामणी
११) शांतिनाथ पूजा मंडल कल्प
१२) नग्न दिगम्बर क्यो ?
१३) जिनशासन में शासन देवी की पूजा क्यो ?
१४) यंत्र मंत्र आगमोक्त है
१५) अहिंसा
१६) व्रत कथा कोष
१७) प्रतिष्ठा विधी – दर्पण
१८) वसुनंदी प्रतिष्ठा – पाठ
१९) चित्रसेन चरित्र
२०) कलि–कुण्ड नवग्रह व हीं कल्प विधान
२१) गणधर वलय कल्प
२२) भद्रबाहू संहिता
२३) भजन संग्रह

२४) कानजी पोपड्म शतक
२५) फिर लघु विद्यानुवाद
२६) विजातीय विवाह
२७) विधवा विवाह
२८) चंपा बहेन का गप्पाष्टक
२९) नवग्रह विधान
३०) शांति चक्र विधान
३१) नव रात्रि विधान
३२) वास्तु विधान
३३) याग मंडल विधान
३४) जैन हिन्दू नही
३५) पद्मावती विधान
३६) नग्न दिगम्बर सच्च है
३७) विश्व मे अहिंसा
३८) प्रतिक्रमण एवं सामायिक
३९) रत्नाकण्ड श्रावकाचार (भव्यानंदिनी टीका) पुर्वार्ध
४०) चौदह सौ बावन गणधर वलय विधान
४१) मुखडा देखलो दर्पण में
४२) थोडा अपने आप को देखो
४३) मांडल क्षेत्र की चण्द्रप्रभु पूजा
४४) जैन गरबा भाग १
४५) संस्कृत शिक्षा भाग १
४६) चक्रेश्वरी कल्प व उपासना
४७) मुर्ति विज्ञान

४८) पौर्णिमा का सदा चरण
४९) आत्मचिंतन
५०) यज्ञो पवित संस्कार
५१) क्या आप भी तेरापंथी है ?
५२) समाधि साधना
५३) कुन्थुगिरी पुजा
५४) पदमावती व्रत्याष्टक
५५) घण्टाकर्ण कल्प
५६) प्रत्येक वर्ष का पंचाग
५७) दिगंबर परंम्परा मे तेरापंथ समिक्षा
५८) श्रवणबेलगोला व आर्ष परम्परा
५९) जैन अध्यात्म भजन
६०) तीन लोक विधान व आर्ष परम्परा
६१) देवोषधि रत्नाकर
६२) ज्योतिष विद्या
६३) प्रायश्चित
६४) कौन बडा कौन छोटा
६५) स्याद्वाद केसरी भाग १
६६) हुम्बुज सिद्धांत पाठावली
६७) हुम्बुज श्रमण भक्ती संग्रह
६८) दिपावली पूजा
६९) कालसर्प दोष निवारण
७०) प्रायश्चित चुलीका
७१) पंचामृत अभिषेक संग्रह

७२) आ. महावीर कीर्ती स्मृति ग्रंथ
७३) पंच विधान संग्रह
७४) तेरा विधान संग्रह
७५) कंकण बंधन
७६) लोक कविता
७७) चौबीस तीर्थंकर पूजा संग्रह
७८) वेदि प्रतिष्ठा
७९) जैन विवाह विधी
८०) देवौषधि रत्नाकर (चित्रसहीत)
८१) वेदी प्रतिष्ठा
८२) हस्त रेषा विज्ञान
८३) जयश्री भजन संग्रह
८४) कलिकुण्ड विधान
८५) कुन्थुगिरी सम्मेदाचल अर्घ्यावलि पूजा
८६) रत्नकरंड श्रावणकाचार दुसरा खंड
८७) संस्कृत शिक्षा दुसरा भाग
८८) स्याद्वाद केशरी दुसरा भाग
८९) गरबा

अंतिम प्रशस्ति

श्री मुलसंधे, सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे कुन्द कुन्दान्वये श्री अध्यात्म योगी. समाधि सम्राट जैनाचार्य, अनेक भाषा विज्ञ, अष्टांग निमित्त, ज्ञानविज्ञ आचार्य महावीर कीर्ती जी तत् शिष्य गणाधिपती गणधराचार्य, श्रवण रत्न, वात्सल्य रत्नाकर स्याद्वाद केसरी, वादी भसूरी अष्टांग निमित्तज्ञ, मंत्र विद्या चक्रवर्ती, अभिनव पुज्यपाद, जगद्गुरू कुन्थु सागरेण पूर्वाचरर्वीकृत वेदि प्रतिष्ठा नाम ग्रंथ संग्रह संपादन कर्ता :

श्री अतिशय क्षेत्र कुन्थुगिरी क्षेत्रे। (स २०२१ ता. १४ अक्षयतृतीया)

योगे ग्रंथ समाप्तोयं महाराष्ट्र प्रदेशे कोल्हापूर जिला हातकणंगले तालुका में नवनिर्माण अतिशय सम्पन्न कुन्थुगिरी क्षेत्र के कलिकुंड चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्वामी के मंदिर मे बैठकर वेदि प्रतिष्ठा ग्रंथ को समाप्त किया।

श्री गणाधिपति गणधराचार्य कुन्थुसागर
विद्या शोध संस्थान श्री क्षेत्र कुन्थुगिरि व सर्व ट्रस्टीगण
रामलिंग रोड, कुन्थुगिरि क्षेत्र मु.पो. आळते,
ता. हातकणगंले, जि. कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
फोनः (०२३०) २४८७७६६, २४८७५००
E-mail : kunthugiris@gmail.com
कलिकुंड चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान
Printed at Bharat 9371141104